Nagari Pracharini Granthamala Series No. 24

लाल कवि रचित

छत्रप्रकाश ।

—:o:—

श्यामसुन्दरदास बी० ए० और कृष्णबल्देव वर्म्मा
द्वारा सम्पादित

तथा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित ।

—:o:—

1916.

THE INDIAN PRESS, ALLAHABAD.

भूमिका।

—:o:—

भारतवर्ष के मध्य भाग में बुंदेलखंड प्रान्त स्थित है। इसके उत्तर ओर जमुना, दक्षिण ओर नर्मदा, पूर्व की ओर तौंस और पश्चिम की ओर कालिसिन्ध नदी बहती है।

ऐसा कहा जाता है कि जिस समय महाराज युधिष्ठिर भारतवर्ष का राज्य कर रहे थे उस समय इस प्रान्त में शिशुपाल नाम का राजा राज्य करता था और इस प्रान्त का नाम चेन-देश था। शिशुपाल के उत्तराधिकारियों ने बहुत दिनों तक यहां राज्य किया। अन्त में अवध के राजा करन ने इसे जीत लिया और कालिंजर में एक महल बनवाया और शिशुपाल के समय की बसी हुई चँदेरी नगरी को उजाड़ कर गेरुपर्वत के निकट उसे फिर से बसाया। आज कल चँदेरी नगरी ललितपुर से १८ मील पश्चिम की ओर स्थित है। शिशुपाल के समय की चँदेरी नगरी आधुनिक नगरी से ७ मील के लगभग उत्तर पश्चिम की ओर स्थित थी। इसे अब बूढ़ी चँदेरी कहते हैं और टूटे फूटे मन्दिर अब तक इसकी प्राचीनता की साक्षी देते हैं। राजा करन ने अपनी बसाई हुई चँदेरी में एक बड़ा तालाव खुदवाया जिसे "परमेश्वर" नाम दिया और गेरु पर्वत पर एक कोट बनवा कर वहाँ अपनी सेना रक्खी। इस वंश का अन्तिम राजा सोमी हुआ जो अपना राज छोड़ कर कच्छभुज की ओर चला गया। इस समय उज्जैन का राजा भर्तृहरि था। पर वह भी बैरागी होकर राज पाट छोड़ जंगल में चला गया और उसका छोटा भाई विक्रम राज्य का अधिकारी हुआ।

इसने समस्त मध्य भारत को जीत कर चेन-देश को अपना केन्द्रस्थान नियत किया।

विष्णु पुराण में लिखा है कि जमुना से नरबदा तक और चम्बल से केन तक नागवंशी क्षत्रियों का राज्य था पर इनके राजकाल की अवधि ठीक ठीक स्थिर नहीं की जा सकती।

इस वंश का अन्तिम राजा देवनाग हुआ जिसके समय में राजा गोपाल के सेनापति तोरमान कछवाहा ने इरन* पर आक्रमण किया और भुपाल से इरन तक के समस्त देश को जीत लिया। देवनाग अपना राज छोड़कर नरवर की ओर जैपाल चला गया और तोरमान का वंशज सूरसेन इस देश का राजा हुआ। इसने ग्वालियर का प्रसिद्ध कोट बनवाया।

सूरसेन ने बहुत दिनों तक राज्य किया। सन् ५९३ में कन्नौज के राजा ने ग्वालियर, चँदेरी और नरवर को छोड़ कर समस्त देश जीत लिया पर कछवाहों ने उसे वहाँ से शीघ्र ही भगा दिया। इसी समय में ठाकुर चन्द्रब्रह्म ने महोबे के निकट अनेक गांवों पर अपना अधिकार जमा लिया। इसी ठाकुर के वंशज चन्देल कहलाए।

कछवाहा बंश का अन्तिम राजा तेजकरन था। इस के समय में परिहार वंश का प्रताप बढ़ा और उन्होंने ग्वालियर को जीत लिया। इस पर तेजकरन धुन्धार में जा बसा पर उसके वंशजों ने नरवर और इदुर में रहना स्थिर किया। परिहार राजाओं का राज बहुत दिनों तक न चल सका। चन्देल राजाओं की शक्ति दिनों दिन बढ़ती गई और अन्त में ग्वालियर को छोड़ कर समस्त देश उनके अधिकार में आ गया। पर ग्वालियर भी कछवाहों के हाथ में बहुत दिनों तक न रहा। सन् १२३२ में तोमर बंशी ठाकुरों ने उसे जीत कर अपने वश में कर लिंया।

---

* यह स्थान सागर जिले मे वेन नदी के किनारे स्थित है।

चन्देल वंश का पहला राजा वाकपति हुआ। इसके दो लड़के जयशक्ति और विजयशक्ति हुए। इनके पीछे राहिल, हर्ष, यशोवर्मन, विनायकपाल देव, विजयपाल, कीर्तिवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदनवर्मन, परमार्दि देव, त्रिलोकवर्मदेव, वीरवर्मन, और भोजवर्मन क्रम से राजा हुए। भोजवर्मन के सकय में वीर बुन्देला ने इस देश को अपने अधिकार में कर लिया।

वीरभद्र गहिरवार क्षत्री था और इसके पूर्वज काशी के राजा थे। छत्रप्रकाश में वीरभद्र के पूर्वजों की नामावली इस प्रकार दी है। रामचन्द्र के पुत्र कुश के वंश में हरिब्रह्म हुए जिनके पीछे वीरभद्र तक ये राजा हुए—महिपाल, भुवपाल, कमलचन्द, चित्रपाल, बुद्धिपाल, नन्दविहंगराज, काशिराज, गहिरदेव, विमलचन्द, नाड़ुचन्द, गोपचन्द, गोविंदचन्द, टिहनपाल, विन्ध्यराज, सोनिकदेव, वीभ्कलदेव, अर्जुनदेव, वीरभद्र।

वीरभद्र के पाँच लड़के थे, राजसिंह, हंसराज, मोहन, मान, जगदास। जगदास जिसे पंचम भी कहते हैं, अपने पिता का सब से प्यारा पुत्र था। इसलिये वीरभद्र ने अपना आधा राज्य तो जगदास को दे दिया और आधा राज्य दूसरे चार लड़कों में बाँट दिया। इस पर राजसिंह, हंजराज, मोहन और मान को बड़ी ईर्षा हुई और उन्होंने अपने पिता के मरने पर सन् ११७० में जगदास उपनाम पंचम का राज्य छीन लिया और उसको आपस में बाँट लिया। पंचम दुखित हो विन्ध्याचल को चला गया और वहाँ श्रावण कृष्ण १ संवत् १२२८ से उसने घोर तपस्या प्रारम्भ की। नौ दिन तक कठिन व्रत रख कर उसने दसवें दिन यह निश्चय किया कि अपना सिर काट कर विन्ध्यवासिनी देवी को चढ़ाऊँ। ऐसा कहा जाता है कि ज्योंही उसने यह करना चाहा त्योंही ये शब्द सुन पड़े कि "जा, तू राजा होगा"। इस पर पंचम ने कहा कि मुझे दर्शन दो और ऐसी कोई वस्तु दो जिससे मै अपने भाइयों को जीत कर उनसे अपना राज छीन लूं। पर जब

इसका कोई उत्तर न मिला तो वह पुनः अपना सिर काटने पर उद्यत हो गया। इस पर विन्ध्यवासिनी देवी ने पंचम को दर्शन दे कहा कि "जा तेरी जय होगी, तू अपना राज्य करेगा और तेरे वंश के लोग मध्य भारत पर राज्य करेंगे।" पंचम ने जो तलवार अपने सिर काटने के लिये उठाई थी वह उसके सिर पर लग गई और उससे रक्त का एक बूंद पृथ्वी पर गिर पड़ा। इस पर भगवती ने कहा कि तेरे वंश के लोग बुंदेला कहलावेंगे। यह कह देवी तो अन्तर्हित हो गईं और पंचम वहाँ से चला आया। पीछे से उसने सेना इकट्ठी करके अपने भाइयों को जीता और उनसे अपना राज्य छीन लिया। इसी समय से पंचम के वंशज वीर बुँदेला कहलाए और जिस देश पर उन्होंने राज्य किया वह बुंदेलखंड कहलाया। पंचम से लेकर छत्रसाल तक बुँदेलों की वंशावली इस प्रकार है—

पंचम (सन् १२१४ में मरा)
वीर बुँदेला (सन् १२३१ में काल्पी, मुहोनी, और कालिंजर जीता)
करनतीर्थ (इसने काशी में कर्णघंटा तीर्थ बनवाया)
अर्जुनपाल (इसने महोनी को अपनी राजधानी बनवाया)

वीरबल—सोहनपाल और दयापाल। अर्जुनपाल की मृत्यु पर वीरबल राज्याधिकारी हुआ और सोहनपाल को कुछ थोड़े से गांव मिले पर इससे वह सन्तुष्ट न हुआ—इस पर वह अनेक राजाओं के पास गया कि जिसमें उनसे सहायता लेकर अपना राज्य बढ़ावे पर किसी ने सहायता न दी। अन्त में पँवार ठाकुरों की सहायता से उसने कुराट के राजा नाग को मार एक नया राज्य स्थापित किया। धीरे धीरे सोहनपाल आधे बुंदेलखंड का राजा होगा।

सहजेन्द्र—सोहनपाल का पुत्र—यह सन् १२९९ में गद्दी पर बैठा इसका छोटा भाई "राम" था।

नानकदेव—सन् १३२६ में गद्दी पर बैठा, इसका छोटा भाई सौनिकदेव था।

पृथ्वीराज—सन् १३६० में गद्दी पर बैठा—इसका छोटा भाई इन्द्रराज था।

छत्रप्रकाश में लिखा है कि पृथ्वीराज के पीछे रामसिंह, रामचन्द्र और मेदिनीमल्ल क्रम से राजा हुए पर अन्य इतिहासों से यह विदित होता है कि पृथ्वीराज के पीछे सन् १४०० में उसका पुत्र मदनिपाल राज्य का अधिकारी हुआ।

मदनिपाल—

अर्जुनदेव—सन् १४४३ में गद्दी पर बैठा—कविप्रिया में केशवदास ने इनकी बहुत प्रशंसा की है—इनके दो भाई माल और भीमसेन थे।

मल्लखान—सन् १४७५ में गद्दी पर बैठा। सन् १४८२ में बहलोल लोदी (१४५१—१४८८) से लड़ा। मल्लखान सन् १५०७ में मरा। इसके आठ लड़के थे जिनके नाम ये हैं—प्रतापरुद्र, शाह, जैत, जोगजीत, बरयारसिंह, भाऊसिंह, खड्गसेन, और वीरचन्द्र।

प्रतापरुद्र—छत्रप्रकाश में इनका नाम रुद्रप्रताप लिखा है। इसने इबराहीम लोदी का बहुत सा राज्य अपने राज्य में मिला लिया। जब बाबर ने इब्राहीम को जीत कर चन्देरी के राजा मेदनीराय को पराजित किया तो उसकी इच्छा प्रतापरुद्र से इब्राहीम के राज को छीन लेने की हुई पर वह केवल काल्पी ही ले सका। बैसाख कृष्ण १३ संवत् १५८७ (सन् १५३०) को प्रतापरुद्र ने ओड़छे का नगर बसाया। इन्हें आखेट का बड़ा व्यसन था और इसी में इनकी सन् १५३१ में जान गई। इनके बारह लड़के थे जिनके नाम ये हैं—

भारतीचन्द, मधुकरसाहि, उदयाजीत, कीरतिसाहि, भूपतिसाहि, आमदास, चंदनदास, दुर्गादास, घनश्याम, प्रागदास, भैरोदास, खांडेराय।

भारतीचंद्र—सन् १५३१ में गद्दीपर बैठे थे, इनके समय में शेरशाह (१५४२—१५४५) ने बुंदेलखंड जीतना चाहा पर वह कृतकार्य न हो सका। इस समय राज्य की वृद्धि बहुत कुछ हुई और उसकी वार्षिक आय लगभग दो करोड़ के थी। इनके कोई पुत्र न था इसलिये मधुकरसाहि राजा हुए।

मधुकरसाहि—ये सन् १५५२ में गद्दी पर बैठे। इनके समय में अकबर ने बुंदेलखंड जीतने का कई बेर उद्योग किया। कभी तो मुसलमानों की जीत होती और कभी बुँदेलों की। अन्त में १५८४ में शाहजादा मुराद स्वयं एक बड़ी सेना लेकर आया—पर मधुकरसाहि की बीरता से प्रसन्न होकर उसने उसका सारा राज्य लौटा दिया। मधुकरसाहि के पीछे उसके वंश का राज्य ओड़छे में चला। राजा प्रतापरुद्र ने अपने तीसरे लड़के उदयाजीत को महेवा दे दिया था इसलिये अब महेवे का वंश अलग चला।

मधुकरसाहि के पीछे उनके वंशजों और मुसलमानों से निरन्तर
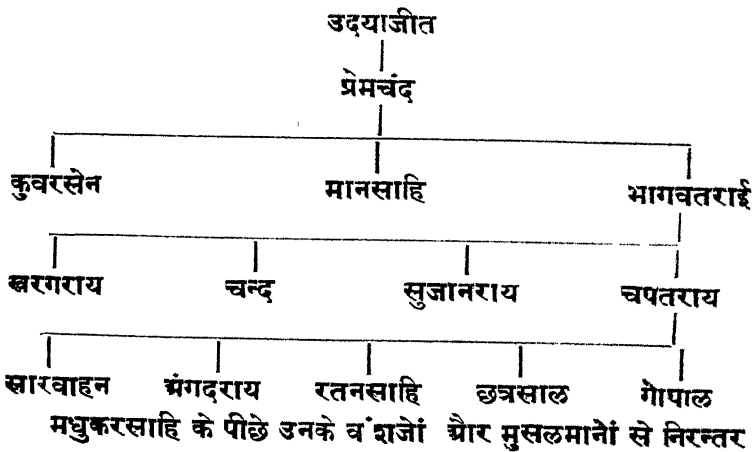
लड़ाई होती रही, कभी एक जीतता कभी दूसरा, पर दिनों दिन बुंदेलखण्ड में मुसलमानों का अत्याचार बढ़ता चला। उदयाजीत के वंश के लोग भी इन युद्धों में सम्मिलित रहते थे। मधुकरसाहि के पुत्र वीरसिंह देव के पीछे जुझारसिंह ने अपने भाई राजकुमार हरदेव को अपनी ही रानी से विष दिलवा कर मार डाला। इस जघन्य पाप से चारों ओर हाहाकार मच गया। बाबू कृष्णबलदेव वर्म्मा इस घटना का वर्णन इस प्रकार अपने "बुंदेलखण्ड पर्य्यटन" में लिखते हैं—

"कहते हैं कि जब ओड़छाधीश, महाराज वीरसिंहदेव के पीछे, दिल्लीश्वर की राजसभा में रहने लगे, तब राज्यप्रबन्ध का भार राजकुमार हरदेवसिंह के सिर पड़ा। अपना कार्य सभी भली भाँति सम्हालते हैं। राजकुमार दत्तचित हो राज्यप्रबन्ध करते रहे। उनके प्रबन्ध में घूस खाने हारों का निर्वाह न था। जिन लोगों का पेट घूस ही के द्वारा भरता था, उनको हरदेवसिंह से ईर्षा उत्पन्न हो गई और राज-प्रबन्ध हरदेवसिंह से छीनने का वे लोग प्रयत्न करते रहे। राजकुमार की भक्ति अपनी भ्रातृपत्नी में माता के समान थी और वह भी अपने देवर को पुत्रवत ही मानती थी। परस्पर यही सम्बन्ध सदैव रहता था। पुत्रवत्सला माता को जैसे अपने पुत्र को बिना देखे चैन नहीं आता, वही दशा उनकी भ्रातृपत्नी की थी। विश्वासघाती प्रतीतराय ने यह देख भ्राताओं में वैमनस्य कराना चाहा और एक पत्र राजा को लिखा कि राजकुमार का राजमहिषी से अश्लील सम्बन्ध है। सत्य है "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"! राजा ने पत्र पढ़ राजमहिषी के सतीत्व में सन्देह कर परीक्षा करनी चाही। अतएव उन्होंने राजमहिषी से कहा कि यदि तुम्हारे सतीत्व में अन्तर नहीं पड़ा और तुम्हारा हरदेवसिंह से घृणित सम्बन्ध नहीं है तो तुम अपने हाथ से उसे विष दो। राजमहिषी ने बड़े दुःख से अपनी धर्मरक्षार्थ प्रस्ताव स्वीकार किया और भोजन प्रस्तुत किए। कहते हैं कि जब वे भोजन हरदेवसिंह को परोसने लगीं तब उनके

अश्रु संचालन हो उठा। हरदेवसिंह ने क्लान्त हो पूछा कि माता! आज पुत्र को खिलाने में तुम क्यों रोती हो? क्या मैंने कुछ तुमको दुःख दिया है। भूमि की तृप्ति तो मघा के बरसने और पुत्र की तृप्ति माता के परोसने से होती है। क्या आज तुममें कुछ मातृस्नेह न्यून होगया है जो तुम रोती हो? राजमहिषी चीख मार कर रो उठीं और जब हरदेवसिंह ने बहुत प्रबोध किया तो बोलीं कि वत्स! अब मैं माता कहे जाने के उपयुक्त नहीं हूं! महाराज को मेरे सतीत्व में सन्देह हुआ है। जगत प्रलय होते हुए भी स्त्री का पहला धर्म सतीत्व-रक्षा है; अस्तु उसीकी इस समय परीक्षा ली गई है, जिसके कारण तुझ सा देवर, जो वास्तव में मेरे पुत्र के समान ही था, आज विष भोजन कर रहा है और अपनी धर्मरक्षा के लिये आज मुझ दुर्भागिनी को यह घोर वत्सहत्या करनी पड़ी। हरदेवसिंह यह सुनते ही उस भोजन को बड़े प्रेम से शीघ्र शीघ्र खाने लगे और बोले कि माता! यह भोजन मेरे लिये अमृत समान है। तेरी धर्मरक्षा से मेरी सुकीर्ति युगानुयुग होगी। राजमहिषी इन सौजन्यपूरित वाक्यों को सुन और भी कातर हो उठीं। उनके ज्येष्ठ भ्राता यह धर्मपरीक्षा और धर्मभक्ति देख कर्तव्यविमूढ़ पत्थर की प्रतिमा सम मुग्ध हो अपनी दुर्बुद्धि पर रोने लगे। हरदेवसिंह जी वहां से रसोई का विष-पूरित शेष भोजन उठवा लाए और उन्होने अपनी दशा का अन्तिम समाचार अपने मित्रों सेवकों और कर्मचारियों से कहा। उनमें से कितने ही हरदेवसिंह जी के सद्गुणों से ऐसे अनुरक्त थे जो उनके साथ ही चलने को उद्यत हो गए और बहुतों ने वही विषपूरित भोजन पा लिया। हरदेवसिंह जी के प्यारे हाथी घोड़े को भी वही भोजन खिलाया गया। हरदेवसिंहजी अपनी बैठक के बंगले में बैठ गए। प्रेमरस पीने हारे थोड़ी देर में झूम झूम गिरने लगे। हरदेवसिंहजी अपनी सेना के अग्रणियों का स्वर्गमार्ग में बढ़ना देखते ही देखते स्वयम् भी झूमने लगे। अन्तकाल-रूपी अश्व इनके लिये प्रस्तुत होने

लगा। जब विष की तरंगों की उमंगे आपके शरीर में उठने लगीं, तब आप वाटिका के बंगले से उठ एक पत्थर के टुकड़े पर, जो रघुनाथजी के मन्दिर के आंगन में ठीक मूर्ति के सम्मुख गड़ा है, मर्य्यादा-पुरुषोत्तम की मूर्ति के सम्मुख हाथ जोड़ आ बैठे और ध्याना-वस्थित आंखें किए प्रेमपूर्ण लड़खड़ाती वाणी से त्रैतापहारी अवध-विहारी से अपने पापों की क्षमा और उनकी दया की भिक्षा माँगने लगे और थोड़ी ही देर में वहीं समाधिस्थ हो अटल निद्रा में ब्रह्मानन्द के स्वप्नों के दृश्य देखने लगे। महाराज हरदेवसिंह उसी समय से प्रख्यात हरदेवलाल के नाम से विशूचिका के दिनों में पुजने लगे। इनके चौतरे समस्त भारतवर्ष में ठौर ठौर बने हुए हैं। हरदेवसिंह जी की मृत्यु के पीछे समस्त ओडछे में उदासी छा गई। राजा के इस जघन्य कर्म की निन्दा सजातीय और विजातीय सब लोग करने लगे और ऐसे अविवेकी महाराज के साथ को सर्वदा भयप्रद जानकर उनसे सम्बन्ध तोड़ बैठे। सम्बन्धियों ने भी महाराज से नाता तोड़ा। ओड़छे के लिये यह बड़े अभाग्य का दिन था।"

निदान इस अवसर को अच्छा जान कर शाहजहां ने मुहब्बत खां, खांजहां, और ख्वाजह अबदुल्ला के अधीन बड़ी सेना भेज कर बुंदेलखंड को जीतना चाहा। वीरसिंह देव के छोटे भाई उदयाजीत के प्रपौत्र चम्पतराय से यह न सहा गया। वे अपने सम्बन्धियों की ओर से लड़ने को उद्यत हो बैठे। यद्यपि इस युद्ध में मुसलमानों की जीत हुई पर चम्पतराय ने उनका पीछा न छोड़ा। जब जब उन्हें अवसर मिला वे कुछ न कुछ हानि मुसलमानों को पहुँचाते रहे। सन् १६३३ में तो चम्पतराय एक क़िले में घिर गए पर अपने बुद्धिबल और वीरता से वहां से निकल भागे और पहले की भाँति चारों ओर उत्पात मचाते रहे। अन्त में एक समय मुसलमानों के साथ युद्ध करते हुए अपने देश वालों को अपने विरुद्ध पाकर उन्होने आत्महत्या की। इनके पीछे छत्रसाल ने अपने पिता की नीति ग्रहण की और वे

बहुत दिनों तक लड़ते रहे। अन्त में इनसे और औरंगजेब से मेल होगया और इन्हें फिर बुंदेलखण्ड का राज्य मिला। छत्रसाल का जन्म १६३४ के लगभग हुआ था। इन्हीं की आज्ञा से लाल कवि ने छत्रप्रकाश ग्रन्थ लिखा। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि छत्रसाल सन् १६५८ में उस लड़ाई में मारा गया जो दाराशिकोह और औरंगजेब के बीच में हुई थी पर छत्रप्रकाश से यह विदित होता है कि चम्पतराय और छत्रसाल दोनों उस लड़ाई में औरंगजेब की ओर से लड़े थे और उसके पीछे तक जीते रहे। औरंगजेब ने कृतघ्नता करके चम्पतिराय को पुनः कष्ट देना आरम्भ किया था और अन्त में छत्रसाल और औरंगजेब से मेल होगया जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है—इसलिये छत्रसाल की मृत्यु १६५८ में नहीं हुई वरन उसके कई वर्षों पीछे हुई। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि लाल कवि ने विष्णुविलास नाम का एक ग्रन्थ नायका भेद का लिखा है परन्तु वह अब तक मेरे देखने में कहीं नहीं आया। गार्सिन डी टासी का अनुमान था कि छत्रप्रकाश बुंदेलखंड के इतिहास का अंश मात्र है पर पुस्तक देखने से यह नहीं जान पड़ता। यह एक स्वतंत्र ग्रन्थ है यद्यपि इसमें सन्देह है कि यह कभी लिख कर पूरा किया गया, क्योंकि जितना अंश इसका मिलता है और जो यहां प्रकाशित किया गया है उससे ग्रंथ की समाप्ति नहीं प्रमाणित होती। छत्रप्रकाश का अंग्रेज़ी अनुवाद क्यापटेन पागसन ने किया है। छत्रप्रकाश को पहले पहल मेजर प्राइस ने सन् १८२९ में कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालिज से छाप कर प्रकाशित किया था परन्तु अब वह प्रति अप्राप्त है, इसलिये काशी नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से यह पुनः छापकर प्रकाशित किया गया है।

इसकी भूमिका विस्तार से नहीं लिखी गई है पर जितनी बातें जानने योग्य थीं सबका उल्लेख इसमें संक्षेप रूप से कर दिया गया है। जिन्हें बुंदेल खंड का विस्तृत इतिहास जानना हो वे इस विषय की अन्य पुस्कें देखें।

लाहौरी टोला
काशी ५-८-१९०३, } श्यामसुन्दरदास

अध्याय-सूची।

छत्रप्रकाश ।

——:-○-:——

पहला अध्याय

दोहा ।

एकरदन सिंधुरबदन , दुर-बुधि-तिमिर-दिनेश ।
लंबोदर असरन सरन , जै जै सिद्धि गनेश ॥ १ ॥

छन्द ।

सिद्धिगनेश बुद्धि बर पाऊँ । कर जुग जोरि तोहि सिर नाऊँ ॥
तू अघ के अघओघन खंडै । अधिक अनेकन बिघन बिहंडै ॥
प्रथम क सुर नर मुनि पूजा । और कौन गनपति सम दूजा ॥
भौभंजन नेसक गुन गायै । मूसकवाहन मोदक पायै ॥
उच्च कुंभ सिंदूर चढायै । रबि उदयाचल छबिहिं बढ़ायै ॥
अंकुस लियै दरद कौ दाटै[1] । बिकट कटक संकट के काटै ॥

दोहा ।

काटै संकट के कटक , प्रथम तिहारी गाथ ।
मोहि भरोसौ है सही , दै बानी गननाथ ॥ २ ॥

छन्द ।

जै जै जै आनंदित बानी । तुही सत्य चैतन्य बखानी ॥
तुही आदि ब्रह्मा की रानी । वेद पुरानमयी तूं जानी ॥

दोहा ।

तूं विद्या तूं बुद्धि है , तुही अविद्या नाम ।
तूं बांधै सब जगत कौ , तूं छोरै[2] परिनाम ॥ ३ ॥

१—दाटै = भय दिखावे, भयभीत करे । २—छोरै = खोले, स्वतंत्र करे ।

छन्द ।

तेरी कृपा लाल जौ पावैं । तौ कवि रीति बुद्धि बिलसावैं ॥
कबिता रीति कठिन रे भाई । बाहिन समुद पहिर[1] नहिं जाई ॥
बड़ौ बंस बरनौ जौ चाहौ । कैसे सुमतिसिंधु अवगाहौ ॥
चहुं ओर चंचल चितु धावै । बिमल बुद्धि ठहरान न पावै ॥
बांधो बिषै सिंधु की डोरैं । फिर फिर लोभ लहर में बोरैं ॥
जो उर विमल बुद्धि ठहराई । तौ आनंद सिंधु लहराई ॥
उठी अनंद सिंधु की लहरैं । जस मुकता ऊपर ह्वै छहरैं ॥
छहरि छहरि छिति मंडल छायो । सुनि सुनि बीर हियौ हुलसायौ ॥

दोहा ।

दान दया घमसान में, जाके हिये उछाह ।
सोही बीर बखानिये, ज्यों छत्ता[2] छितिनाह ॥ ४ ॥

छन्द ।

भूमिनाह कौ बंस बखानौं । सबही आदि भान कौ जानौं ॥
एक भान सब जग कौ तारौ । जहाँ भानु सै देखि उज्यारौ ॥
सुर नर मुनि दिन अंजलि बांधे । करत प्रनाम भगति कौ कांधे ॥
एकचक्र रथ पै चढ़ि धावै । सकल गगन मंडल फिरि आवै ॥
साठि हजार असुर नित[3] मारै । धरम करम दिन प्रति बिस्तारै ॥
कमल क्यों न मुसक्याइ निहारै । लच्छि देत कर सहस पसारै ॥
करनि बरष जल जगत जिवावै । चोर कहुं संचार न पावै ॥
काल बांधि निजु गति सौ राख्यौ । एक जीभ जस जात न भाख्यौ ॥

१—पहिर = वास्तव में पैर—उत्तीर्ण होना, पैरना, तरना ।

२—छत्ता = महाराज छत्रसाल का प्यार का घरेऊ नाम ।

३—कहा जाता कि जलाञ्जलि पाने से सूर्य्यदेव साठ सहस्र दैत्यों का नित्य विनाश करते हैं ।

दोहा ।

भाष्यौ जात न जासु जस , ऐसै उदित दिनेस ।
त्यूकै भयौ महा बली , मनु उद्दंड नरेस ॥ ५ ॥

छन्द ।

मनु अनेक मानस उपजाये । यातै मानव मनुज कहाये ॥
बरनौं ताकौ बंस कहाँ लौं । जगत बिदित नरलोक जहाँ लौं ॥
तिन में छिति छत्री छबि छाये । चारिहुं जुगन होत जे आये ॥
भूमि भार भुजदंडनि थंभे । पूरन करै जु काज अरंभे ॥
गाइ वेद दुज के रखवारे । जुद्ध जीत के देन नगारे[1] ॥
परम प्रवीन प्रजन कौ पालै । भीर परै न हलाये हालै ॥
दान हेत संपति कौ जोरै । जस हित परनि खग्ग गहि तोरै ॥
बांह छांह सरनागत राखै । पुन्य पंथ चलिवौ अभिलाषै ॥

दोहा ।

प्रगट भयौ तिहि बंस में , रामचंद्र अवतार ।
सेतु बांधि कै जिन कियौ , दसमुख कुल संघार ॥ ६ ॥

छन्द ।

रामचंद्र के पुत्र सुहाये । कुस लव भये जगत जे गाये[2] ॥
कुस कुल कलस भये छबि छाये । अवधि पुरी नृप घनै गनाये ॥
तिन में दानजूझ सिरताजा । हरिब्रह्म कुलथंभन राजा ॥
हरिब्रह्म कुलतिलक प्रवीने । महीपाल जस जाहिर कीने ॥
महीपाल उदित सुत पाये । नृप-कुल-मनि भुवपाल कहाये ॥
तिनके कमल चंद जग जानै । सूरन के सिरमौर बखानै ॥
तिनके चित्रपाल मरदानै । बुद्धिपाल जिन सुत उर आनै ॥
नंद विहंगराज तिन जाये । अवधि पुरी नृप सात बताये ॥

१—नगारे = डंका ।　　२—गाये = प्रख्यात हुए ।

दोहा ।

विहंगेस नृप कै भये, कासिराज सिरताज ।
अवधिपुरी तें उमड़ि जिन, कीनौ कासी राज ॥ ७ ॥

छन्द ।

कासिराज नृप मनि छबि छाये । कासी बैठ सुजस बगराये[1] ॥
तिनके कुल जेते नृप आये । काशीश्वर ते सबै कहाये ॥
गहिरदेव नंदन तिन पाये । भुव पर प्रगट सुजस बगराये ॥
तिनके बंस भये नृप जेते । गहिरवार कहियत सब तेते ॥
गहिरदेव के पुत्र बखानौ । बिमलचंद जग जाहिर जानौ ॥
राजा नाहुचंद तिन जाये । जिन दौरन[2] दिगपाल हलाये ॥
गोपचंद तिनकै सुत ऐसे । करन दधीच धरमधुर जैसे ॥
तिनके गोबिंदचंद गरूरे । दान जूझ बलि बिक्रम पूरे ॥

दोहा ।

टिहनपाल तिन कें भये, परम-धरम-धुर-धीर ।
बिंध्यराज तिन उर धरे, जे गुन में गंभीर ॥ ८ ॥

छन्द ।

बिंध्यराज नृप सुत उपजाये । सोनिकदेव देव से गाये ॥
ताकौ पुत्र प्रगट जग मांही । बीझलदेव धरम कौ छांही ॥
अर्जुनवर्म पुत्र तिन पाये । जुद्ध मध्य अर्जुन ठहराये ॥
तिनके बीरभद्र नृप जानौ । छत्र धरमधुर धरन सयानौ ॥
बीरभद्र नृप के सुत सूरे । भये पाँच बल बिक्रम पूरे ॥
चारि पुत्र पटरानी जाये । लहुरी[3] रानी पंचम पाये ॥
चारि पुत्र के नाम न जानों । पंचम नृप कौ बंस बखानौं ॥
बीरभद्र नृप सुजस बगारे । पुहुमि पालि सुरलोक सिधारे ॥

१—बगराये = फैलाये । २—दौरन = आक्रमण ।
३—लहुरी = छोटी ।

दोहा ।

बीरभद्र सुरलोक कौ, गये सुजस जग माड़ि[1] ।
पुहमी पंचमसिंह कौ, बाल बहिक्रम छांड़ि ॥ ९ ॥

छन्द ।

पंचम बाल बहिक्रम जान्यौ । लोभ चहूँ बंधुन उर आन्यौ ॥
पंचम की पुहमी उन छीनी । बाँटि चार हीसा[2] करि लीन्ही ॥
बंधुन दिये दुःख इमि भारे । गृह तजि पंचमसिंह सिधारे ॥
छाड़त गेह बड़ी दुचताई[3] । कित जैयै को होइ सहाई ॥
यह संसार कठिन रे भाई । सबल उमडि निर्बल कौ खाई ॥
छनिक राज संपति के काजै । बंधुन मारत बंधु न लाजै ॥
जीवन तनकु पाप अधिकारे । धन जोबन सुख तुच्छ निहारे ॥
निघटत आपु न जानत अंधे । माया के बंधन सब बंधे ॥

दोहा ।

माया के दिढ़ बंध सौं, बंध्यौ सकल सँसार ।
बूड़त लोभ समुद्र में, कैसे पावे पार ॥ १० ॥

छन्द ।

पार लोभ सागर कौ नाहीं । भ्रमत सबै माया भ्रम माहीं ॥
सो माया चैतन्य बखानी । आनन्दमयी ब्रह्म की रानी ॥
उपजावत ब्रह्मांड अलेखै । काल ब्रह्म खेलत जिन देखै ॥
जोगनींद ह्वैकै तिहि भोये । दुगधउदधि नारायन सोये ॥
उहि ब्रह्मा भयभीत उबारे । प्रगट माहिँ मधुकैटभ भारे ॥
दलजुत महिषासुर संघारे । देवन के सब काज सँवारे ॥
धूमनैन उद्धरनि भवानी । चंडमुंड खंडन जग जानी ॥
रक्तबीज खप्पर भर खाये । रन में सुंभ निसुंभ ढहाये ॥

१—माड़ि = स्थापन करके अर्थ में आता है ।

२—हीसा यह अर्बी शब्द हिस्सा का अपभ्रष्ट है = भाग ।

३—दुचताई—दुचिताई होना चाहिए = चिंता, मतिभ्रम ।

दोहा ।

वहै योगनिद्रा भई , नंदगोप घर जाइ ।
होनी कहिकै कंस सो , बसी विंध्य पर आइ ॥ ११ ॥

छन्द ।

विंध्यबासिनी सुनियत नामैं । देन सकल मन वांछित कामैं ॥
ताकैं सरन जाइ ब्रत लीजै । मन बंछित फल पूरन कीजै ॥
एहि विचार पंचम उर जान्यैा । मन क्रम बचन भगतिरस सान्यैा ॥
बिमल गंगजल मंजन कीन्हो । दरस विंध्यबासिनि कैा लीन्हो ॥
तीनैा ताप देह तैं छूटे । परम भक्तिरस के सुख लूटे ॥
हरषित गात रोम उठि आये । बंछित फल मन तन जन धाये ॥
छलकि[1] नीर नैननि भरि आये । दुरित दुःख तिन संग बहाये ॥
करुनारस छाई जगमाई । भक्ति हेत उर अंतर आई ॥

दोहा ।

मृदु मूरति जगमाइ की , रही ध्यान ठहराइ ।
एक पाइ पंचम खड़े , भूख प्यास बिसराई ॥ १२ ॥

छन्द ।

भूख प्यास पंचम कैा भूली । त्रिकुटी लगी समाधि अतूली ॥
सात द्यौस इहि रीति बितीते । पंचम इन्द्रिन के गुन जीते ॥
सुनी गगन मंडल धुनि[2] ऐसी । लहिहैा भूमि आपनी वैसी ॥
सुनि पंचम नृप उत्तर दीनैा । भुवहित हैां न परिश्रम कीन्हैा ॥
उलटि गगन धुनि गगन समानी । कछु प्रसन्नता पंचम मानी ॥
बहुर सात बासर त्यौं बीते । लागे होन मनोरथ रीते[3] ॥
तब पंचम नृप करवर[4] काढ्यौ । निज सिर देत भगतिरस बाढ्यौ ॥
काटन कंठ लग्यै हटि ज्यौंही । उठि कर गह्यौ भवानी त्यौंही ॥

१—छलकि = उमड़ करि ।   २—धुनि = ध्वनि ।

३—रीते = शून्य, खाली ।   ४—करवर = करवाल, खड्ग, कृपाण, तलवार ।

दोहा ।

त्यौंही करुनारस भरी, गहे भवानी हाथ ।
जै जै करि बरषे सुमन, सुरनि सहित सुरनाथ ॥ १३ ॥

छन्द ।

जै जै धुनि नभ मंडल मंडी । कर करवार छुड़ावति चंडी ॥
जब करवर झुक झोरि[1] छुड़ायौ । कछुक घाउ पंचम सिर आयौ ॥
तातैं रुधिर बुंद इक छूट्यौ । मनहुँ गगन तैं तारा टूट्यौ ॥
छिति पर पर्यौ छलिक छबि जाग्यौ । जननि हियौ करुणारस पाग्यौ ॥
सीस दुलाइ बुंद वह देख्यौ । साहस अतुल भक्त कौ लेख्यौ ॥
करुनारस जल थल सरसायौ । सिर ससिकला अमृत बरसायौ ॥
बरस्यौ अमृत बूँद पर ज्यौंही । उपज्यौ कुँवर तहाँ ते त्यौंही ॥
उमग्यौ हियौ कुमार निहारै । छुटी पयोधर ते पय धारै ॥

दोहा ।

छुटी पयोधर धार तै, कुँवर कियौ पय पान ।
विंध्यबासिनी उमगि उर, लगी देन बरदान ॥ १४ ॥

छन्द ।

लगी देन बरदान भवानी । फुरै[2] समर में सदा कृपानी ॥
बढ़ै बंस जग माह अन्यारौ । छत्र धर्मधुर कौ रखवारौ ॥
तुव कुल राज अखंडित रैहै । जो सताइहै सो मिटि जैहै ॥
दरपुस्तनि[3] है नृप भारी । दान कृपान मरद[4] प्रनधारी ॥
प्रथमहि राज आपनौ पावौ । परभुव भोगनहार कहावौ ॥
यह कहि हाथ माथ पर राखे । पुहमी प्रगट बुंदेला भाखे ॥
पाइन परि पंचम बर लीन्हौ । मन बंछित जननी फल दीन्हौ ॥

१—झुक झोरि = झकझोरि, झटका देकर । २—फुरे = फलीभूत हो ।

३—दरपुस्तनि = शाखान्तरों में, पीढ़ी पीढ़ी ।

४—मरद—मर्द = वीरता ।

प्रगट्यौ बुंदेला बरदाई। भयौ समर कौ उमड़ि सहाई॥
अतुल जुद्ध बंधुनि सौं बीत्यौ। पंचम राज आपनौ जीत्यौ॥
पंचम यदपि पुत्र बहु पाये। पै कुलतिलक बुंदेला गाये॥

इति श्री लाल कवि विरचिते छत्रप्रकाशे
बुंदेलाजन्मवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

दूसरा अध्याय

दोहा ।

बरदाइक बुंदेल जब, भयो प्रगट रनधीर ।
गहिरवार पंचम जसी, काशीश्वर नृप बीर ॥ १ ॥

छन्द ।

बीर विंध्य की देवी पूजी । किहि न बीर की कीरति कूजी ॥
बीर जीत पूरब दिसि लीन्हौ । बीर दौर पच्छिम कौ कीन्हौ ॥
सत्तर खान बीर सौ हारे । अरु उमराउ बहत्तर मारे ॥
बीर करे अपनै मन भाये । सबल सत्रुदल खेत खपाये ॥
बीर समर झारी[1] करवालै । जीती कारी पीरी ढालै ॥
बीर कठिन कालिंजर[2] लीन्हौ । बीर कालपी[3] थानौ दीन्हौ ॥

१—झारी = चलाई, प्रहार किया ।

२—कालिंजर—बुंदेलखंड के बांदा नामक प्रान्त के समीप यह स्थान है । कालिंजर प्राचीन काल से एक अति प्रसिद्ध तीर्थस्थान गिना जाता है, इसकी गणना नव ऊखलों मे है । यहां का दुर्ग इतिहास मे परम प्रसिद्ध रहा है और यहीं चंदेल वंश के मूलपुरुष महाराज चंद्रब्रह्म की पूज्या माता हेमवतीजी ने काशी से आ कर निवास किया था ।

३—कालपी—यह नगर बुंदेलखंड का द्वार करके प्रसिद्ध है और यमुना के तट पर बसा है । यह कहा जाता है कि वेदव्यास भगवान् कृष्णद्वैपायन की माता मत्स्योदरी यहीं रहती थीं और यहीं भगवान् वेदव्यास का जन्म हुआ था । भारतीय इतिहास में यह नगर भी कालिंजर के समान प्रसिद्ध रहा है और वर्तमान काल मे भी बुंदेलखंड की प्रसिद्ध मंडियों मे से है । पद्मावति काव्य के रचियिता मलिक-मुहम्मद जायसी के विद्यागुरु शेख बुढ़न यहीं के निवासी थे और उनकी समाधि अद्यापि यहां बनी है । कविवर कमलापति मिश्र यहीं के निवासी थे उनके वंशज मालवीय मिश्र अद्यापि यहां है । राजकवि पद्माकर जी भी समय समय पर यहीं रहा करते थे । सम्राट अकबर के परमप्रिय चतुर मंत्री महाराज वीरबलजी भी यहीं जन्मे थे । उनके राज्यप्रासादों के भग्नावशेष अब तक रंगमहल आदि नामों से यहां पुकारे जाते हैं परन्तु अब वे सब प्रासाद नितान्त ध्वंस होकर खँडहर रूप मे हमें दृष्टिगोचर होते है ।

सोध्यों बीर सत्रु कैं पानी। करी महौनी[1] में रजधानी॥
ऐसा बीर बुंदेला गायो। परभुव लोहाधार कहायो॥

दोहा।

बीर बुंदेला के भये, करन भूप बलवन्त।
दान जूझ को करन सो, भुवनदलन दलवंत॥ २॥

छन्द।

तिनके अर्जुनपाल बखाने। सहनपाल तिनके सुत जाने॥
बुधि बल गढ़ कुठार[2] तिन लीनो। अमल[3] जतहरा[4] में पुनि कीनो॥
तिन सुत सहज इन्द्र से पाये। सहजइन्द्र जग मांह कहाये॥
तिन के भये पुत्र मन भाये। नौनिकदेव देव से गाये॥
पृथु सम पृथीराज तिन जाये। तिनके रामसिंह छबि छाये॥

१—महौनी—इसका शुद्ध नाम मुहौनी है। जालौन प्रान्त के कोंच परगने में यह स्थान मऊ मुहौनी के नाम से पुकारा जाता है और बुंदेल वंश की आदि राजधानी है। जनख्याति में अद्यापि यह स्थान "बड़ागढ़ी" करके प्रसिद्ध है और अब कुटिल काल के दंड से प्रताड़ित हो यह प्राचीन राजधानी एक साधारण ग्राम के रूप में वर्त्तमान है।

२—गढ़कुठार—वास्तव में गढ़कुंडार है। यह स्थान ओरछे अथवा ओड़छे के समीप है। बुंदेलों के अधिकार में आने से प्रथम इसमें खंगारों का राज्य था। खंगार बुंदेलखंड में बहुतायत से रहते हैं और पतित जातियों में इनकी गणना है। यह किसी काल में बड़ी प्रबल जाति के लोग गिने जाते थे और बड़े उद्‌भट वीर होते थे। इनकी आदि राजधानी गढ़कुंडार में थी। वर्त्तमानकाल में ये बहुधा चौकीदारी, साईसी व किसानी का काम करते हैं और उपद्रवी भी समझे जाते हैं।

३—अमल = अधिकार।

४—जतहरा—यह स्थान टीकमगढ़ (ओड़छा) राज्यान्तरगत जी० आई० पी० रेलवे के मऊ रानीपुर स्टेशन के निकट है और ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ जड़ी बूटी बहुत पैदा होती है।

तिनके रामचन्द सुत ऐसै । जनक जजाति[१] प्रियव्रत जैसै ॥
ताकौ पुत्र जुद्धरस भीनौ[२] । भयो मेदिनीमल्ल प्रवीनौ ॥
तिनके अर्जुनदेव गरूरे । मल्लखान तिन के सुत सूरे ॥

दोहा ।

मल्लखान कौ नंद भौ, रुद्रप्रताप अतूल ।
नगर ओंडछौ जिन रच्यौ, खोद खलनि कौ मूल ॥ ३ ॥

छंद ।

पुत्र प्रतापरुद्र उपजाये । प्रथम भारतीचन्द कहाये ॥
दूजे मधुकरसाहि बखाने । उदयाजीत जगत जग जाने ॥
कीरतिसाहि कीर्त्ति जग छाई । लीन्है भूपतिसाहि भलाई ॥
आमनदास उदित जसु लीन्हौ । चंदनदास चंद्र सम कीन्हौ ॥
दुर्गादास दुवन* दल भंजे । घनस्याम सज्जन मन रंजे ॥
प्रागदास परबीन प्रतापी । भैरादास मजाही[३] थापी ॥
खांडेराय खुसाल सदाई । ये जगबिदित बारहौ भाई ॥
दान जूझ बल बिक्रम पूरे । समर-धीर गंभीर गरूरे ॥

दोहा ।

रुद्रप्रताम नरिंद के, बिदित बारहौ नंद ।
थपे ओंछड़े नगर में, बड़े भारतीचंद ॥ ४ ॥

१—जजाति = ययाति राजा । २—भीनो – सना हुआ, भरा हुआ ।

*यह शब्द या तो दुष्टन या दुश्मन का अपभ्रंश है या लेख-दोष से "यवन" का दुवन हो गया है ।

३—मजाही—यह फ़ार्सी शब्द जमजाही का संक्षिप्त रूप है जो जम और जाही दो शब्दों के योग से बना है । जम शीदईरान का प्रबल सम्राट था जिसका जाम जमशीद प्रसिद्ध था । उसी का संक्षिप्त नाम जम है । जाही का अर्थ पद है अर्थात् जमशीद का सा पद अर्थात् प्रतिष्ठित पद या साम्राज्य ।

छन्द

जेठे पुत्र ओंछड़े राखे। करे काज मन के अभिलाखे ॥
थम्भे भुजन भूमि भर भारी। नृप कुठार[1] कौ करी नयारी ॥
खेलन चले शिकार सलौनो। मेटी मिटै कौन सो हानी ॥
जोजन एक शहर तें आये। नदी उतर बन सघन मझाये ॥
तहां बाघ इक गाइ पछारी। सो करुना[2] करि सुरन पुकारी ॥
कानन परत दीन वह बानी। पहुंच्यो नृप कर कढ़ी कृपानी ॥
सिर धरि छत्र धर्म्म कौ बानौ[3]। हाक्यो[4] बाघ उठ्यो खिरझानौ[5] ॥
गरजत दुवौ[6] परस्पर जूटे। संगहि प्रान दुहुन के छूटे ॥

दोहा।

रुद्रप्रताप नरिंद तनु, तज्यो गाइ के काज।
परम उच्च आसन दियो, सुरनि सहित सुरराज ॥ ५ ॥

छन्द।

सुरन सहित सुरराज सिहानैं। पुन्य प्रतापरुद्र अधिकानैं ॥
करि अभिषेकु ओड़छे छाये। भूप भारतीचंद्र कहाये ॥
पुन्य पाल जग जसु बगरायो[7]। इक हरि ही कौ सीस नवायो ॥
तेइस बरस राज नृप कीनो। धरनि छांड़ि सुरपुर सुख लीनो ॥
उपज्यौ नहीं पुत्र मन भायो। मधुकरसाहि राज तब पायो ॥
उदयाजीत आदि द्वै भाई। सबै भूप कौ भये सहाई ॥
प्रजा पाल पुर पुन्य बढ़ाये। दान जूझ जिनके गुन गाये ॥
अरतिस बरस राज नृप कीन्हौं। निस दिन रह्यो भगतिरस भीनो ॥

दोहा।

जाकै उदयाजीत से, भाई सदा सहाइ।
जस प्रताप ता नृपति कौ, कहौ कौन अधिकाइ ॥ ६ ॥

१—कुठार = गढ़कुंडार। २—करुणा = आर्तनाद। ३—बानो = भेष। ४—हांक्यो = ललकारा। ५—खिरझानौ = क्रोधित होकर। ६—दुवौ = दोनो। ७—बगरायो = फैलाया।

छन्द ।

उदयाजीत उदित नर देवा । जिन उदयाचल कियौ महेवा[1] ॥

१—महेवा = यह स्थान बुंदेलखंड के छत्रपुर राज्यान्तरगत है और नौगांव छावनी से चार मील पर पूर्व की ओर मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके चारों ओर कोट बँधा है। बुंदेलवंश की पूर्वीय शाखा की यही आदि राजधानी है। इसके कोट के भीतर सीताफल (शरीफ़ा) के वृक्षो का अगम्य वन है और धुवेलाताल के उत्तर तट पर बुंदेलकुल केशरी प्रातस्मरणीय महाराज छत्रसाल के राज्यप्रासाद बने हुए है। चिरकालीन होने से ये राजमंदिर अति जीर्ण हो गये थे परंतु छत्रपुराधीश श्रीमान् परम सुयोग्य महाराज विश्वनाथ-सिंह जू देव महोदय ने उनका जीर्णोद्धार करा दिया है। इस राज्यप्रासाद की अटारी से प्रातःकाल के समय धुवेलाताल का दृश्य अत्यंत मनोहर होता है। सीतल समीर का संचार, पक्षियों का कलरव, निर्मल जल पर बालार्क का प्रकाश, कमलवन का विकाश चित्त पर एक ऐसा प्रभाव डालता है जो वर्णन नहीं हो सकता, केवल देखने ही पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से अनूपम राज्यप्रासादों के ध्वंस इसी कोट के भीतर पड़े है। धुवेलाताल के पश्चिम तट पर महाराज छत्रसाल की परमप्रिय महारानी कमलापति का समाधि मंदिर है जिसका गोल शिखर मीने से निसि दिवस चमचमाता रहता है। यह समाधिमंदिर अपने ढंग का अनूठा ही मंदिर है। इसी तड़ाग के पूर्व तट पर महाराज छत्रसाल जी का समाधि मंदिर है जिसका कुछ भाग अपूर्ण रह गया है। उसके निकट ही एक और छोटा सा स्थान है जहां पर महाराज छत्रसाल की सेज है। महेवा अब उजाड दशा मे है। यहां वृक्षों के नीचे ठौर ठौर पर बारहवी शताब्दी की बहुत सी जैनमूर्तियों के खडों के ढेर है और कहीं कहीं बौद्ध मूर्तियों के भी खंड मिलते है और ऐसा जान पड़ता है कि चंदेलवंशीय महाराजों के समय मे भी यह स्थान कोई प्रतिष्ठित स्थान रहा है। यहां से एक मील उत्तर—पूर्व की ओर चल कर महाराज छत्रसालजी के कनिष्ठा-त्मज, महाराज जगतराजजी का जिनके वंश में अद्यापि चरखारी आदि राज्य हैं, सुदीर्घ विस्तृत जगतसागर नामक तड़ाग है। यह तड़ाग वास्तव मे पर्वतों की तलहटी की एक विस्तृत झील है। इसके तट पर भी बारहवीं शताब्दी की बहुत से जैनतीर्थ-करों की प्रतिमाएं जिनकी चरण चौकियों पर प्राचीन काल के लेख है रक्खी है और एक विशालगढ़ी के भग्नावशेष है। यही पर "बुंदेला बाबा की बैठक" नाम का एक विहार सा पड़ा है जो हमे किसी बौद्धविहार का अवशेष जान पड़ता है। इसी तड़ाग से वर्तमान काल मे एक नहर निकाली गई है जो एक बड़े भूमि भाग को सीचती है।

जुद्ध मध्य उद्धत अरि मारे। दे दे दान दरिद्र बिदारे॥
ता सुत प्रेमचन्द मरदानौ। पूरन चन्दा के सम मानौ॥
जहां समर मारू सुर बाजै। तहां अरुन आनन छबि छाजै॥
कैयक[1] अरिदल सिंधु बिलोड़ै[2]। धाइ घनै घट ही में मोड़ै॥
लीलतु फिरै[3] लोह की लपटैं। अगवै[4] कौन सिंह की झपटैं॥
मुगल पठान जुद्ध में जीते। भरे कालिका खप्पर रीते[5]॥
साहिसेन[6] झकझोर हलायो। साहिझार को बिरद बुलायो॥

दोहा।

साहिझार बिरदैत मनि, प्रेमचन्द के नन्द।
पुहमी में परगट भये तीनो आनँदकन्द॥७॥

छन्द।

प्रेमचन्द के नन्द बखानै। कुंवरसेन जग जाहिर जानै॥
जिन सिमिरहा[6] अलंकृत कीनौ। करि करि दान जुभ जस लीन्हो॥
दूजे मानसाहि मरदानै[7]। दौरनि दपटि दुवन[8] जिन भानै॥
दान कृपान बुद्धि बल चांडे। बैठि साहिपुर[9] जिन जस मांडे॥
और भागवतराइ रगीले। सत्रुन साल समर सरमीले॥
कियो महेवा जिन रजधानी। कीरति बिदित जगत में जानी॥

१—कैयक = कितने ही। २—बिलोड़ै = मथे। ३—लीलत फिरे = खाते फिरते हैं। "लीलत फिरे लोह की लपटैं" से अभिप्राय है कि वह समरभूमि देख करि उत्साहित होते हैं और शस्त्रप्रहार को सम्हालते हैं। ४ अगवै—आगे बढ़कर लेवे, अभिप्राय सम्हालने से है। ५—रीते = खाली। ६—साहिसेन झकझोर हलायो। साहिझार को बिरद बुलायो।—से अभिप्राय है कि उन्होंने बादशाह की सेना को झकझोर डाला और उसे रणभूमि से विचलित कर दिया जिसके कारण उन्हें यह विशद यश प्राप्त हुआ कि वह "साहिझार" के उपनाम से पुकारे जाने लगे।

६—सिमिरहा—स्थान विशेष। ७—मरदाने = बीर। ८—दुवन—दुश्मन का रूपान्तर है। ९—साहिपुर—स्थान विशेष।

ये तीनौ भाई छबि छाजै। ब्रह्मा विष्णु रुद्र से राजै ॥
तीनौ अगिन तेज उर आनौ। तीनौ नैन रुद्र के जानौ ॥

दोहा।

कुलमंडन परसिद्ध अति, भयो भागवतराइ।
ताके पूरन पुन्य मैं, लगे चारि फल आइ ॥ ८ ॥

छन्द।

ताके पुन्य चारि फल लागे। खरगराइ अरु चन्द सभागे ॥
सुभट सुजानराइ सुखदाई। सब कौं चम्पतिराइ सहाई ॥
चारिउ भैया उदभट जानौ। चारिउ भुजा विष्णु की मानौ ॥
चारिउ चरन पुन्य छबि छायौ। चारिउ फलन देन जनु आयौ ॥
हिंदवान सुरगज उर आनौं। ताके चारयौ दंत बखानौं ॥
चारौ अंग चमू जिन राखी। चारयौ समुद जीति अभिलाषी ॥
अंतःकरन चारि हुलसाये। चारिउ चक्र सुजस बगराये ॥
हरि के आयुध चारि गनाये। ते जनु छिति रक्षन को आये ॥

दोहा।

जद्यपि आयुध विष्णु के, चारयौ छबि उद्दाम।
पै दानव दल दलन कौं, गदा चक्र सौं काम ॥ ९ ॥

छन्द।

जदपि गदा की बड़ी बड़ाई। पै कछु ओर चक्र की घाई[1] ॥
गदा समान सुजान बखानौ। चम्पतिराइ चक्र उर आनौ ॥
गनै कौन चम्पति की जीतैं। गनपति गनै तऊ जुग बीतैं ॥
साहिजहां उमड्यौ घन घोरा। चम्पति झंझापौन[2] झकोरा[3] ॥
साहि कटकु झकझोर झुलायौ। गिल्यौ[4] बुंदेलखंड उगिलायौ[5] ॥

१—घाई = ढंग, वारी, ओर, शक्ति। २—झंझापौन = बवंडर।
३—झकोरा = झोंका खाया हुआ, निगला हुआ। ४—गिल्यौ = निगला हुआ।
५—उगिलायो—आतंक दिखा कर छीन लिया, लौटा लिया, फेर लिया।

चम्पति करीं साह सों पेड़ैं । पैठि न सक्यो मुगल दल मेड़ैं[1] ॥
सूबा जिते साहि के चांडे[2] । चम्पतिराइ घेरि सब डांडे ॥
बुधि बल चम्पति भयौ सहाई । आलमगीर[3] दिली[4] तब पाई ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे बुंदेलवंशवर्णनं नाम
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

१—मेड़ैं = मेड़ पर, निकट । २—चांडे = बलवान ।
३—आलमगीर—औरंगज़ेब । ४—दिली = दिल्ली ।

तीसरा अध्याय

दोहा।

चंपतिराइ नरिन्द के, प्रगटे पांच कुमार।
मंडे कुल बरम्हंड[1] में, जिनके जस बिस्तार॥ १॥

छंद।

पांच पुत्र चंपति के जानौ। प्रथम सारवाहन उर आनौ॥
अंगदराइ रतन मन मानै। छत्रसाल गोपाल बखानै॥
तिन में छत्रसाल छबि लीनी। निज बस भूमि भावती कीनी॥
तो गुन छत्रसाल के गैयै। कैयक सहस जीभ जो पैयै॥
रन अंगद अंगद गुन भारे। कीनै जग में सुजस उज्यारे॥
जाकी तेग अरस[2] में झूलै। बाजतु सारु हनु सौ फूलै
लीनी कैयक बिकट लराई। अरि की चमू अनेक हराई॥
दुवन जीत दक्षिन के लीने। दिल्लीपति के कारज कीने॥

दोहा।

कीने काज दिलीस के, लीने। बिजै अनेक।
अंगद चंपतिराइ के, धरी धर्म की टेक॥ २॥

छंद।

रतनसाहि निरमल गुन पूरे। परम समर्थ समर अति सूरे॥
आखेटक के जिते ठिकाने। जल थल अन्तरिक्ष के जाने॥

---

१ बरम्हंड से ब्रह्मांड का अभिप्राय है।

२ अरस—फार्सी अर्श = आकाश।

प्रगट महेबा में रन कीनौं। अरि की फौज फारि जसु लीनौं॥
अंगद रन ता दिन बढ़ि जाने। गुनन बड़े छत्रसाल बखाने॥
तिन तें लघु गोपाल गनाये। सीलवत सन्तन मन भाये॥
जबहिं समर मंह सैल[1] उछालै। हिरदै देखि काल को हालै॥
सब भैयन की कथा बखानै। छत्रसाल तें जुदी न जानै॥
छत्रसाल की कथा सुहाई। सबै सबै तिन में सब आई॥

दोहा।

जदपि नदी पानिप भरी, अपने अपने ठांउ।
पै गंगा में मिलत हीं, गगा ही को नांउ॥ ३॥

छंद।

गंगा त्रिपथगामिनी जैसी। छत्रसाल की कीरति तैसी॥
सब सुर नर नागन की बानी। गावत बिमल पवित्र बखानी॥
गावत पार न पावहिं कोई। अरब खरब आनन किन होई॥
जैसे उड़ै बिहंग तहां लौं। देखत गगन बिसाल जहां लौं॥
गुन अनन्त मुख एक हमारे। चपल चित्त थोरी मति धारे॥
चाहत है एते पर तैसी। सतकवि मति की पदवी जैसी॥
अगम पंथ कौ बुधि बिलसाई। ह्वैहै जग इहि भांति हंसाई॥
ज्यों बामन ऊचे फल चाहै। चरननि उचकि उठावै बांहै॥

दोहा।

उचकै हू पहुंचै नहीं, बाहैं उच्च उठाइ।
लोग हँसी के रस भरे, देखत कौतुक आइ॥ ४॥

छंद।

जो कौतुक उर धरि जग लोई। सुनिहैं सरस कथा सब कोई॥
सरस कथा सुनि हिय हुलसावै। सब कौ छत्रसाल गुन भावै॥
सब जग में जेती मति जाकै। उर उछाह तेते गुन ताकै॥

---

१ सैल = सांग, लोहे की मोटी नोकदार सलाका और बीच में त्रिशूल।

अपनी मति माफिक सब गावै । गुन कौ पार न कोऊ पावै ॥
जौ पै पार गुननि कौ नाहीं । ज्यों सहसानन त्यों हम आहीं ॥
छत्रसाल के चरित उज्यारे । मेटत कुल कलिकाल अँध्यारे ॥
कुलमण्डन छत्रसाल बुंदेला । आपु गुरू सिगरौ जग चेला ॥
छत्रसाल चंपति के ऐसे । बरने कश्यप के रवि जैसे ॥

दोहा ।

कश्यप कौ रवि गाइये, कै दशरथ कौ राम ।
कै चंपति कौ चक्कवै[1], छत्रसाल छबिधाम ॥ ५ ॥

छंद ।

छत्रसाल के गुनगन गाऊँ । पूर्व जन्म की कथा सुनाऊँ ॥
एक समय हजरत[2] फरमायो । बाकी खान बली चढि आयौ ॥
समर खेलु चंपति सौं माच्यो । बाजत मारु[2] रीझि हर नाच्यौ ॥
छुटि छुटि भिरै दुवौ दल बांके । लोथनि[3] पटे[4] गिरिन के नाके ॥
चंपतिराइ कलह कौं कांधे । बैठे बिकट बिरद कौं बांधे ॥
जेठे पुत्र सुभट छबि छाये । नाम सारबाहन जे गाये ॥
जान जुद्ध अमनैक[5] अढ़ाये । खैलहार ता समय पठाये ॥
बांकी खां कौ कटक उमंड्यौ । बँधे घाट कौ मारग छंड्यौ ॥

दोहा ।

घाट छांडि औघट[6] धरयो, कुँवर सुनै जिहिं ठौर ।
बाकी खां के कटक की, भई तहां कौ दौर[7] ॥ ६ ॥

छंद ।

खैलहार पर फौजैं धाईं । कैयक सहस अचानक आईं ॥
कुँवर सारबाहन छबि छाये । खेलन सहज ताल मैं आये ॥

१—चक्कवै = चक्रवर्ती । २—हज़रत = शाहजहां से अभिप्राय है ।
२—मारु = मारुबाजा, रणवाद्य । ३—लोथनि = लाशों से ।
४—पटे = भर गये । ५—अमनैक = हठी, हठीला ।
६—औघट = दुर्गम मार्ग, कुघाट । ७—दौर = आक्रमण ।

तबहीं बरष चौदही लागी। बुद्धि बाल खेलन में पागी ॥
खोलि हथ्यार तीर में राखे। जल के अतुल खेल अभिलाखे ॥
एकन कों धरि एक ढकेलै। सलिल उछाल परस्पर मेलै ॥
एकै भजै पहर कै काछे[1]। एकै लगै लपक करि पाछे ॥
निकट जानि तन बूड़ि बचावै। छल सों जल में छुवन न पावै ॥
चरन चपेट चलावत चूकै। तिन को देत सबै मिलि कूकै ॥

दोहा।

या विध अति आनँद भरे, कुँवर करें जलकेल।
बाकी खां उचका पर्‌यो, उदभट कटक सकेल ॥ ७ ॥

छंद।

फौज अचानक निकट हँकारी। खलभल आइ खेल में पारी ॥
कुँवर कढ़े जल तें सर भीने[2]। आइ हथ्यार तीर में लीने ॥
हांके मुगल ताल की जोरी। भजें बिडरि बालक चहुँ ओरी ॥
कुँवर सारबाहन बल बाढ़े। तमकि तीर तरकस तें काढ़े ॥
काढ़े तीर बीर जब ऊट्यौं। सर समूह सत्रुन पर छूट्यौ ॥
बखतरपोस[3] हला[4] करि धाये। कुँवर अडोल हलै न हलाये ॥
अरुन रंग आनन छबि लीनो। तानि कमान कुण्डलित कीनो ॥
छूटे बान बज्र से बांके। फूटे सुभट निकट जे हांके ॥

दोहा।

झिली[5] फौज प्रतिभट गिरे, खाइ घाउ पर घाउ।
कुँवर दौरि परबत चढ्यौ, बढ्यौ जुद्ध कौ चाउ ॥ ८ ॥

१—काछे = काछनी, लंगोट, जांघिया।
२—भीने = भीगे हुए।
३—बख़तरपोश—कवचधारी।
४—हला = हल्ला, शोर।
५—झिली = आक्रमण किया।

छंद ।

समिटि फौज आई रन भूमै । घाइल घने परे जहँ धूमै ॥
मुगल पठान प्रान बिन देखे । बिक्रम अतुल कुँवर के लेखे ॥
बाकी खां देख्यो दल भान्यो । प्रगट कुँवर चंपति कौ जान्यौ ॥
बोल्यौ तमकि कटकु[1] सब धावै । पकरौ कुँवर जान नहिं पावै ॥
बखतरिया[2] ढालै दै आगै । हय तजि पिले[3] बीररस पागै ॥
प्रतिभट पिले निकट जब आये । कुँवर अडोल बान बरसाये ॥
इक इक बान दुद्दै भट फूटै । झुकि झुकि तऊ चहूँ दिस जूटै ॥
कुँवर एक सहसन धरि धाये । ज्यौं बैरिन अभिमन्यु दबाये ॥

दोहा ।

रुक्यौ कुँवर अभिमन्यु ज्यों, महारथिन के बीच ।
सारु झारि रिपु रुधिर की, बिरचि मचाई कीच ॥ ९ ॥

छन्द ।

माची कीच सारु[4] जब बाज्यौ । कुँवर अरुन आनन छबि छाज्यौ ॥
खग्ग झारि एकन कौ काटै । एकन हरषि हांक दै डाटै[5] ॥
घाइ खाइ न अघाइ[6] हठीलौ । उमग्यौ भिरतु समर सरमीलौ ॥
कौतुक लषत भान रथ रोपे । बिडर्‌यौ[7] कटकु कुँवर के कोपे ॥
बिडरतु कटकु वीर जे बांके । झार हथ्यार हरषि हठि हांके ॥
कुँवर मार[8] में सनमुख पैठ्यो । सूरज भेदि बिमाननि बैठ्यौ ॥

१—कटकु = कटक ।   २—बखतरिया = कवचधारी ।

३—पिले = घुस पड़े, टूट पड़े, धसे ।

४—सारु = यह शब्द सार से बना है जिसके अर्थ तत्त्व के है । यहाँ लोहे के सार, फौलाद से जिससे शस्त्र बनते है अभिप्राय है और शस्त्र के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है ।

५—डाटै = ललकारै ।   ६—अघाइ = तृप्त होवे ।

७—बिडर्‌यो = भागा ।   ८—मार = युद्ध ।

तेगन लगि तन तनक न बांच्यौ। रन में रुद्र सीस लै नाच्यौ॥
सुरन पुहुप बरषा बरषाई। जैमाला हूरन[1] पहिराई॥

दोहा।

सजी आरती सुरबधुनि, उमग्यो अमर समाजु।
कुँवर सारबाहन लियौ, बीरलोक को राजु॥ १०॥

छन्द।

बीरलोक आनँद अति छाये। समाचार चंपति पै आये॥
सुन्यौ कुँवर रन सज्या सोयो। सोक बड़े माता अति रोयौ॥
तब माता कौ सपनौ दीनौ। समाधान नीकी बिधि कीनौ॥
मोहि बैर म्लेच्छ सौं लीवै। आगे काज अपूरब कीवै॥
तातैं फिरि अवतारहिँ लैहौं। ह्वै फिरि प्रगट तुम्हें सुख दैहौं॥
और माइ की कूख नवीनो। सो मैं आइ अलंकृत कीनो॥
यह सुनि कै माता सुख पायो। सपनौ अपनो प्रगट सुनायो॥
भई प्रतीत कछुक दिन बीते। सांचे भये सुपन चित चीते[2]॥

दोहा।

चित चीते सांचे भये, सुपन माइ के चारु।
प्रगट्यौ चंपतिराई के, छत्रसाल अवतारु॥ ११॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रशाल नृपतेः
पूर्वजन्मकथावर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

१—हूर = अप्सरा।　　२—चीते = चेते हुए, अभीष्ट।

चौथा अध्याय ।

छन्द ।

छत्रसाल जनम्यौ जब माई । धुनि गंभीर रुदन में पाई ॥
घूँघरवारी घनी लटूरी[1] । देती आनन कौ छबि पूरी ॥
मनौ भ्रमर की पांति सुहाई । अमृत पियन उड़पति पैं आई ॥
ऊँच्यौ भाल विशाल बिराजै । कनक पट्ट कैसी छबि छाजै ॥
लसतु अष्टमीचंद किधौं है । बखत[2] भूप कौ तखत मनौ है ॥
नैन बिसाल असित सित राते । कमलदलन पर अलि जनु माते ॥
भुजा बिसाल जानु लौं आये । भुवभर मानहुँ लेत उठाये ॥
उन्नत नखनि लसत अरुनाई । वक्ष कपाटनि की छबि छाई ॥

दोहा ।

चक्कवतनि[3] के चिह्न सब, अंगन अंगन राखि ।
छत्र धर्म जब औतरयौ, सामुद्रिक[4] दै [5]साखि ॥ १ ॥

छन्द ।

जनम्यौ पुत्र उठी यह बानी । धन्य घरी सबही वह मानी ॥
दुंदुभि बजे लोक सुखदानी । आठो दिसा प्रसन्न दिखानी ॥

१—लटूरी = लटें, अलकें ।

२—बखत = फ़ारसी शब्द व.ख्त = भाग्य ।

३—चक्कवतिन = चक्रवर्तियों ।

४—सामुद्रिक = वह विद्या है जिसके द्वारा शरीर पर के वाह्य चिह्नों से किसी पुरुष का भविष्य जाना जाता है ।

५—साखि = साखी ।

जातकर्म कीन्हें सुख मूले । अमर पितर नर उर अति फूले ॥
उमग भरे नर नारी गावैं । पिता तुरग नग कोष लुटावैं ॥
सतकवि बदन नची बर बानी । भिक्षुक भौंन लच्छमी गानी ॥
किरति नची जगत मन भाई । बिमल जौन्हसी[1] छबि छुटकाई ॥
लिख्यो छठी में सत्व सचाई । दान जूझ बल बूझ बड़ाई ॥
मन करतूति करम के ऊँचे । जिन सम नखतनपी न पहूँचे ॥

दोहा ।

ईस नखत अनरूप अरु, अरथवंत परिनाम ।
जनमपत्र तातैं लिख्यो, है छत्रसाल यह नाम ॥ २ ॥

छन्द ।

प्रगट पासनी[2] में छबि छाई । भुवभर सहित कृपान उठाई ॥
ता दिन कबिन कबित्त बनाये । दिये दान तिनकौं मन भाये ॥
घुटुरुन चलत घूँघुरू बाजैं । सिंजित सुनत हंस हिय लाजैं ॥
गहि पलका की पाटी डोले । किलिकि किलिकि दसननि दुति खोले ॥
विहँसत उठत भोर ही जागैं । निरखत को न हियें अनुरागैं ॥
खेलत लेत खिलौना आछे । धावत किलिकि छांह के पाछे ॥
रुचि सौं तकत तुरग जे नीके । बिहँस लेत मुजरा[3] सबही के ॥
दिन दिन बढ़े बढ़ाइ अनंदा । जैसे सुकलपक्ष कौ चंदा ॥

दोहा ।

खेलन बोलन चलन में, सब कौं देत अनंद ।
बालापन तैं बढ़ि चली, दिन दिन बुद्धि बुलंद[4] ॥ ३ ॥

१—जौन्ह = चन्द्रमा । २—पासनी = अन्नप्राशन ।
३—मुजरा = अभिवादन । ४—बुलंद—फ़ार्सी शब्द बलंद = उच्च, उत्कट ।

छन्द ।

बढ़ी बुलंद बुद्धि कछु ऐसी । या जुग मांह नाहिनै जैसी ॥
जबहीं बरष सातई लागी । अदभुत बुद्धि भगतिरस पागी ॥
राजत पुर जगबिदित महेवा । तहां होत रघुबर की सेवा ॥
राजत रामचन्द्र रस भीने । सुन्दर धनुष बान को लीने ॥
त्यौंही लछमन रूप सुहाये । धनुषवान लीने छवि छाये ॥
सीता सरस रूप तनु धारे । भूषन बसन सिँगार सिँगारे ॥
बालगुविंद तहां अति सोहै । घुटुनुन चलत चित्त को मोहै ॥
माखन कौ लोंदा[1] कर माहीं । मुकुट सीस छबि कही न जाहीं ॥

दोहा ।

सिंहासन ऊपर सबै, सोहत अद्भुत रूप ।
भगति धरै दरसन करै, पंचम चंपति भूप ॥ ४ ॥

छंद ।

तहं उभैबार आरती साजै । झालर[2] झांझ संख बर बाजै ॥
बालक वृद्ध तरुन तंह आवैं । नर नारी सब दरसन पावैं ॥
छत्रसाल दरसन कौ जाहीं । बाल सुभाइ धरे मन माहीं ॥
अनिमिष[3] रूप अनूप निहारैं । चैतन जानि चित्त निरधारैं ॥
इनिके संग खेलिबो भाई । तौ यह बात भली बनिआई ॥
अपनौ धनुष देह जौ मांगै । घरिकु खेल कीजै इन आगै ॥
जौलौं सब दरसन कौं आये । तौलौं बोलत नाहिँ बुलाये ॥
टरि जैहैं[4] जब सबै इहां तैं । तब ये भली कहैंगे बातैं ॥

दोहा ।

इत उत ये चितवत नहीं, मंद मंद मुसकात ।
सीता सौं चाहत कह्यौ, कछू रसीली बात ॥ ५ ॥

१—लोंदा = गोला । २—झालर = घंटा, घरयार ।
३—अनिमिष = इकटक, पलक झुकाये बिना । ४—टरि जैहैं = हट जावेंगे ।

छंद ।

भो अनिमिष दिन द्वैक निहारे । तब पंडा[1] बूझे करि न्यारे ॥
ऐ ठाकुर बोलत क्यों नाही । है धौं जीव नाहिं इन मांहीं ॥
तब पंडन ये बचन सुनाये । ये त्रिभुवनपति हैं छबि छाये ॥
बालक बुद्धि कुंवर तुम मांही । ये ठाकुर कहुं बोलत आंहीं ॥
यह सुनिकै अचिरज चित बाढे । भये आइ दरसन को ठाढे ॥
ये बिचार चित में ठहराने । इनके ब्योंत[2] सबै हम जाने ॥
नजर बचाइ सबनि की लैहैं । तब ये सीता ओर चितैहैं ॥
तातैं अब हों पलक न लाऊं । ये चितवैं तब हँसौं हंसाऊं ॥

दोहा ।

यह बिचार छत्रसाल चित, रहे चिते अनिमेष ।
आखिन तें भरि भरि तहां, आंसू बगरि[3] अलेख ॥ ६ ॥

छंद ।

भरि भरि आंसू ढरि ढरि[4] आवें । छत्रसाल नांहि पलक लगावें ॥
देखत दसा सबै मिलि ऐसी । यह यों भई कुंवर कों कैसी ॥
उमग्यो प्रेमसिंधु उर मांही । कौतुक सबै बिलोकत आंहीं ॥
बिहसत रामचद्र मन मांहें । तकै[5] न सीता तन तिरछोहें ॥
तब मन में यह बात बिचारी । ऐ सकुचे मन में धनुधारी ॥
अब जौ बालगुबिंदहिं पाऊं । जौ खेलैं तो इन्हें खिलाऊं ॥
माखन खात इन्हें लखि लैहौं । औरां मांगि धाइ सो दैहौं ॥
जो ये नचन कैसहु आवें । लटकन मुकट अतुल छबि छावें ॥

दोहा ।

यह छबि बालगुबिन्द की, हिये रही ठहराइ ।
माया के उपजे तहां, गये प्रपंच बिलाइ ॥ ७ ॥

१—पंडा = पुजारी । २—ब्योंत = ढ़ंग, काट छांट ।
३—बगरि = फैलाकर । ४—ढरिढरि = लुढ़क लुढ़क कर । ५—तकना = देखना ।

छंद ।

सब प्रपंच माया के छूटे । बंधन बिदित त्रिगुन के टूटे ॥
आनँदसिंधु लहरि बढ़ि आई । प्रेम उमगि कछु कही न जाई ॥
ज्यौं ज्यौं उमगि प्रेम चित राच्यौ । त्यौं त्यौं बालगुबिंदा नाच्यौ ॥
डोला सीस मुकट छबि छावै । लटकि लटकि आसन पर आवै ॥
पगतर तार पगन पर पारै । छत्रसाल अनिमेष निहारै ॥
जे सिगरे दरसन कौं आये । तिन मन में अचिरज ठहराये ॥
नाचत बालगुबिंदे देखे । अनहोनी के लक्षन लेखे ॥
पंडा अति संभ्रम उर पागे । तुरतहिं तब पौढ़ावन[1] लागे ॥

दोहा ।

यद्यपि बालगुबिंद जू, राखे हैं पौढाइ ।
नाचे तदपि घरीक लौं, संपुट पगन बजाइ ॥ ८ ॥

छंद ।

संपुट बजै सुनै सब कोई । सबकी बुद्धि अचंभै भोई ॥
छत्रसाल उर प्रीति बढ़ाई । इच्छा पूरी हौन न पाई ॥
पंडा तुरत कहां तैं आये । घरिकु गुबिंद न नाचन पाये ॥
ढिग बुलाइ अपनै हौं लेतौ । घर तै मांगि मिठाई देतौ ॥
ये सुख पाइ मिठाई खाते । मेरे ढिग तैं कहूं न जाते ॥
पंडन आनि बिघन यह कीनौ । घरियकु नाच न देखन दीनौ ॥
इहि बिधि अतुल मनोरथ बाढ़े । निरखत रहे घरिक[2] लौं ठाढ़े ॥
प्रेम प्रतीति प्रीति उर पागे । नाचे छुटक भगत के आगे ॥

दोहा ।

चेतन तन नाचे हुते, ब्रजबनितन के संग ।
छत्रसाल के प्रेम ते, नचे अचेतन अंग ॥ ९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रशालवालचरित्र बालगोबिंदनृत्यबर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

१—पौढ़ावन = सुलाने । २—घरिक = कुछ काल तक, अथवा एक घड़ी तक ।

पाँचवाँ अध्याय ।

छंद ।

एक जीभ हौं कहा गनाऊँ । कछु कथा संक्षेप सुनाऊँ ॥
एक समै दिल्लीपति कोप्यौ । पग न[1] जुझार सिंह नै रोप्यौ
अरब खरब लौं हुते खजानै । सो न जानियै कहां बिलानै ॥
साठि हजार सुभट दल फूट्यौ । कोऊ कहुं न मारिउ छूट्यो ॥
साहिजहान देश सब लीनौ । कियौ बुंदेलखंड बल हीनौ ॥

दोहा ।

हीनौ[2] देखि बुंदेल बल, दीन प्रजन के काज ।
चंपतराइ सुजान मिलि, कियौ मंत्र तिहिं राज ॥ १ ॥

छंद ।

कछु कालगति जानि न जाई । सब तैं कठिन कालगति गाई ॥
रीती[3] भरे भरी ढरकावै । जो मनु करै तौ फेर भरावै ॥
कीजै कहा नृपति नहिं बूझै । काल ख्याल काहू नहि सूझै ॥
साठि हजार सुभट लै भागे । काहू के न जगाये जागे ॥

१—अर्थात् रणभूमि मे पग रोपने का जुझारसिंह ने साहस न किया और शाहजहा की सेवा स्वीकार करके बुंदेलखंड और बुंदेलवंश की स्वाधीनता का नाश कर दिया ।

२—हीनौ = निकृष्ट, दुर्बल, दीन । ३—रीती = शून्य, खाली ।

फिरे मुलक में मुगल गदेले । सिंहन की सुथरी[1] गज खेले ॥
जाकौ बैरी करै बचाई । सो काहेकौ जनम्यौ माई ॥
अब उठि के यह मंत्र बिचारो । मुलकु उजार लक्ष संहारो ॥
ज्ञान गनंता पौरुष हारे । सो जीतै जो पहिले मारे ॥

दोहा ।

यहै मंत्र ठहराइ कै, उमडे दोऊ वीर ।
दीनों मुलकु उजारि कै, ऐसे अति रनधीर ॥ २ ॥

छंद ।

लाये[2] मुलक उठाये थाने । सुनि सुनि साहि बहुत मुरझाने ॥
नौसेरी सूबा पहिरायौ । पीठल गौर सहाइक आयौ ॥
सुनि बाइस उमराइ उमंडे । थाने छोड़ ओड़छे मंडे ॥
बिरझ्यौ[3] चंपतिराइ बुंदेला । फौजन पर कीन्हौ बगमेला[4] ॥
जबै कमान कुंडलित कीन्ही । कठिन मार तीरनि की दीन्ही ॥
तीछन तीर बज्र से छूटे । बखतरपोस पान से फूटे ॥

१—यहां कवि का अभीष्ट यह है कि "बीर भूमि शिरोमणि बुंदेलखड की वीरप्रसवनी भूमि में घृणित और अपावन मुगल आकर आनद से विचरने लगे, हाय इस कायर जुझारसिंह की कायरता से इस वीर भूमि की यह दशा होगई कि मृगराज के विहार कानन मे उसके मत्त गज, मृगराज के न होने से, आनंदमय विचरने लगे ।

२—लाये = जला दिये ।

३ विरझ्यौ = सम्मुख हुआ, उलझा । ४ बगमेला किया—अर्थात् भीषण रूप से आक्रमण किया । मेल देने के अर्थ छोड़ देने, डाल देने अथवा मिला देने के हैं और बगमेल से अभिप्राय यह है कि घोड़ों की बागों को नितान्त ढीला करके घोड़ों को सरपट दौड़ा कर शाही सेना पर टूट पड़ा ।

फौज फारि चंपति रन जीत्यौ। अरि पर प्रलै काल सम बीत्यौ॥
मोर गौर की फौज हराई। मुगल सँहारि करी मन भाई॥

दोहा।

मारयौ ठिल सहिबाजखां[1], दियो ओंड़छौ[2] बारि[3]।
फते फतेखां सों लई, बाकी खान सँहारि॥ ३॥

छन्द।

मारि लूट सब फौज हराई। सूबा दिल में दहसत खाई॥
चहूँ ओर तैँ सूबा घेरो। दिसलि अलात चक्र सो फेरो॥

---

१ सहिबाजखां, शुद्ध शब्द शहबाजखां है। यह शाहजहां की सेना का नायक था। इसने बाकीखां फ़तहखां वगैरा आदि सेनानायकों के साथ बुंदेलखंड पर आक्रमण किया था।

२ ओड़छा, ओड़छा अथवा ओर्छा, वर्तमान टीकमगढ़ राज्य की प्राचीन राजधानी है। यह स्थान झांसी से पूर्व छः मील के अंतर पर बेतवा तट पर बसा है। इसी ओर्छाधीश वीरकेशरी महाराज वीरसिंहदेव ने प्रबल सम्राट अकबर का दर्प दमन करने के उसके प्रिय मंत्री अबुलफ़ज़्ल का शिरोच्छेदन आंतरी की घाटी में किया था। कविकुल गुरु केशवदास मिश्र इसी ओर्छे में जन्मे थे। ओर्छा यद्यपि राजधानी न रहने से छविहीन हो रहा है तथापि नौचौकिया फलबाग, रघुनाथ जी के मंदिर, चतुर्भुजजी के मंदिर, ओर्छे के दुर्गम दुर्ग, और अन्यान्य राज्य-प्रासादों के दृश्य से उसका ऐतिहासिक महत्व अद्यापि जीवित है।

३—बारि दियो = जला दिया।

जरी सिरौंज[१] भेलसा[२] भाग्यौ। धर[३] उज्जैन[४] धरधरा[५] लाग्यौ॥
ह्वांतै धमकि[६] धमौनी[७] मारी। गोपाचल[८] में खलभल पारी॥
सकल मुलक नहिँ जात गनाये। चामिल[९] तैँ रेवा लौं लाये॥

१—सिरौंज मध्यभारत का एक नगर है।

२ भेलसा, यह नगर गवालियर राज्य का एक सूबा है और भारतवर्ष का एक अत्यंत प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। कहा जाता है कि कविवर भवभूति यही जन्मे थे। मुसलमानों ने इस नगर को ध्वंस कर दिया था। बौद्धकाल में यह नगर बड़ी उन्नति पर था, यहा पर अब भी महाराज अशोक के समय के बहुत से स्थानों के खंडहर पड़े है और प्रसिद्ध सांची के स्तूप भी इसी के समीप है। यहां प्राचीन-काल में एक अनूपम मंदिर भगवान भुवन-भास्कर का था और सोमनाथजी के मंदिर के समान श्रीसम्पन्न था। कहा जाता है कि दुराचारी शहाबुद्दीनगोरी ने उसे तोड़ा था। "वाल" सूर्य का नाम है और उसी वाल से यह भेलसा बना है। प्राचीन विदिशा का यही नगर राजधानी था, इसी के निकट प्राचीन "वैसगर" नामक नगर के खंडहर पड़े है।

३—धर = वर्तमान धार अथवा धारानगरी।

४—उज्जैन, यह नगर जगत प्रसिद्ध महाराज विक्रमादित्य की राजधानी था। वर्तमान काल में महाराज ग्वालियर के मालवे नामक सूबे की राजधानी है। हमें इसके बिशेष परिचय देने की आवश्यकता नही क्योंकि जो लोग, महाराज विक्रमादित्य और कविकुलगौरव कालिदास के नाम से परिचित है वे उज्जैन से पूर्णतया परिचित हैं और जो इनके नामों और चरित्रों से परिचित नहीं है हमारी समझ में वे इसके पात्र ही नहीं है कि उन्हें उज्जैन (प्राचीन अवंती) से परिचय कराया जाय।

५—धरधरा लगना = कँपकँपी लगना, थर्राना। ६—धमकि = धावा करके। ७—धमौनी = शुद्ध नाम धामौनी है, यह नगर सागर के निकट मध्यभारत में है। ८—गोपाचल—ग्वालियर का प्राचीन नाम है। ९—चामिल = चम्बल नदी।

पजरे[१] सहर साहि के बाँके । धूम धूम में दिनकर ढाके ॥
सब उमराइन चौथ चुकाई । ओड़ै[२] को चंपति की धाई[३] ॥
लिखी खबर बाकिन[४] ठिठकाई[५] । पातसाह को बांच सुनाई ॥

दोहा ।

चंपति के परताप तै, पानिप गयौ ससाइ ।
पौसेरी भरि रहि गयौ, नोसेरी उमराइ[६] ॥ ४ ॥

छन्द ।

सुनत साहि फिरि भेजी फौजें । उमडी दरिया कै सी मौजें[७] ॥
खानजहाँ सूबा चढ़ि आयौ । त्यौंही सैदमहम्मद[८] धायौ ॥
बली बहादुरखान हँकायौ । अरु अबदुल्लहखाँ पग धायौ ॥
और संग उमराइ घनेरे । आये उमडि काल के पेरे ॥
डंका आइ देस में कीनो । मुगल पठान जुद्ध-रस भीनो ॥

१—पजरे = निकट के, समीपस्थ । २—ओड़ना = सम्हालना ।

३ धाई—धावा, प्रहार । ४—बाकिन = गुप्त समाचार देनेवाले, पर्चे-नवीस । यवन बादशाहों के समय मे एक प्रकार के दूत प्रत्येक सूबेदार के साथ में तथा युद्ध के समय मे सेना के साथ में गुप्त रूप मे रहते थे । इन्हें अखबार नवीस कहते थे । राज्य दर्बार मे इनकी बड़ी प्रतिष्ठा होती थी । इन्ही लोगों को हिन्दू राजसभाओं में "बाकिन" अर्थात् वाक्य-लेखक कहते थे ।

५ ठिकठाई = ठीक ठीक । ६—"पौसेरी भर रहि गयो नौसेरी उमराव" अर्थात् वह (शाही सर्दार) प्रतिष्ठित नायक जिसका नाम नौसेरी उमराव था महाराज चंपतराय के प्रताप से भयभीत होकर ऐसा सूख गया कि नौसेरी के ठौर पौसेरी भर रह गया अर्थात् अब वह अपने पूर्व रूप, बल पौरुष में इतना घट गया है कि नौ सेर के बदले पाव भर हो गया है । ७ मौजैं = तरंगैं, लहरैं ।

८—सैदमहम्मद = सैयद मुहम्मद ।

छाइ छाइ रबिमंडल लीन्हौं। नौसेरीखाँ कौं बल दीन्हौं[1] ॥
बल कौं पाइ मुगल दल गाजे। पिले बजाइ जुद्ध के बाजे ॥
बड़ी फौज लखि चंपति फूले। श्रीपति सगुन भये अनुकूले ॥

दोहा।

सगुन भये अनुकूल सब, फूले चंपतिराइ।
अति अद्भुत बिक्रम रच्यो, कासों बरनौ जाइ ॥ ५ ॥

छन्द।

कबहूँ प्रगटि जुद्ध में हाकै। मुगलन मारि पुहुमि तल ढाकै ॥
बानन बरषि गयंदनि फोरै। तुरकनि तमकि तेग तर तोरै ॥
कबहूँ जुरै फौज सौं आछै। लेइ लगाइ चालु दै पाछै ॥
बाँके ठौर ठौर रन मंडे। हाहा[2] करे डाडु लै छंडे ॥
कबहूँ उमडि अचानक आवै। घन से उमड लोह बरषावै ॥
कबहूँ हाँकि हरौलनि[3] कूटै। कबहूँ चाँपि चदालनि लूटै ॥
कबहूँ देस दौरि कै लावै। रसद कहूँ की कढ़न न पावै ॥
चौकी कहै कहाँ ह्वै जैहौं। जित देखौं तित चंपति हैहौं ॥

दोहा।

चौंकि चौंकि चौकी उठौ, दौंकि दौंकि उमराइ।
फाके लसकर में परे, थाके सबै उपाइ ॥ ६ ॥

छन्द।

जब उपाइ सूबनि के थाके। सुनि सुनि साहि सबनि कौं ताके ॥
अब कीजै कैसो मनसूबा। हैं हैरान सीगरे सूबा ॥
तब मंत्रिन मिलि मत्र बिचारयौ। चपति उर नहिँ ये सब हारयौ ॥
जो अनेक जुद्धन कौं जीतै। सो फल पावै जो चित चीतै ॥

१—बल दीन्हो = सहायता पहुँचाई। २—हा हा करना—विनती करना, अर्थात् सब उँगलियों के अग्रभाग को मुख के सम्मुख ले जाकर हा हा शब्द कहना महान दीनता का सूचक है। ३—हरौल—फार्सी हरावल = सेना का अग्रभाग।

तासौं भूल बिरोध न कीजै। जौ कीजै तौ तन धन छीजै॥
चंपति कै चित की हम जानैं। ग्रौरन बैठ न पावै थानैं॥
राज ग्रोंड़छे कौ सुनि लीजै। प्रबल पहारसिंह को दीजै॥

दोहा।

पायौ राज पहार नृप, चली चाह सब ठाइ।
गई भूमि भुजदड बल, फेरी चंपतिराइ॥ ७॥

छन्द।

गई भूमि चंपति फिरि फेरी। मेटी फिकिर दाहिनी डेरी॥
नगर ग्रोंड़छे बजी बधाई। भई देस के मन की भाई॥
मैड[1] बुंदेलखंड की राखी। रही मैड अपनी अभिलाषी॥
नृपति पहारसिंह सुख पायौ। चंपतिराइ मिलन कौ आयौ॥
तब नृप कलस पाँवड़े कीनै। आदर करि आगैसर लीनै॥
भुजा पसारि मिले छबि छाये। उमगि अंगननि[2] मंगल गाये॥
मुकताहलन अतुल भुज पूजे। चंपति के सबही जस कूजे॥
धन चंपति फिरि भूमि बहोरी। भुजन पातसाही भकझोरी॥

दोहा।

प्रलय पयोधि उमंड में, ज्यौं गोकुल जदुराइ।
त्यौं बूड़त बुंदेल-कुल, राख्यौ चंपति राइ॥ ८॥

छन्द।

राज पहारसिंह को राख्यौ। उन उर दोष धरयौ गुन नाख्यौ[3]॥
सब जग चंपति के जस गावै। सुनि सुनि अनख[4] भूप उर आवै॥
बढ़ी ईरषा उर में ऐसी। कथा भीम दुरजोधन कै सी॥
उर मे छई[5] कपट कुटिलाई। करन लगे अपनी मनभाई॥

१—मैड़ = प्रतिष्ठा, बात। २—अंगननि = स्त्रियों ने। ३—नाख्यौ = नाख्यो, मेट दिया। ४—अनख = डाह, ईर्षा। ५—छई = फैली।

नृप मन में यह मंत्र विचारयौ। इनि चंपति अरि कौ दल भारयौ ॥
इनकौ मन तबही ते बाढ्यो। त्यौंही सुजसु जगत मुख काढ्यौ ॥
अब जौ लौं इनके जस फैले। तबलौं बदन हमारे मैले ॥
अरु जौ कहूँ फिसाद उठावै। तौ हम पै दिल्लीस रुठावै ॥

दोहा।

तातैं जौ चढ़ि मारियै, तौ अपजसु बिस्तारु।
न्यौति गुपित[1] कछु[2] दीजियै, यहै मंत्र है सारु ॥ ९ ॥

छन्द।

सार मंत्र ऐसो ठहरायो। पाप पहारसिंह उर आयो ॥
बिसर गई जो करी निकाई। उगल्यौ गरल दूध की थाई[3] ॥
एक समैं न्योते सब भाई। आदर सौं ज्यौंनार बनाई ॥
उमग भरे सब बन्धु बुलाये। चंपतिराइ सहित सब आये ॥
जथा उचित हित सौं बैठारे। परसन लगे बिसद पनवारे[4] ॥
तहाँ भूप जे कुल के माने। ते छिन में काहू नहिँ जाने ॥
पनवारो चंपति को आनो। देखि सुवा सारो[5] किररानो[6] ॥
लोचन मूँदि चकोर डेराने। जानि गये जे चतुर सयाने ॥

दोहा।

जाननहारे जानियौ, भोजन के आरंभ।
भिंम बुंदेला कौं भयौ, प्रगट भूप कौ दंभ ॥ १० ॥

छन्द।

भिंम दंभ भूपति को जान्यौ। अपनौ प्रान त्याग उर आन्यौ ॥
चंपति कौ पनवारौ लीनौं। अपनौ बदल चंपतिहि दीनौं ॥
भोजन करि डेरन कौं आये। गुपित मंत्र काहू न जनाये ॥

१—गुपित = गुप्तरूप से। २—कछु दीजियै = कोई विष खिला देना चाहिये। ३—थाई = ठौर, बदले। ४—पनवारे = पत्तलैं। ५—सारो = मैना। ६—किररानो = चिड़चिड़ाने लगा, किरकिराने लगा।

लगी भिंम कौं अतुल दिनाई[1] । तुरत हि मीच समै बिन आई ॥
भिंम लोक आनँद में पायो । बन्धु हेतु निज प्रान गँवायो ॥
गुपित हती नृप की कुटिलाई । प्रगट भिंम की मीच बनाई ॥
कोऊ करौ किती चतुराई । पाप रीत नहि छिपै छिपाई ॥
जो बिधि रचौ होत है सोई । जस अपजसै लेहु किनि कोई ॥

दोहा ।

यह उपाइ निरफल भयौ, नृप पहिराई[2] चोर ।
चटक चपट पट में चढ़ै, दये बीर पर बोर ॥ ११ ॥

छंद ।

नृपति पहार चोर पहिराये । चंपति के मारन कौं धाये ॥
जबही रैन अँधेरी आई । चले करन तसकर मन भाई ॥
स्याम रंग कुलही[3] सिर दीन्हे । स्याम रंग कछनी कछ लीन्हे ॥
बाढ़ि धरै बगुदा[4] कटि बाँधे । स्याम कमान स्याम सर साँधे ॥
होत न आहट भैा पग धारे । बिन घंटन ज्यौं गज मतवारे ॥
स्याम[5] रंग तन माह समाने । चैाकीदारन जात न जाने ॥
चोर पैठि महलनि मैं आये । तहां ब्यौंत हैं बने बनाये ॥
श्रैार भैान में दीपक दीन्हैां । निज घर को चंपति घर कीन्हैा[6] ॥

१—दिनाई = एक प्रकार का विष होता है, जो शेर अथवा तेंदू की मूँछ के बाल, बिच्छू के डंक, साप के मुँह मे भर दिए गए चावल, अथवा मेंढ़क से बनाया जाता है। उस विष को खिला देने से खानेहारा कभी तो अति शीघ्र परन्तु अधिकतर कुछ काल मे घुल घुल कर मर जाता है। यह विष किसी औषध से अच्छा नहीं होता और कुछ दिनों मे अपना घातक गुण करता है, इस कारण इसे दिनाई कहते है।

२—पहिराई = पहरा देनेवाले ।   ३—कुलही = टोपी ।

४—बगुदा (बगुरदा)—एक प्रकार का शस्त्र है जा पेशकब्ज की भांति बना होता है।

५—"स्यामरंग तन मॉह समाने" अर्थात् काले वस्त्रों में छिपे हुए।

६—घर कीन्हों = बुझा दिया ।

दोहा ।

ग्रौर दीप परगास में, लख्यौ छाँह तेँ चोर ।
तानि कनपटी में हन्यौ, कढ्यो बान उहि ग्रोर ॥ १२ ॥

छंद ।

गिरयो चोर चंपति के मारयौ । ग्रौरनि लियो उठाइ निहारयौ ॥
चले चोर सब लोग जगाये । सोरसार करि दूर भगाये ॥
सदा प्रबुद्ध बुद्ध है जाकी । तासौं कैसे चलै कजाकी[1] ॥
यह सुनिकै चंपति की माता । दानबिधान ज्ञान गुन ज्ञाता ॥
निकट ग्रापने पुत्र बुलाये । सुखद मंत्र के बचन सुनाये ॥
तुम कीन्ही नृप के हित पेंडै । ग्रब नृप परयौ तुम्हारे पैंडै[2] ॥
तातेँ ग्रब यह मंत्र बिचारो । दिल्लीपति मिलिबो ग्रखत्यारो ॥
मिलै दिलीस बहुत सुख पैहै । मनमान्यौ मनसब[3] कर दैहै ॥

दोहा ।

ऐसे मंत्र बिचारि कै, पठयो दिली उकील[4] ।
सुनत साहि उमग्यो हियो, कब देखैां वह डील[5] ॥ १३ ॥

छंद ।

सुनत साहि चपति चित चाहे । देखन के उर लगे उमाहे ॥
पहुँच्यौ चंपतिराइ बुँदेला । मानी साहि धन्य वह बेला ॥
दै मनसब खंधार पठाये । दारा की तावीन लगाये ॥
गढ़ खंधार[6] जाइ कै घेरयौ । मुलकनि हुकुम साहि कै फेरयो ॥
जब उमराइ घेरि गढ़ लागे । चंपतिराइ जुद्ध रस पागे ॥

१—कजाकी—शुद्ध क़ज़्ज़ाक़ी है = कपट, छल, चालाकी ।
२—पैंड़े परना = पीछे पड़ना ।   ३—मनसब = पद, अधिकार ।
४—उकील—इसका शुद्ध रूप वकील है = दूत ।
५—डील = महानुभाव, प्रतितिष्ठित पुरुष ।
६—खंधार = शुद्ध शब्द क़ंदहार है ।

गढ़ के निकट मोरचा[1] रोपे। सब उमराइन के जस लोपे॥
ढकिल करी[2] सबतैं अधिकाई। ओड़ी[3] गुरु गोलिन की घाई॥
डारे हलनि हलाइ गढ़ोई[4]। अरि के हिय की हिम्मत खोई॥

दोहा।

दारा गढ़ खंधार की, पाई फतै अचूक।
चंपति की हिम्मत लखे, उठी हिये में हूक॥ १४॥

छंद।

चंपति की हिम्मत उर आनै। रीझ ठौर दारा अनखानै[5]॥
फतै पाई दिल्ली फिरि आये। मुजरा करि कै साहि मिलाये॥
सिंह पहार अनषु उर आनै। ठान प्रपंचनि के उर ठानै॥
चारी करै आप चहुं फेरा। खोज[6] डारि चंपति के डेरा॥
खोज षाइ जग इन्हैं लगावै। निरनै[7] देत अनुष उर आवै॥
इहि विधि डोर भेद के डारै। चतुरन हूँ नहि परन निहारै॥
कपट प्रपंच जु ह्वै करि आवै। झूठ ठौरि तै सांच बतावै॥
लिखै चितेरथो[8] ज्यौं जल बीची। सम कागद में ऊँची नीची॥

दोहा।

दुहू ओर अन्तर परयौ, क्रम ही क्रम यह रीति।
हियै अनषु[9] उनकै बढ्यौ, इनके धरी प्रतीति॥ १५॥

१—मोरचा रोपना = सैन्य भाग को आक्रमण कराने के लिये टिकाना।
२—ढकलि करी = प्रचंड रूप से धावा किया। ३—ओड़ी = सहन की।
४—गढ़ोई = गढ़ के लोग। ५—अनखानै = क्रोधित हुए।
६—खोज = चिह्न। ७—निरनै = समाधान।
८—चितेरथो = चित्रकार। ९—अनषु = झुंझलाहट।

छंद ।

दुहूं ओर अन्तर जब जान्यो। पिसुन[1] प्रवेस तबै उर आन्यो॥
भूप कह्यो दारा सौं ऐसे। सुनौ भाग चंपति कौ जैसे॥
तीन लाख की कौंच[2] सुहाई। दई साहि इनकों मन भाई॥
हाल जमा नो लाख गनाई। बिना तफावत अबलौं खाई॥
तातैं कौंच हमैं जो दीजै। तो नो लाख रुपैया लीजै॥
यह सुनि कै दारा सुख पायो। पहिलो अनषु हिये चढ़ि आयो॥
जहां न गुन की बूझ बड़ाई। चुगली सुनै चित्त दै साई॥
रीझ ठौर प्रभु खीझ जनावै। तहां कौन गुन गुनी चलावै॥

दोहा ।

रीझ फूलि खंडन करै, डारि खीझ कै डोर।
ऐसो स्वामी सेइये, तातै दुःख न ओर॥ १६॥

छंद ।

दारासाहि लोभ उर आन्यो। सेवा को सिगरो फल मान्यो॥
चंपति को यह बात सुनाई। तू जागीर तीगुनी पाई॥

१—पिशुन = छली चुगुलखोर ।

२—कौंच = जालौन प्रान्तान्तर्गत दक्षिण भाग में एक नगर विशेष है और कोंच नाकम तहसील का प्रधान नगर है। चँदेल वंश के इतिहास में प्रख्यात सिरसागढ़ नामक स्थान इसी तहसील के अंतर्गत पहूज नदी के तट पर है। जब महाराज पृथ्वीराज सिरसा गढ़ पर सेना संधान कर आए थे तब इसी कौंच नामक स्थान में उनकी सेना का डेरा पड़ा था। चौंड़ाताल तथा कुछ और बैठकें इत्यादि अब भी उस समय की स्मारक यहां देख पड़ती हैं। इसी के निकट पठा नमक पहाड़ी है। उसके निकट भी कुछ प्राचीन चिह्न पड़े हैं। इसी के "अकोढ़ी" नामक एक ग्राम के निकट रणखंभ रोपा गया था जहाँ पृथ्वीराज और चंदेलों का अंतिम युद्ध हुआ था। मुग़ल साम्राज्य में भी कौंच एक प्रसिद्ध सूबा था और यहाँ पर तहसील के निकट मीरखाँ पिंडारी और अंग्रेज़ी सेना का एक विकट युद्ध हुआ था। यह नगर आज कल भी व्यापार की एक प्रसिद्ध मंडी है।

कौंच पहारसिंह मनभाई। देता हौं मेरे मन आई॥
तीन हुकुम दारा जो बोले। चंपतिराइ बचन त्यौं खोले॥
कौंच जाइ चंडालनि दीजै। वृथा हमारो छोर न छोजै॥
यह सुनि कै दारा अनखान्यौ। अरुन रंग आनन में आन्यौ॥
चंपतिराइ समर उर ठान्यौ। दिग्गज से दोऊ ऐड़ान्यौ[१]॥
दिगपालन को दहसत बाढ़ी। मजलिस रही चित्र ज्यौं काढ़ी॥

दोहा।

दिगपालन दहसत बढ़ी, कठिन देखि वह काल।
तुरत आनि आड़ा[२] भयौ, हाड़ा श्री छत्रशाल॥ १७॥

छंद।

हाढ़ा चंपति के ढिग आयौ। दारा कौ न भयो मन भायौ॥
दारा अन्दर को पग धारे। चंपति के इत बजे नगारे॥
डंका प्रगट बिसर[३] के बाजे। चंपतिराइ देश में गाजे॥
छोड़ि पातसाहन की सेवा। कियो अलंकृत आइ महेवा॥
पुत्र कलत्र मित्र सब भेटे। दिल के दुःख सबन के मेटे॥
चहूँ चक्र फौजैं फरमाई। अरि की बदन जोति मैलाई॥
धनिकनि गढ़ि धरि रहे लुकाई। सूबन सौं हठि चौथ चुकाई॥
दै हयवृन्द कबिन्दन गाजै। निरमल सुजस जगत छबि छाजै॥

दोहा।

फैले चंपतिराइ के, जग में सुजस बिलंद।
उदै भये तिहुँ लोक जनु, कैयक कोटिन चन्द॥ १८॥

छंद।

तिहूँ लोक चंपति जसु जाग्यौ। सुनि सुनि को न हिये अनुराग्यौ॥
नृपति पहार करी जे घातैं। ते प्रगटी कहिवे कौ बातैं॥
जग में करो जे न कृतु मानै। नीकी करी लटी[४] उर आनै॥

१—ऐड़ान्यौ = ऐंठे। २—आड़ा होना = बीच बचाव करना।
३—बिसर = कूच। ४—लटी = खोंटी, बुरी।

तिनके थल जे बनै बनाये। नृपति पहारसिंह तै पाये ॥
सदा न जग में जीवै कोई। जस अपजस कहिवे कौं होई ॥
जग जबतै अपजस जस छावै। क्रम तै अध ऊरधि गति पावै ॥
खोदे कुआ पधारे खाले[1]। महल उठावै ऊचै चाले ॥
इहि बिधि कर्मन की गति गाई। वेद पुरानन सुनी सुनाई ॥

दोहा।

जैसी मति उपजै हिये, तैसो मनु ठहराइ।
होनहार जैसी कछू, तैसी मिलै सहाइ ॥ १९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे चोरवधपहारसिंह प्रपंचवर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

१—खाले = नीचे की ओर।

छठां अध्याय ।

छन्द ।

एक और अब सुनौ कहानी । होनहार गति जात न जानी ॥
साहिजहां दिल्लीपति गायौ । जाकौ हुकुम चहूं दिस छायौ ॥
चारि पुत्र ताके मरदानै[1] । दारासाह साहि मनमानै[2] ॥
और मुरादसाह अरु सुजा[3] । औरँगसाह समान न दूजा ॥
बत्तिस बरष साह रस भीनै । भोग पातसाही के कीनै ॥
जबै अवस्था उतरन लागी । पुत्र प्रीति मन में अनुरागी ॥
साहिजहां यह चित्त बिचारी । दारा कौं दीन्ही सिरदारी ॥
दारा अपनौ हुकुम चलायौ । सब भाइन कौं हियौ हलायौ ॥

दोहा ।

हुकुमनु कै दिल्लीस कौ, भई और की और ।
उमडि साहजादिन किये, तखत लैन के डौर[4] ॥ १ ॥

छन्द ।

ब्यौंत बिमल बुद्धिन के डारे । तखत लेन के चित्त बिचारे ॥
साह मुराद हियौ हुलसायौ । गज सिक्का चलिबौ फरमायौ ॥
औरँगसाह चाहि सुनि लीनी । बिलसाई बर बुद्धि प्रबीनी ॥
इच्छा प्रगट तखत की छाँडी । प्रीति मुरादसाह सौं माँडी ॥
चित दै हित के लिखे लिखाये । अति प्रबीन उमराइ पठाये ॥
कह्यौ मुरादसाह सौं ऐसौ । सरस बिचार मंत्र है जैसौ ॥
बिन ही दिल्ली तखत लै बैसे[5] । आन[6] चलै गज सिक्का कैसे ॥
पेल[7] तखत पर बैठे जोई । दिल्ली पातसाह सो होई ॥

१—मरदानै = वीर । २—मनमानै = प्रिय था । ३—सूजा = शुद्ध शब्द शुजाअ है । ४—डौर = डौल, ढंग । ५—बैसे = बैठे । ६—आन = और भाँति । ७—पेल = घुसकर, बरजोरी ।

दोहा।

हमैं न इच्छा तखत की, यह जानौ सब कोइ।
चलो तुम्है लै देहिंगे, होनी होई सु होइ॥ २॥

छन्द।

औरँगसाह मंत्र तब कीनौ। साह मुराद हियै धरि लीनौ॥
डिढ़ ठहराव यहै ठहरायौ। बाढ़ी प्रीति कुरान उठायौ॥
दक्षिन तैं उमडे दोउ भाई। ठिले दीह दल पहुमि हलाई॥
पूरब तैं सूबा दल साजे। प्रगट जुद्ध के धौंसा बाजे॥
दारा घाट धौरुपुर[1] बांध्यौ। रोपि[2] अराबे[3] कलहै कांध्यौ॥
सूबन के दिल दहसत ऐसी। अवधौं दई करत है कैसी॥
हलचल मची चहूँ दिस ऐसी। खलभल प्रलै काल की जैसी॥
प्रगटी चाह सीढरा[4] ढरक्यौ। चपति कौ दच्छिन भुज फरक्यौ॥

दोहा।

फरक्यौ चंपतिराइ कौ, दच्छिन भुज अनुकूल।
बड़ी फौज उमड़ी सुनी, भई जुद्ध की फूल[5]॥ ३॥

छन्द।

बड़ी फूल चंपति सुख पायौ। औरँग उमड़ि अवंती आयौ॥
सिंह मुकुंद हतौ तंह हाड़ा। दल कौं भयो ऐंड़ धर आड़ा॥
उमग्यौ औरँग कौ दल गाढ़ौ। हाड़ा भयौ समर में ठाढ़ौ॥
बिकट सार समसेरन माचो। बाजत मारु कालिका नाची॥
हाड़ा हरषि बिमानन बैठ्यौ। तब औरंग अवंती पैठ्यौ॥
नौरँगसाह तखत कौं उमड्यौ। दारा जहाँ मेघ सौ घुमड्यौ॥
सुनी खबर दारा अति कोप्यौ। चामिल घाट अराबौ रोप्यौ॥
फिकिर बढ़ी सब कै दिल ऐसी। अवधौं दई होति है कैसी॥

१—धौरुपुर = धौलपुर। २—रोपि = स्थापित करके, सम्मुख जमाकर। ३—अराबे = तोपखाने, तोपैं। ४—सीढरा = सिंगड़ा, बारूद भरने की कुप्पी। ५—फूल = उत्साह, उमंग।

दोहा ।

कैसी धौं अब होति है, कीजै कौन विचार ।
उड़ँ अराबे में सबै, भयौ सुभट संहार ॥ ४ ॥

छन्द ।

तब औरंग सबनि तन ताके । बल बौसाउ[1] सबन के थाके ॥
चकृत चित्त चारहुँ दिस दौरे । कछु न बुद्धि काहू की औरे[2] ॥
तब औरंग मतौ यह कीनौ । बिमल चित्त में चंपति दीनौ ॥
हित सौं लिखि फरमान पठायौ । चंपतिराइ सुनत सुख पायौ ॥
उमग भरे दल साजि उमंडे । नरवर[3] ढिग नौरँग जहँ मंडे ॥
तँह अलगारन[4] धाइ पहूँचे । देखे दल के झंडा ऊँचे ॥
चहूँ दिसि सोर कटक में छायौ । चंपतिराइ बुंदेला आयौ ॥
सुनि औरँग उर उमंग बढ़ाई । मनौ फते दिल्ली की पाई ॥

दोहा ।

आनन औरँगसाह कौ, चढ्यौ चौगुनौ चाव ।
ल्यावो चंपतिराइ कौं, हमसौं मिलै सिताब[5] ॥ ५ ॥

छन्द ।

धावन एक सहस जन धाये । चंपति कौं हित बचन सुनाये ॥
नौरँगसाह तुम्है चित चाहै । सबै तुम्हारे भाग सराहैं ॥
तातैं अब बड़ बिलम[6] न कीजै । चलि दिलीस कौं दरसन दीजै ॥
तौलगि नौरँगसाह पठायौ । तुरत बहादुरखाँ चलि आयौ ॥
कह्यौ आइ चंपति सौं भाई । तुम इतनी क्यों बिलम लगाई ॥
अब यह समै बिलम कौ नाही । भई तिहारे चित की चाही ॥

१—बौसाउ = व्यवसाय, पौरुष । २—बुद्धि औरना = समझ में आना ।
३—नरवर—गवालियर राज्यान्तर्गत नगर विशेष—राजा नल की प्राचीन राजधानी ।
४—अलगारन = कूच पर कूचकरते हुए, शीघ्रता से, ।
५—सिताब—फार्सी शुद्ध शिताब = शीघ्रता से । ६—बिलम = विलंब, अबेर, देरी ।

अब यह हाजिर है असवारी। चढ़ौ पालकी करौ तयारी॥
चढ़ि पालकी पयानौ कीन्हौ। दरस प्रसन्न साह कौ लीन्हौ॥

दोहा।

मुजरा करि ऊभौ[१] भयौ, पंचम चंपतिराइ।
लखि आंखिन औरंग की, आनन्द झलक्यौ आइ॥ ६॥

छन्द।

औरँग अति आदर सौं बोले। मिलतहिँ बचन मंत्र के खोले॥
दारा उमडि जुद्ध कौं आयौ। कटक अडोल धौरपुर छायौ॥
विकट अराबौ सनमुख दीनौ। चामिल घाट बांधि उन लीनौ॥
छुटे समुद्र सूखै चहूँघा के। उडे मेरु मंदर से बांके॥
जौ समसेरन होइ लराई। ओड़ै सुभट सुभट की घाई॥
उमगे सूर साह के बाजै। ठेलै कौन प्रलै की गाजै॥
चामिल पार कौन विधि हूजै। जैसे मन की इच्छा पूजै॥
आइ भयौ समयौ यह ऐसौ। चंपतिराइ कीजियै कैसौ॥

दोहा।

कैसौ अब कीजै कहौ, पंचम चंपतिराइ।
अब आदर औरंग कौ, थक्यो चौगुनौ चाइ॥ ७॥

छन्द।

बोल्यौ चम्पतिराइ बुंदेला। और घाट ह्वै कीजै हेला[२]॥
जौ दारा उत आडौ आवै। तौ रन हमसौं बिजै न पावै॥
सुनि औरँग अचरज उर आन्यौ। और घाट चम्पति तुम जान्यौ॥
चम्पति कही घाट हम जानै। तखन काज तुम करौ पयानै॥
सुनि औरंग तखन रस भीनै। चौदह लाख खरच कौ दीनै॥
कीनौ कूच राति उठि जागै। चम्पति भयौ सबन के आगै॥

१—ऊभौ भयो = प्रदीसमान हुआ।

१—हेला = उतारा, फ़ौज को धसा कर पांथ नदी को पार करना।

उमड़ि चलै दारा के सोहैं[1] । चढ़ी उदंड जुद्धरस भौहैं ॥
चामिल उतरि सुभट गन गाजे । पार जाइ संधानै[2] बाजे ॥

दोहा ।

चम्पति मुख औरंग के, भली चढ़ाई ओप ।
नातर उड़ि जाते सबै, छुटै तोप पर तोप ॥८॥

छन्द ।

चामिल पार भई सब फौजैं । तब नौरंग मन मानी मौजैं ॥
दारासाह खबर यह पाई । चामिल पार फौज सब आई ॥
आगै चम्पतिराइ बुंदेला । ह्वै हरौल[3] कीन्हो बगमेला ॥
चामिल पार भये सब आछे । तजै अडोल[4] अराबे पाछे ॥
दारा के दिल दहसत बाढ़ी । चूमन लगे सबनि की डाढ़ी ॥
को भुजदंड समर में ठोकै । उमड्यौ प्रलै सिंधु को रोकै ॥
छत्रसाल हाड़ा तंह आयौ । अरुन रंग आनन छबि छायौ ॥
भयौ हरौल बजाइ नगारौ । सार धार कौ पैरन हारौ ॥

दोहा ।

ह्वै हरौल हाड़ा चल्यौ, पैरनि साहसमुद्र ।
दारा अरु औरँग मड़े, मनौ त्रिपुर अरु रुद्र ॥ ९ ॥

छन्द ।

दारा अरु औरंग उमंडे । मनौ प्रलैघन घोर घमंडे ॥
बजै जुद्ध में निबिड़ नगारे । दुहू दिसि बजे अराबे भारे ॥
गुरु गंभीर घोर धुनि छाई । फटि ब्रह्मांड परै जनि भाई ॥
त्यौं बोले उमराउनि हल्ला । जम के भये कटीले कल्ला ॥
हय गय रथ पैदल रन जूटे । घाइन सहित कवच धर फूटे ॥

१—सोहैं = सम्मुख, मुक़ाबिले में ।
२—संधाने बाजे = बाजे सम्हाले और बजाने प्रारंभ किए ।
३—हरौल—शुद्ध हरावल = सेना का अग्र भाग, सेनाग्रणी नायक ।
४—अडोल = जो हल चल न सकै, अचल ।

चंपति की जब बजी बदूखैं। मसहारिन[1] की मेटी भूखैं॥
दारासाह बजत रन छाज्यौ। जबत[2] पातसाही कौ भाज्यौ॥
हाड़ा सार[3] धार मैं पैठ्यौ। सूरज भेद बिमाननि बैठ्यौ॥

दोहा।

सूरन कौं सुरपुर मिल्यौ, चंद्रचूड़ कौ हारु।
तखत मिल्यौ औरंग कौं, चंपति कौं जस चारु॥ १० ॥

छंद।

चंपतिराइ सुजस जग गायौ। ह्वै हरौल दारा बिचलायौ॥
हरवल ह्वै दारा कौ बांकौ। बेटा बली बहादुरखाँ कौ॥
जुद्ध बुंदेलनि सौं जब साच्यौ। हय हंथयार छाड़ि भगि माच्यौ॥
पाई फतै भयौ मनभायौ। औरँग उमड़ि आगरे आयौ॥
दारा पकरि पठाननि लीन्हौ। साह मुराद क़ैद मैं कीन्हौ॥
धरनी लोक दुहुनि तैं छूट्यौ। नौरँगसाह तखत सुख लूट्यौ॥
बैठे तखत बजे सधानै। चंपतिराइ साह मनमानै॥
नौरँगसाह कृपा करि भारी। मनसब[4] दीन्हौ दुसहहजारी[5]॥

१—मसहारिन = मांसाहारी जन्तु, यथा गृद्ध श्टगाल आदि।

२—जबत = जाब्ता, नियम। ३—सार = लोह।

४—मनसब = पद। ५—दुसहहज़ारी—द्वाज़दहहज़ारी—यह बादशाही समय में एक पद था जिसका पानेवाला बारह हज़ार घुड़सवार सेना का नायक होता था। सेना पदधारी हज़ारी पचहज़ारी दफ़्त हज़ारी आदि नामों से अपने अपने पद के अनुकूल लिखे जाते थे और इन्हीं पदों के उपयुक्त उनकी जागीरें होती थीं।

दोहा ।

ऐरछ[1] अरु सहिजादपुर, कौंच कनार[2] समूल ।
मिली बड़ी जागीर सब, धरि[3] जमुना कौ कूल ॥ ११ ॥

छंद ।

मिली बड़ी जागीर सुहाई । जरैं[4] समीप[5] भतीजे भाई ॥
मुसकी तुरग लूट जो आनौ । खोज बहादुरखाँ सो जानौ ॥
कहि पठई चंवति कौं भाई । घर की लूट तिहारै आई ॥
दल मैं लुट्यौ भतीजौ तेरौ । सो सब साज प्रीति मैं फेरौ ॥
वह करवाल ढाल अरु घोरा । दीजौ राखि आपनौ तोरा ॥
चंपति कौं यह बात सुनाई । बैठे पैंड़ प्रीति सों पाई ॥
तब चंपति ऊपर यह दीनौ । करि घमसान तुरग हम लीनौ ॥
ताकी अब चरचा न चलावो । घर ही यह मन कौ समुझावो ॥

दोहा ।

सुनत बहादुरखाँ बली, उत्तर दियौ न और ।
अनखु हियै मैं धरि रह्यौ, डारि बुद्धि के डौर ॥ १२ ॥

१—ऐरछ—यह नगर बेलातट झासी ज़िले के अतर्गत है । यह बड़ा पुराना ऐतिहासिक नगर है । कहा जाता है कि नृसिंह अवतार यहीं हुआ है और हिरण्यकश्यप की यहीं राजधानी थी । ईंटें यहा बहुत बड़ी बडी प्राचीन काल की भूमि के भीतर भरी पड़ी है । यहां ईंटे नहीं बनतीं, उन्हीं से सब काम चलता है । प्रसिद्ध किवदंती है । "एरछ ईंट न होय" । यहा एक टूटा हुआ दुर्ग अद्यापि पड़ा है । मुग़ल साम्राज्य मे यह एक प्रसिद्ध सूबा था ।

२—कनार—सूबै कनार यमुना तट का प्रान्त इटावे से लेकर बांदे तक कहाता था और इस सूबे की राजधानी कालपी थी । इस विषय का पता मुग़ल बादशाहों के फ़र्मानों से जो लगता है ।

३—धरि = पकड़े हुए, गहे हुए । ४—जरना = ईर्षा करना ।

५—समीप = समीपी, संबधी ।

छंद ।

तौ लगि सोर कटकु मैं छायौ । पूरब तैं सूबा[1] चढ़ि धायौ ॥
गंगा उतरि प्रयाग पछेल्यौ । औरँगसाह सुनत दल पेल्यौ ॥
हुकुम बहादुरखां कौं कीन्हौ । उनि सुख मानि सीस धरि लीन्हौ ॥
उमड़ि फौज पूरब कौं धाई । हयखुर गरद गगन मैं छाई
और हुकुम चंपति पै आयौ । बैठे कहा साह फरमायौ ॥
गैरहाजिरी लिखि है कोई । मन सब घटै तगीरी[2] होई ॥
आलमगीर आप फरमायौ । हुकुम न मानै सो दुख पायौ ॥
उहित बचन उकील[3] सुनायौ । चंपति हियै अनख बढ़ि आयौ ॥

दोहा ।

अनखु बढ़्यौ मनसब तज्यौ, सेवा कछु न सोहाइ ।
डका दै चंपति चल्यौ, आग आगरै लाइ ॥ १३ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे औरंगजेब-प्रपंच-चंपतिराइ विक्रम-मुकुंदहाड़ा-बध-दारासाह-पराजय-छत्रसालहाड़ा-बध-वर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

१—सूबा—से अभिप्राय शुजा से है । यह बंगाल और आसाम का सूबेदार था । इससे औरंगजेब से खजुहे के समीप जो फतहपुर के ज़िले मे है लड़ाई हुई थी ।

२—तगीरी शुद्ध अर्बी शब्द तग़यीरी تغیری है जिसका अर्थ तबदीली का है । ३—उकील—शुद्ध रूप वकील—यहाँ अर्थ है शाहीदूत, साही समाचार लाने हारा ।

सातवाँ अध्याय ।

छन्द ।

चंपतिराइ देस में आये । चंड प्रताप चहूँ दिस छाये ॥
फौज पेलि भाँड़ैर[1] उजारी । भुमियावट[2] उर में अख्त्यारी ॥
ऐरछ आइ कोट में बैठे । सूबन के उर में डर पैठे ॥
पहुंची खबर साह कौं ऐसी । चंपतिराइ करी उत जैसी ॥
सो औरंग चित्त धर लीनी । पहिल फिकिर सूजा की कीनी ॥
नौरंगसाह साज दल धायो । जूझ जीत सूजा बिचलायौ[3] ॥
दावादार रह्यौ नहि कोई । बैठ्यो तख्त साहिबी जोई ॥

दोहा ।

गज सिक्का औरँग कौ, चल्यौ हुकुम लै संग ॥
देसनि देसनि कौं चले, सूबा तेज अभंग ॥ १ ॥

छन्द ।

सूबा ह्वै सुभकरन सिधायौ । हित सौं पातसाह पहिरायौ ॥
सँग बाइस उमराउ पठाये । लै मुहीम चंपति पै आये ॥
जोरि फौज सुभकरन बुँदेला । ऐरछ पर कीन्हौ बगमेला ॥
बाजत सुनै जूझ के डंका । उमड़ि चल्यौ चंपति रनबंका ॥
माची मार दुहूँ दिस भारी । रचनहार कौं मुसकिल पारी ॥

१—भांडेर = दतिया राज्यान्तर्गत नगर विशेष है। यहीं चितौड़ाधीश बापा रावल का पोषण हुआ था ।

२—भुमियावट = घरेऊ रीत पर अपने भूमिस्वत्व पर अधिकार करना ।

३—बिचलायौ = भगा दिया ।

चले हाथ चंपति के ऐसे। छूटै बान धनंजय कैसे॥
उतकट भट बखतर धर मारे। कूटे हय गय पक्खरवारे[1]॥
सूखे कढ़े रुधिर नहि छोवै। लागत प्रान परन के पीवै॥

दोहा।

ठिल्यौ कटक सुभकरन कौ, ठिल्यौ खवास अडोल।
रनउमंग में उमड़ि कै, नच्यौ तुरंग अमोल॥ २॥

छन्द।

तबहिँ बान चंपति कौ छूट्यो। हठुवा लग्यौ पुठी ह्वै फूट्यौ॥
गिरो तुरंग खवास हँकारयौ। सो कासिमखाँ बरछो मारयौ॥
उगरसाह तंह मार मचाई। साहि गढ़ै अति ओप चढ़ाई॥
चंपतिराइ बिजै तँह लीनौ। मुँह मुरकाइ[2] अरिन कौ दीनौ॥
बिकट कटक झुकझोरि झुलायौ। ह्वाँते उमड़ि धरौनी[3] धायौ॥
निकट रायगिरि तै तहँ आयौ। तहाँ खोज बंका दल छायौ॥
जानि कटक उमराइ करेरौ। दीनौ राति उमंडि दरेरौ॥
सुभट बान गोलिन सौं कूटे। अरि के बिकट मोरचा छूटे॥

दोहा।

पैठे उदभट कटक में, कपटे बिकट पठान।
घाइन घालत[4] चाव सौं, करि चंपति की आन॥ ३॥

छन्द।

तहाँ मार माची अति भारी। चंपतिराइ तेग झुकि झारी॥
उमड़ि बैरि कौं चलदल कीन्हौ। कटक युद्ध कौं पैदल लीन्हौ॥
समर बीर बैरिन पग रोपे। जो न जिहाज ओट धरि कोपे॥
बर्षत अस्त्र कवच धर फूटे। मघामेघ मानौ झर जूटे॥

१—पक्खर = पाखर, हाथी घोड़ों का कवच।

२—मुरकाना = फेर देना, भगा देना। ३—धरौनी = स्थान विशेष।

४—घालना = मारना, चलाना।

तहाँ चौदहा मेघ सिधारयौ। सुनि सरदार समान हकारयौ॥
कहै चौदहा मुजरा मेरौ। हौं मारौं सरदार अनेरौ॥
चंपत लख्यौ बचन सुनि प्यारौ। औचक आनि कियौ उजियारौ॥
छुट्यौ बान बैरी कौ भूल्यौ। छाती लग्यौ कढ़यौ अति रूल्यौ॥

दोहा।

पंचम चंपतिराइ कै, लग्यौ बान कौ घाइ।
अधिक युद्ध के रस भयौ, बढ़यौ चौगुनौ चाइ॥ ४॥

छन्द।

हला बोलि बैरी महि आयौ। चंपतिराइ युद्धरस छायौ॥
रन चंपति की नची कृपानी। धरी भीम जनु कीचक घानी॥
फौज फारि चंपति जसु लीन्हौ। अमृत हरत ज्यौं सुपरन कीन्हौ॥
कटकु खोज बंका कौ कूट्यौ। चंपतिराइ बिजै सुख लूट्यौ॥
जीति पाइ अनघोरी[1] आये। चाल दई सुभकरन सिधाये॥
तँह सिकार खेलन अभिलाषो। देबीसिंह नृपति की राखी॥
आइ अजीतराइ तहँ रोके। बर भुजदंड समर में ठोके॥
रहो अजीतराइ कै ऐंड़े। पैठि सक्यौ सुभकरन न मैंड़े[2]॥

दोहा।

राजा देबीसिंह कौं, डेरौ दीनौ देस।
उमड़यौ चंपतिराइ पै, श्री सुभकरन नरेस॥ ५॥

छन्द।

सुनि सुभकरन जुद्धरस भीनौ। मंत्र सुजानराइ सौं कीनौ॥
लरत भिरत बहु काल बितीते। घने जुद्ध सूबन सौं जीते॥
ऐंड़ पातसाहिन सौं कीनी। गई भुमि बंधुन लै दीनी॥
कठिन ठौर मसलहत बताई। नौरँगसाह दिली तब पाई॥

१—अनघोरी = चुपचाप, अचानक।   २—मैंडे = सीमा।

दारा दल जीते मुहरा तै। बड़ी कौन अब हम कौं बातै ॥
घाइल भये हमारे भाई। और अवस्था सी कछु आई ॥
पै सुभकरन पिलै दल साजै। बंधु बिरोध करत हम लाजै ॥
जो कीजै अब उमड़ि लराई। जीते हू जग में न बड़ाई ॥

दोहा।

गोतघाउ[1] तैँ आजु लौं, हमैँ बचायौ ईस।
अब सलाह इन सौं करैं, कछू न ह्वैहै खीस[2] ॥ ६ ॥

छन्द।

ज्यौं मन आनि लगाई बातैँ। होई सलाह कटक बिन जातैँ ॥
सुनि सुभकरन घनौ सुख पायौ। मन मिलाइ मिलिवौ ठहरायौ ॥
त्यौं चंपति कहि कुशल सुहाती। लिखी सुजानराइ कौं पाती ॥
सुरह्यौ[3] घाइ देह बल आयौ। खेल सिकार तुरग दौरायौ ॥
बाँचत चिठी जान वह लीनी। चंपतिराइ सलाह न कीनी ॥
मिलिवे काज बोल हम बोल्यौ। हित सौं हियौ सुभकरन खोल्यौ ॥
बोल बोलि जौ मिलन न जैयै। तौ झूठे जग में ठहरैयै ॥
तातैँ बनै मिलै निरधारै। चंपति हमैँ न झूठे पारै ॥

दोहा।

मिलिवौ राइ सुजान कैं, हियै रह्यौ ठहराइ।
इत अनघोरी ले चलै, घर कौं चंपतिराइ ॥ ७ ॥

छन्द।

घर कौ चंपतिराइ सिधाये। दल लै दुवन दलीपुर आये ॥
तंह छत्रसाल भगतिरस भीनै। उमगि पिता के दरसन कीनै ॥
पहुँचि बेदपुर मे छवि छाये। मिले सुजानराइ सन भाये ॥

१—गोतघाउ = बंधु बिरोध, वंश हत्या।   २—खीस = हानि।

३—सुरह्यो = घाव भर आया।

दोऊ बीर मंत्र कौं बैठे। दिगपालनि के उर भय पैठै॥
तहाँ सुजानराइ जो बोले। बचन सलाह करन के खोले॥
ते चंपति के चित्त न लागे। उद्दित जुद्ध बुद्धि रस पागे॥
जब हम बिरस[1] साह सौं कीनौ। तब इन बचन कह्यौ रिस भीनौ॥
हम न साह कौं मनसब छैहैं। भुमियावट में सामिल रैहैं॥

दोहा।

जब हम भुमियावट करी, तब इन करी मुहीम॥
हमै जीति पै औंड़छौ, चाहत है सब सीम॥ ८॥

छन्द।

चंपतिराइ सलाह न मानी। राइ सुजान वहै ठिक ठानी॥
मन बच कर्म संधिरस राचे। मिलै न चंपति जब ह्वै साचे॥
तहँ सुभकरन साजि दल धाये। समर ठानि चंपति पै आये॥
फौजै उमड़ि निकट जब आई। तब कीन्ही चंपति मनभाई॥
दल पर बान बज्र से बरषे। कौतुक लखैं देवता हरषे॥
हलनि हलाइ फौज बँध फोरै। घनझुंडा[2] ज्यौं पवन झकोरै॥
खलभल परी तुबन दल भानै। कित धौं गयौ कौन नहिं जानै॥
जब न व्यौंत कछु चलै चलाये। तब सुभकरन हजूर बुलाये॥

दोहा।

सँग लै राइ सुजान कौं, मुजरा कीन्हौ जाइ।
देखि साह सुभकरन को, अनतहि दियौ पठाइ॥ ९॥

छन्द।

त्यौंही साह कियो मनसूबा। दक्षिण को भेजो करि सूबा॥
नामदारखाँ नाम बखानौ। दिल्लीपति के अति मन मानौ॥
रतनसाह तिन संग पठाये। चंपति रहे देस में छाये॥
लिखी नवाबसाह कौं ऐसी। चाहे करन बड़ाई जैसी॥

१—बिरस = बिगाड़, विरोध। २—घनझुंडा = दल बादल।

रतनसाह चंपति कौ जायौ। मिल्यौ मोहि सेवा में आयौ ॥
ऊतर साह न दूजौ दीन्हौ। बांचत लिखौ कैद करि लीन्हौ ॥

दोहा।

दिल्लीपति की ओर कौ, जबही सुन्यौ जुवाब।
रतनसाह कौ तुरतही, बिदा कियो जु नवाब ॥ १० ॥

छन्द।

राइ सुजान करी जे घातैं। ते न भईं सब मन की बातैं ॥
ह्वै उदास ह्वांतै उठि आये। ए बिचार मन में ठहराये ॥
जहां न आदर बूझ बड़ाई। जहां न प्रापति[1] बंधु न भाई ॥
जहां न कोऊ गुन कौ पूजै। तहां न पल भर ठाढ़े हूजै ॥
सेवा पातसाह की छाड़ी। फेरि सलाह ओंड़छै माड़ी ॥
तब बिनई हीरादे रानी। हम सेवा नृप की उर आनी ॥
कछु न कपट जानौ हम माही। निहचै चंपति में हम नाहीं ॥
तब रानी जुग फूस्यौ जान्यौ। उर बिश्वास करिवो ठिक ठान्यौ ॥

दोहा।

त्यौंही राइ सुजान सैां, हितुन कही समुझाइ।
तुम अपनी रच्छा करौ, रचियतु इहां उपाइ ॥ ११ ॥

छन्द।

यह सुनि राइ सुजान सिधाये। तज ओंड़छौ बेदपुर आये ॥
अँगदराइ रतन गुन भारे। छत्रसाल जग दृग के तारे ॥
तीनौं कुँवर महेवा छाये। समाचार फौजन के आये ॥
तिनमें छत्रसाल परबीने। खेलत आखेटक रस भीने ॥
हेलहि बरष ग्यारही लागी। प्रगट साल सोरह की दागी ॥
अंगदराइ मंत्र तँह कीन्हौ। ढिग बुलाइ छत्रसालहि लीन्हौ ॥

१—प्रापति = प्राप्ति।

हित सो कहै बचन निरधारे । मामनि[१] के तुम जाउ छतारे[२] ॥
ग्रौर मंत्र मत उर में ग्रानैा । हुकुम मानि तुम करैा पयानैा ॥

दोहा ।

ज्यौं खरदूखन के समैं , धरे धनुष तूनीर ।
ग्रज्ञा श्री रघुनाथ की , मानी लछमन बीर ॥ १२ ॥

छन्द ।

जो छत्रसाल तहां पगु धारे । जहाँ सुनै मामा ग्रनियारे ॥
समाचार चंपति सब लीन्है । डेरा जाइ वेरछा कीन्है ॥
हीरादे[३] फौजै फरमाई । डंका देत जतारह ग्राई ॥
तहँ तें दो फौजैं करि धाये । दुहु दिसि दोऊ बीर दबाये ॥
ग्रौचक फौज वेदपुर ग्राई । भीर[४] सुजान न जोरन पाई ॥
तीन सुभट सँग लीन्है बैठे । प्रतिभट उमडि जाइ कर पैठे ॥
इत सुजान की छुटी बँदूखैं । फूटी बर बैरिन की कूखें ॥
झिल झिल फौज ठिलाठिल धावै । चहुँदिस छोर छुवन नहि पावै ॥

दोहा ।

दारू[५] गोली के घटै , तीरन माची मार
छूछे[६] भये तुनीर सब , परयैा फौज कैा भार ॥ १३ ॥

छन्द ।

परयैा भार मारू सुर बाजैं । तीनैां सुभट समर सुभ छाजै ॥
उमड़ि मनैाला हरी जसैाधी । दल में तेग तड़ित सी कैाधी ॥
मार करै रनसिन्धु बिलैारै[७] । तेगनि तमकि ताल सो तैारे ॥
लरयैा उलटि रन पंडित पांडे । झुक झपेटि खंडे ग्ररि चांडे ॥
रुचि सों सार खात ज्यौं मेवा । धाइन कै धरि कंजा नेवा ॥
पाइ दुहुँ के परे न पाछै । पैरै सार धार में ग्राछै[८] ॥

१—मामनि = मामाग्रों के यहां । २—छतारे = छत्रशाल का प्यार का नाम ।
३—हीरा दे = हीरादेवी । ४—भीर = फौज । ५—दारू = बारूद ।
६—छूछे = रिक्त, खाली । ७—विलैारै = हिलावै । ८—ग्राछे = भले ।

स्वामि हेत तिल तिल तन टूटे । भानु हेत सुरपुर सुख लूटे ॥
फौजें पिली रुकत नहि जानी । सुरपुर कौं उमगी ठकुरानी ॥

दोहा ।

सब ठकुरानिन उमगि कै, कीन्हौ अगिन प्रवेस ॥
देखत साहस थकि रह्यो, देविन सहित दिनेस ॥ १४ ॥

छन्द ।

लख्यौ सुजानराइ ठिक ठायौ । सबही कौ विक्रम मन भायौ ॥
यह संसार तुच्छ करि जानौ । राखौ रजपूती कौ बानौ ॥
तन कौ कियौ न लोभ न जी कौ । धरयौ लिलाट राज कौ टीकौ ॥
सब के संग अमरपुर लीनौ । काढ़ि कटार पेट में दीनौ ॥
मरयौ सुजानराइ कै जायौ । लरयौ अरुन आनन छबि छायौ ॥
ओड़ी अरि अस्त्रनि की घाई । जूझौ मनै मार कै माई ॥
समिटि फौज ह्यांते फिरि आई । जहां खबरि चंपति की पाई ॥
चंपति जहां जुद्धरस भीनै । रोगन[1] आनि सिथिल करि लीनै ॥

दोहा ।

बल धरि धाये खल सबै, खबर ज्यान[2] की पाइ ।
नातर कौ बचतौ कहां, बिचरै चंपति राइ ॥ १५ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे शुभकरन पराजय-बंकाबधबर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
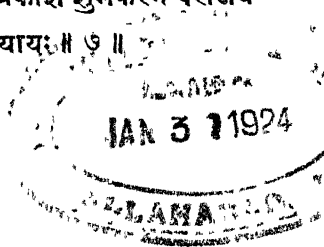
१—रोगन आनि सिथिल करि लीनै = महाराज चंपतराय रोगों से ग्रसित थे और क्लान्त तथा शिथिल होकर निष्पौरुष हो रहे थे । २—ज्यान = निर्बलता ।

आठवाँ अध्याय ।

छन्द ।

चंपतिराइ सुनै दल धाये । छाड़ि ओरछा अंत सिधाये ॥
तीन रोज बीते जटवारे[1] । फौजै फिरे खोज निरधारे ॥
तब चंपति यह मंत्र बिचारयौ । सहरा[2] कौं जैबौ निरधारयौ ॥
सहरा भूप इन्द्रमनि भाषै । हते साह नाली में राखै ॥
जब हजूर चपति पग धारे । तहाँ कैद में भये निहारे ॥
चंपति अरज साह सौं कीन्ही । कैद छुड़ाइ भूप कौ दीन्ही
छुट्यौ इन्द्रमनि देसहिँ आयौ । फेरि राज सहरा कौ पायौ ॥
करी हती इहि भांति निकाई । तातें मति सहरा कौ धाई ॥

दोहा ।

सहरा कौ सूधै भये, चंपति सिथिल सरीर ।
घात ताक पाछै परी, बैरिन की भट भीर ॥ १ ॥

छंद ।

ठिले दलेल दौवा दल पाछे । सोरह सहस सुभट सँग आछे ॥
चंपति संग भीर कछु नाहीं । सँग असवार पचीसक आहीं ॥
सहरा कौं सूधे पग धारे । दिन दिन बढ़ै रोग अति भारे ॥
दौर[3] कोस सोरह की कीनी । उनरि घरिक घोरन दम दीनो ॥
तुरँगनि रातिबु[4] दैन बिचारौ । तौं लगि अरि कौ सुन्यौ नगारौ ॥
नजर परी बैरिन की गोलै[5] । चंपति बैठे तरकस खोलै ॥

१—जटवारा = नगर विशेष । २—सहरा = नगर विशेप ।
३—दौर = धावा । ४—रातिब = दाना, चारा । ५—गोलै = झुंड ।

चढ़्यौ तुरी तरकस कटि मांही । ब्यौंत[1] बान घालिन[2] कौ नांही ॥
तंह आड़ौ[3] इक औघट[4] आयौ । दब करि चंपतिराइ नकायौ ॥

दोहा ।

औघट के नाकत तहां, तन कौ लगी न बार ।
चारौ पुतरी झारिकै, उतरि पर्‍यो इहि पार ॥ २ ॥

छंद ।

पीछै तहां इन्द्रमनि राजा । औघट धर्‍यौ तुरंगम ताजा ॥
गिरौ इन्द्रमनि दिन तौ थोरौ । साधत बन्यौ न औघट घोरौ ॥
मिली फौज बैरिन की बांकी । काढ़ि कृपान इन्द्रमनि हांकी ॥
टूक टूक तन सन्मुख टूट्यौ । बीरलोक कौ आनँद लूट्यो ॥
जब लगि जूझ इन्द्रमनि कीन्हौ । चंपति गांउ दौर करि लीन्हौ ॥
सहरा सहर खबर यह ठाई । साहिबसिंह धधैरै पाई ॥
चंपतिराइ चले इत आये । नाते प्रगट प्रीति के पाये ॥
ऐसे समै कहा मनु धावै । हितू बिना को काकै आवै ॥

दोहा ।

तातै इहां बुलाइ कै, चंपति कौ निरधारि ।
यह बिचारि पठये तहां, तै द्वै सै असवारि ॥ ३ ॥

छंद ।

तँह दौवा[5] सिबराम सिधार्‍यो । अरु गुपाल बारी निरधार्‍यो ॥

१—ब्योंत = अवसर । मौका । २—घालिन = चलाने का ।

३—आड़ो = बीच में । ४—औघट = कुघाट, नाला ।

५—दौवा = बुंदेलखंड के राजाओं मे यह प्रथा है कि राजा को बाल्यावस्था मे जिस धाय ने दूध पिलाया है उसका पुत्र जो राजा के समान वय का होता है उस राजा का दौवा अर्थात् धाय-पुत्र कहाता है । राज्य दर्बार में जाति का विचार न करके इस दौवा का विशेष सम्मान होता है । उसके लिये वेतन, तथा जागीर लगा दी जाती है । ये धाये बहुधा अहीर खवास और राजपूत अदि जातियों की स्त्रियां होती है । राजा अपनी धाय के पति को कक्का कह करि संबोधन करते हैं । दौवा को राजा अपने सहोदर की भांति मानते हैं ।

करिहि कूच तिहि गावैं आये। चंपतिराइ जहां सुन पाये॥
औचक सुनी फौज जब आई। चंपतिराइ कमान चढ़ाई॥
उठि कै हिम्मत हिये बढ़ाई। सेंके[1] विना कमान चढ़ाई॥
उतरे ताहि बहुत दिन बीते। फिरी कमान मनोरथ रीते॥
छत्रसाल तंह बैठे आगै। उर उत्साह जुद्ध कं जागे॥
त्यौंही छत्रसाल की माता। जग में एक पुन्य की त्राता॥
कढ़चौ कटार हाथ में लीन्हौ। हुलसि पतिव्रत में मनु दीन्हौ॥

दोहा।

तहां धंधेरे[2] गांऊ के. जुरे[3] फौज सौं जाइ।
अति अडोल बातैं कही, सब कौ प्रगट सुनाइ॥ ४॥

छंद।

को हौ तुम आवत मन बाढ़ैं। चंपति को हम तजैं न काढ़ैं॥
जौहर पहिल हमारे ह्वैहै। और छांह तब इनकी छैहै॥
सुनि सरदार फौज के बोले। इतै रोस काहे कौ खोले॥
हम उर नाहिँ कपट छल छाये। चंपति चलै लैन हम आये॥
हम इनकौं सहरा लै जैहैं। दुशमन कहूँ खोज नहिँ पैहैं॥
यह बिधि सीतल बात सुनाई। सुनत प्रतीति सबनि कौं आई॥
तहां उतरि उन डेरा कीन्हा। सब के चित्त सुचित करि दीन्हा॥
सहरापुर कछु दिना गमाये[4]। ह्वांतै सीता बरहिँ सुहाये॥

दोहा।

देवालै रघुनाथ कौ, हतो निकट तिहि राउ।
दरसन कों चंपति गये, धरै भगति कौ भाउ॥ ५॥

१—सेंकना = आग दिखा कर गरम करना।

२—धंधेरे = राजपूतों की एक जाति। बुंदेलखंड में धंधेरे, परमार, बुंदेले ये तीन प्रकार के राजपूत परस्पर संबंध और बेटी व्यवहार करते है।

३—जुरे = भिड़े, सम्मुख हुए। ४—गमाये = व्यतीत किये।

छंद ।

देखे उद्दित रूप सुहाये । सीता राम लखन छबि छाये ॥
अरि की फौज रोस रूख पागी । उमड़ि तुरतु सहरा सौं लागी ॥
सोचु बिचार भयौ अति भारी । कछु ठहराउ नहीं निरधारी ॥
एकै कहै कूच करि जैयै । मोरन गांउ बचाई हैयै ॥
करी इंद्रमनि कौ हम नीकी । कहा जान करि ह्वै है फीकी ॥
एकै कहै खबर सुनि लीजै । इनकौ नहीं भरोसौ कीजै ॥
ह्वांते फौज साजि कै धाये । हम सौं कहै लैन हम आये ॥
गयौ मुहीम इंद्रमनि राजा । सूनौ सहर सुनौ सिरताजा ॥

दोहा ।

बन्यौ आइ मरिवो इहां, घर घर माच्यौ धेरु ।
रिपु सौं राइ सुजान कौं, लैन न पायौ बेरु ॥ ६ ॥

छंद ।

लै उसास सिगरे जो बोले । सुनि छत्रसाल बचन तब खोले ॥
इहां बनै मरिवौ तौ नीकौ । जंह रघुनाथ सरन सबही कौ ॥
चंपति व्योंत बुद्धि के कीन्हे । सुनि बिचार सबही के लीन्हे ॥
सब को मूल देह निरधार्‌यौ । असुर मारि भुवभार उतार्‌यौ ॥
रिषिन देह आनंद सौ लीन्हो । तपु करि चित चंचल बस कीन्हो ॥
जनक जजाति देह धरि आये । जश दान करि स्वर्ग सिधाये ॥
सूरन सतिन देह जे पाये । करि करतूति सुजस बगराये ॥

दोहा ।

तातै जँग मैं देह की, रच्छा कीजै आदि ।
सब साधन यातें सधैं, और बात सब बादि ॥ ७ ॥

छंद ।

हम ही देह धर्‌यौ जग माही । करतूती कीन्ही चित चाही ॥
एक बात जु रही है कीवे । बैर सुजानराइ कौ लीवे ॥

जदपि अनित्य देह यह गाई। समयै छूटि एक दिन जाई॥
जौ कहूँ सदरार में छूटै। तौ छत्री सुरपुर सुख लूटै॥
तातैं तनक देह बल आवै। तौ कीजै जोई मन भावै॥
कैहूँ रोग देह तै छूटै। राखौ बांधि समुद्र जौ फूटै॥
कितिक औंछड़े में दल आही। जुरत जुद्ध जमलोकहि जाही
जौ कहूँ नैकु बुद्धि बल पाऊँ। तौ दिल्ली झकझोरि झुलाऊँ॥

दोहा।

जौ मुकाम क्यौंहूं बनै, तौ कीजै उपचार।
असवारी कौं बल बढ़ै, झारौं झुक झुक सार॥ ८॥

छन्द।

जौलों सहरा भई लराई। फतै दलेल दोवा तहँ पाई॥
साहिबराइ बिताव रहोऊ। गढ़ में रहे सकिल[1] कै दोऊ॥
साहस चित्त दुहुन का छूट्यो। गुपित पाप चंपति कौ ऊट्यो॥
तब पाती लिखि गुपित पठाई। दौवा अरु बारी कौ आई॥
तुम विस्वास चँपति कौ कीजौ। जीवदान हमकौं तुम दीजौ॥
चाहत हौं न अरिन की बाही। हमकौं कठिन परी गढ़ माही॥
पहिल फतै हमही पह लीजै। पातसाह सौ मुजरा कीजै॥

दोहा।

जबलौं चंपतिराइ कौं, जियत सुनै सब कोइ।
तबलौं अरि की फौज की, दौरै हम पर होइ॥ ९॥

छंद।

सुनी चिठी दौवा अरु बारी। नीचन नीची बुद्धि बिचारी॥
कही जुरयौ फौजन को नाकौ। मोरनगांव चलौ वह बाकौ॥
इत मुकाम चंपति कौं भावै। सहरावारौ कूच करावै॥

१—सकिल के रहे = भाग कर जा घुसे।

कूच मुकाम बनै नहि दोई। जैसी होनहार सो होई ॥
तहँ इक बुद्धि चित्त में आनी। लालकुंवरि परतिच्छ भवानी ॥
दै दै धन पंडा सब साधे। सुमिरन करि रघुबर अवराधे ॥
पति के रहिबे की ठिक पारी। इतै कूच की करी तयारी ॥
सुनि चंपति अति ही सुख पायौ। गुपित मंत्र काहू न जनायौ ॥

दोहा ।

छत्रसाल कीन्हौ बिदा, तुरत राज तिहि ठांउ ।
हमही आवत तुम चलौ, ज्ञानसाह के गांउ ॥ १० ॥

छन्द ।

छत्रसाल उठि रात सिधारे। ज्ञानसाह के गांउ पधारे ॥
गये बहिन के मिलन जहां ही। आदर भाव प्रीति कछु नाही ॥
बड़ दुख होइ इकतरौ आवै। तीन उपास न बल तन तावै ॥
बहिन देखि कछु बात न बूझी। मिली न आइ कहाधौं सूझी ॥
ह्वै उदास फिरि आये डेरा। भई रसोई कहां कुवेरा[1] ॥
तौलगि ज्ञानसाह घर आये। समाचार सब सुनै सुनाये ॥
तब डेरा दै जिनस पठाई। भई रसोई रात गमाई ॥
समौ परे सब करै रुखाई। बहिन कौन को काकौ भाई ॥

दोहा ।

छत्रसाल कौं करि बिदा, चंपति भये तयार ।
सँग दो सौ ठाढ़े भये, सहरा के असवार ॥ ११ ॥

छंद ।

चंपतिराइ बुद्धि यह कीनी। ठकुराइनि कौ अज्ञा दीनी ॥
मोरनगांउ चला उत बारी। चलै तहां कौ खाट हमारी ॥
पौढ़े एक खाट पर कोई। नख सिख तै पट ओढ़ै सोई ॥

१—कुवेर = अतिकाल, अवेर ।

सँग लीजै सहरा कै बारी । दो सै घोरे फिरे हथ्यारी ॥
फौज टारि मोरन लै जैयो । प्रभु कौं छल सों इहां छपैयो ॥

दोहा ।

एक माइके को तहां, सेवक हनौ हजूर[1] ।
ताहि बुलायौ जानि कै, यातै परै न भूर[2] ॥ १२ ॥

छन्द ।

कही बात तासौ ठकुरानी । तैं प्रतीति को है हम जानी ॥
तातै तोकौं मंत्र सुनायौ । प्रभु के चित्त ब्यौंत यह आयौ ॥
तू चलि पौढि खाट पर आछै । होहूँ चलत संगही पाछै ॥
यह सुनि कै वह भरी न हामी[3] । झुक झहरानो नौनहरामी[4] ॥
पाइन परी जदपि ठकुरानी । स्वामिभगति उर तऊ न आनी ॥
जब अति सोर करत वह जान्यौ । तब कीनौ वाही कौ मानौ ॥

दोहा ।

कूच करै चंपति चले, होनी हिये विचार ।
जिततैं मद्दति चाहिये, तित तैं धाई धार ॥ १३ ॥

छन्द ।

चली फौज सँग सहरा बारी । संग दो सै असवार हथ्यारी[5] ॥
ताकै घात पाप उर आनै । चंपति तिन्हैं सहाइक जानै ॥
सात कोस जौ लौं चलि आये । भये दगैलन[6] के मन भाये ॥
आपुस माझ इशारत[5] कीनो । कर उलछार सैंहथी[7] लीनो ॥
मारे सुभट दुइक उन संगी । चपति पै उमड़े जुर जंगी ॥

१—हजूर = उपस्थित था । २—भूर = चूक, भूल ।
३—हामी न भरी = स्वीकार न किया । ४—नोनहरामी = कृतघ्न ।
५—हथ्यारी = शस्त्रधारी । ६—दगैलन = दग़ाबाज़ों, विश्वासघातियों ।
५—इशारत = इंगित, इशारा । ७—सैंहथी = बर्छी, कटार ।

रोगन चंपतिराइ दबाये । कछू उपाय चले न चलाये ॥
ऐसो समौ लख्यौ ठकुरानी । पतिब्रत मांझ चलायौ पानी ॥
चुटकि तुरग पति के ढिग जाही । धरी बाग इक दौर सिपाही ॥

दोहा ।

बाग छुवन पाई नहीं, चढ़्यौ मरन कौ चाउ ।
कटरा काढ़्यो पेट में, दये घाउ पर घाउ ॥ १४ ॥

छन्द ।

दै दै घाउ मरी ठकुरानी । चंपतिराइ दगा तब जानी ॥
यह संसार तुच्छ निरधारयौ । मारि कटारिन उदर बिदारयौ ॥
चले बिमान बैठि सँग दोऊ । जै बोलत सुरपुर सब कोऊ ॥
धनि चंपति तुम राख्यौ पानी[1] । धनि धनि कालकुंवरि[2] ठकुरानी ॥
धनि चंपति जिन खल दल खंडे । धनि चंपति निज कुल जिन मंडे ॥
धनि चंपति निरबल जिन थापे । धनि चंपति जिन सबल उथापे ॥
धनि चंपति सज्जनमन भाये । धनि चंपति जग जस बगराये ॥
धनि चपति की कठिन कृपानी । धनि चंपति की रुचिर कहानी ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते चंपतिप्रनाशो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

१—पानी रखना = प्रतिष्ठा स्थपित करना, बात रखना, सान रखना ।

२—कालकुंवरि = छत्रसाल की माता का नाम था ।

नवाँ अध्याय ।

दोहा ।

धनि चंपति कै ग्रौतरौ, पंचम श्री छत्रसाल ।
जिनकी अज्ञा सीस धरि, करी कहानी लाल ॥ १ ॥

छंद ।

बालापन तैं बर बुधि लीनी । सकल हथ्यारन पै रुचि कीनी ॥
तुपक[1] तीर अरु सकति[2] कृपानी[3] । छुरी गुर्ज[4] की रीतै जानी ॥

१—तुपक = बंदूक । २—सकति = शक्ति, बर्छी ।

३—कृपानी = कृपाण, तलवार ।

४—गुर्ज = शस्त्रविशेष । यह एक शस्त्र गदा के रूप का होता है और गदा के गोल भाग अर्थात् ऊपर के लट्टू में पतली पतली जंजीरें कुंडों में लगी होती हैं । इन जंजीरों के सिरे पर छोटे छोटे लट्टू लगे रहते हैं और इसे घुमा कर मारने से कई एक प्रहार साथ ही साथ होते हैं । एक ओर तो गदा की चोट और साथ ही साथ, उन लट्टुओं और जंजीरों की चोट पड़ती है । इस शस्त्र का
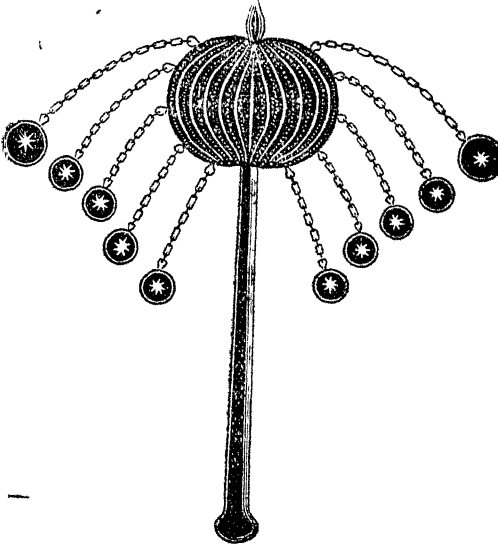
रूप इसी के अनुसार होता है ।

बिद्या बाहुजुद्ध[1] की आई। तर नर बिलगन में अधिकाई॥
असवारी में रंग मचावै। मन के संग तुरंग नचावै॥
चैागानन[2] खेलत छबि छावै। बंटा[3] सब तै अधिक उड़ावै॥
लखन पुरुष लच्छन सब जानै। पच्छो बोलत सगुन बखानै॥
सतकबि कबित सुनत रस पागै। बिलसत मति अरथनि मैं आगै॥
सब सिकार की जानी घातैं[4]। रुचती दान जूझ की बातैं॥

दोहा।

पूरन पुन्य प्रताप तैं, सकल कला अनयास।
बसी आइ छत्रसाल उर, दिन दिन बढ़ै प्रकास॥ २॥

छन्द।

बढ़ै प्रकास बुद्धि के ऐसे। बरनै चकरवतिन[5] के जैसे॥
तात मात की इच्छा पूजी। कीरति बिदित कबिंदन कूजी॥
ग्यारह बरष बहिक्रम बीत्यौ। खेलन आखेटक श्रम जीत्यौ॥
ऐसे समै ग्रैार बिधि ठानी। होनहार गति जात न जानी॥
ग्रैारँगसाह नखतपति जाग्यौ। मेटन हिंदुधरम कौं लाग्या॥
चंपति हिंदुधरम रखवारैा। दिल्लीदल कैा जीतनहारैा॥
तासैा चलै कैान की पेडै। परचो दिलीस बुद्धि बल पैड़ै॥
चंपति जदपि तखत लै दीनैा। तऊ दिलीस उलटि छल कीनैा॥

दोहा।

कीनैा उलटि दिलीस छल, डारि बुद्धि के डैार।
सूबन कैा जितवार[6] पै, काहि पठाऊँ दैार॥ ३॥

१—बाहुजुद्ध = मल्लयुद्ध, कुश्ती।

२—चैागान = पोलो की भाँति का खेल। ३—बंटा = गेंद।

४—घातैं = दाँव। ५—चकरवतिन = चक्रवर्तिन।

६—जितवार = विजयिता, जीतनहारा।

छन्द ।

सुवन कै दल दपट दबावै । ता पर दौर कौन की आवै ॥
तब औरंग बुद्धि उर आनी । फरमाई हीरादे रानी ॥
ज्यौं रन भीषम कौ जसु जागै । अर्जुन दियै सिखंडी आगै ॥
कीन्हीं कथा उमडि इन ऐसी । भीषम और सिखंडी कैसी ॥
जासौ कुल दिल्लीदल हारयौ । सो चंपति सुरलोक सिधारयो ॥
सार पहिर रवि मंडल फारयौ । जीत्यो सुरग जीति दिसि चारयौ ॥
गयौ सूर सुरपति के लोकै । फूटौ समुद कौन अब रोकै ॥
उमरे फिरत जुद्ध कौ गाढ़े । चहूँ ओर बैरी बल बाढ़े ॥

दोहा ।

चहूँ ओर बैरी बढ़े, छल बल ताकत घात ।
सूनौ वन मृगराज कौ, दुरद[1] उखारत खात ॥ ४ ॥

छंद ।

ऐसी दसा होन जब लागी । चंपति चमू सोक सौ पागी ॥
सहरा में छत्रसाल प्रबीनै । उतै पिता की अग्या लीनै ॥
सुनै पिता सुर लोक सिधारे । त्यौं माता पतिव्रत पन पारे ॥
कानन परत चाह अनचाही । हिरदै सोक सिंधु बेथाही ॥
दुख की लहर लहर पर आई । हियौ हिलौर दृगन पर छाई ॥
गये पिता कत छाड़ि अकेलै । अब हम राज कौन के खेलै ॥
माता बिन को लाड़ लड़ैहै । को उठि भोर कलेऊ[2] दैहै ॥
मात पिता दीन्है सुख जैसे । ते बीते सब सपनै कैसे ॥

दोहा ।

सुपन मनोरथ से भये, या जुग के व्यवहार ।
प्रगट पैखियत सांच से, बीतत लगै न बार ॥ ५ ॥

१—दुरद = हाथी । २—कलेऊ = प्रातः काल का भोजन ।

छंद।

बीते[1] प्रगट प्रियव्रत गाये। जिन स्थलीक समुद्र बनाये॥
बीते पृथु जिन पुहुमि सिंगारी। पर्बत पांति धनुष सैां टारी॥
नल हरिचंद सत्त रखवारे। गये बीत जिन सुजस बगारे॥
बीते जनक विदेह सयाने। जिन सुख दुःख एक करि जानै॥
अर्जुन भीम प्रतिज्ञा जीती। अक्षौहिनी अठारह बीती॥
बीते जिते देह धरि आये। जग जस रहे धर्म तै छाये॥
ज्यों छत्रसाल बुद्धि उर आनी। तज्यौ सोक हिम्मत ठिक ठानी॥
न्हाइ पिता कैां अंजलि दीन्ही। कंधन छत्र धरम धुर लीन्ही॥

दोहा।

छत्र धरम धुर ले उठ्यो, महाबीर छत्रसाल।
रीति बड़ेन की बिपति में, धीरज धरत बिसाल॥ ६॥

छंद।

धरि धीरज छत्र साल सिधारे। हांक सुनै अंगद अनियारे॥
चले छाड़ि सहरा कैा ऐसे। पंडब तज्यौ जतु गृह जैसे॥
हिम्मत बल दल दुख के मेटे। अंगद जाइ देवगढ़[2] भेटे॥
कुसल पिता की बूझो ज्यौंही। दृगनि नीर भरि आये त्यौंही॥
समाचार बीते इत जैसे। अंगद जान लिये सब तैसे॥
बुद्धि बाहुबल कछू न ओारे। चकित चित्त चारैां दिसि दैारे॥

१—बीते = भूत हुए।

२—देवगढ़ = ललितपुर प्रांत के जालौन नामक स्टेशन के निकट वेतवा तट पर अत्यंत प्राचीन स्थान है। यह भगवान षड़ानन की जन्मभूमि है। यहाँ का कोट सघन वन से ढँका है। यहाँ गुप्तवंशीय राजाओं के बनवाये मंदिर देखने योग्य हैं।

बैरी बढ़े करत मन भाये । बल बौसाउ चले न चलाये ॥
जरतु हियो निज तेजनि ऐसे । बिषधर बँध्यो मंत्रबस जैसे ॥

दोहा ।

ज्यौं बिषधर मंत्रन बँध्यौ, त्यौं अंगद अनखाय ।
लेत उसासैं क्रोधबस, चलत न बल व्यौसाय ॥ ७ ॥

छन्द ।

त्यौं छत्रसाल धीरधर बोले । सरस बिचार मंत्र के खोले ॥
अंगद कौ यह बात सुनाई । राजनीति कछु जामें पाई ॥
साहस तजि उर आलस मांड़ै । भाग भरोसे उद्यम छाड़ै ॥
ताहि तजै जग संपति ऐसे । तरुनी तजै वृद्ध पति जैसे ॥
तातैं अब उद्यम उर आनौ । दूर देस को करौ पयानो ॥
भूषन कछुक माई के पाये । राखि दैलवारे[1] हम आये ॥
ते सब मांगि खरच कौ लीजे । दूर देस कहि उद्यम कीजै ॥
यह बिचार अंगद सुनि लीन्हौ । तुरत बिदा छत्रसालहि कीन्हौ ॥

दोहा ।

भये देवगढ़ तें बिदा, छत्रसाल सिरताज ।
पहुँचि दैलवारैं कियौ, पूरन मन कौ काज ॥ ८ ॥

छन्द ।

त्यौंही लगन व्याह की आई । पहिलही तें ह्वै रही सगाई ॥
जै पवार कुलवार कुरी के । उद्दित अगिनबंस के टीके ॥
तिहि कुल देवकुंवरि छबि छाई । लै अवतार रुकमिनी आई ॥
कुल पवित्र भूषित भौ ऐसे । दीपक दीपसिखा तें जैसे ॥
दूलह छत्रसाल तिह पाये । करि विवाह कीनै मनभाये ॥
रूप सील पतिव्रत सरसानी । भई भूप की जेठी रानी ॥

१—देलवारा = स्थान विशेष ।

ब्याहि बनी[1] छत्रसाल सिधारे। विसद ब्योत उद्यम के डारे॥
प्रथम बुद्धि ऐसी उर आनी। भेंट भान प्रोहित सौं ठानी॥

दोहा।

भेंट करी इन भान सौं, अपनै प्रोहित जानि।
भान मिले जजमान कौ, राज गरब उर आनि॥ ९॥

छन्द।

प्रोहित लख्यो राज मद छाक्यौ। तब छत्रसाल आपु तन ताक्यौ॥
जिन चंपति सूबा बिचलाये। तिनके पुत्र कहां हम आये॥
तातें और ब्यौत चितु लीजै। बड़े ठौर कढ़ि उद्यम कीजै॥
त्यौंही पातसाह फरमाये। नृपमनि जे जयसिंह कहाये॥
कूरम कुल उद्दित जग गाये। सूबा ह्वै दच्छिन तैं धाये॥
चढ़ी जोर कूरम की फौजै। बढ़ी मनौ दरियाउ की मौजै॥
ते विलोक छत्रसाल सिहाने। प्रगट करन बिक्रम उर आने॥
मिले जाइ जयसिंह नृपालै। उनै हित सौं चाह्यो छत्रसालै॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते जयसिंह-
संमेलनं नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

१—बनी—वधू = दुलहिन।

दसवां अध्याय ।

दोहा ।

मिलि कै नृप जयसिंह सौं, अंगद लिये बुलाइ ।
मनसिब भयौ दुहूनि कौ, रहे संग सुख पाइ ॥ १ ॥

छन्द ।

रहे संग कूरम के पेसे । नृप बिराट के पंडव जैसे ॥
यद्यपि मनसम मनसिब नाहीं । सब तैं उमगि अधिक उर माहीं ॥
जहां जूझ के बजे नगारे । तहां उमगि उर लरैं छतारे ॥
सनमुख धसै बीररस पागे । घालै घाउ सबहिं तै आगै ॥
अरुन रंग आनन छवि छावै । अरि के अस्त्र गुविंद बचावै ॥
जहां गढ़न सौं होइ लराई । तहां करैं सब तैं अधिकाई ॥
करै मोरचा सब तैं ऊंचै । जहां ओर के मन न पहूँचै ॥
गिरै गाज से तहँ मतवारे । राखि लेहिं तहँ राखन हारे ।

दोहा ।

या विध नृप जयसिंह के, रहे संग छत्रसाल ।
त्यौं फरमान दिलीस कौ ; आइ गयो ततकाल ॥ २ ॥

छन्द ।

त्यौं फरमान साह कौ आयौ । बली बहादुरखां फरमायौ ॥
लिखी मुहीम देवगढ़ जैयै । बिकट मवास[1] जेर कर पैयै ॥
सुनि फरमान चढ़ाई भौंहैं । पिल्यौ नवाब देवगढ़ सौहैं ॥
नृप मद्दत छत्रसाल पठाये । कोका[2] की ताबीन[3] लगाये ॥
कोका संग चले सुख पाये । ये बिचार चित में ठहराये ॥

---

१ मवास = जागीर ।   २ कोका = धायपुत्र को कहते हैं ।
३ ताबीन = मातहती, सेवा, अनुचरता ।

जबहिं साह दच्छिन तें धाये। चंपतिराइ हजूर बुलाये ॥
औरँग कलह तखन हितु कांध्यै। दारा घाट धै लपुर बाँध्यौ ॥
तहां हरौली[1] चंपति कीन्हीं। चामिल उतरि फतै लै दीन्हीं ॥

दोहा।

दुदस हजारी कौ, तहां, मनसिब दियौ दिलीस।
येरछ कौंच कनार कुल, अरु पाई बखसीस ॥ ३ ॥

छन्द।

ये नवाब सब जानत आहीं। इनसौं कछु कहिबे की नाहीं ॥
इन चंपति सौं भाइप[2] मानी। बदली पाग जगत में जानी ॥
इनकौ सग भलो है तातै। करिहै भली पुरानै नातै ॥
यह बिचार कोका सँग धाये। चलि दर कूच देवगढ़ आये ॥
निकट जाइ जब बजे नगारे। उमड़े उतहिं देवगढ़वारे ॥
सत्तर सहस सुभट रन बांके। रोके आइ गिरिन के नाके ॥
लागी लाग अरावै छूटे। जे हरौल तिनके मन छूटे ॥
हटत हरौल भयौ भय भारौ। पैठ्यौ चंचल चुटक[3] छतारौ ॥

दोहा।

सिंहनाद गल गर्जि कै, भंज उठ्यौ भट भीर।
छता बीररस उमग मैं, गनै न गोली तीर ॥ ४ ॥

छन्द।

गनै न गोली तीर छतारौ। देखत देव अचंभौ भारौ ॥
एक बीर सहसन पर धावै। हाथ और को उठन न पावै ॥
संगिन मारि करी घनघानी। समर भूमि स्रोनित सौ सानी ॥
नची छता की जोर कृपानी। किलकी[4] उमगि कालिका रानी ॥
सँग के सुभट युद्ध में जूटे। भीर परै तिन सौं सँग छूटे ॥

---

१ हरौली = सेनानायकपन। २ भाइप = भाईपन।
३—चुटक = चटक, प्रवीण। ४—किलकी = हुंकारी।

फारत फौज छता अवलोक्यो । उदभट रुकै कौन को रोक्यो ॥
उमगि भरै अरि को दल भानौ । घाइ लगत तन तनक न जानौ ॥
घाइ खाइ छत्ता रन जीत्यौ । अरि पद प्रलै काल सौं बीत्या ॥

दोहा ।

बिरझानौ चंपति बली, समर भयानक ठान ।
भभरि भीर अरि की भगी, काल रुद्र उर आन ॥ ५ ॥

छन्द ।

बैरी भगे मानि भय भारी । परे बिडर[1] ज्यो बाघ बिडारी ॥
बिडरत[2] अरि के कटक निहारे । तब नवाब के बजे नगारे ॥
पाई फतै परे तह डेरा । तौ लगि भई साझ की बेरा ॥
सब कौ मिले सबनि के संगी । बिछुरौ एक छता रनरंगी ॥
रनमंडल[3] संगिन सब हेरयौ । चकित चित्त चारिहुँ दिसि फेरयौ ॥
निस के पहर कलप से बीतै । मिल्यौ न बीर मनोरथ रीतै ॥
बूझत खबर फिरै चहुं फेरी । ताकन दिसा दाहिनी डेरी ॥
भूख प्यास की सुरत बिसारै । जीतै जुद्ध तऊ मन हारै ॥

दोहा ।

मन हारै ढूँढत फिरै, कहां छनारे बीर ।
मिलै आजु तौ है भली, नातर तजौं शरीर ॥ ६ ॥

छन्द ।

मति[4] सरीर तजिबे की कीन्ही । दीनदयाल बुद्धि उर दीन्ही ॥
एक बेर फिरि फेरी दीजै । चलौ चाह[5] लसगर की लीजै ॥
चाह लैन लसगर की धाये । पैकन तहँ ये बचन सुनाये ॥
हम बीसक असवार हथ्यारी । संग फौज के करी तयारी ॥
खेतु छाड़ि बैरी जब भागे । बहस बढ़ै हम पीछै लागे ॥

१—बिडर = भगोड़ । २—बिडरत = भागते हुए । ३—रनमंडल = रणभूमि ।
४—मति = विचार । ५—चाह = खोज, समाचार ।

गये दूर दल तैं कढ़ि ज्यौंही । सूरज चल्यौ अस्त कौं त्यौंही ॥
तब बातैं मुरके सब भाई । सूरज सनमुख दिसा बताई ॥
तहाँ एक कौतुक हम देख्यौ । जाकौ अचिरज जात न लेख्यौ ॥

दोहा।

जीन कस्यौ इक दूर तैं, देख्यौ तहाँ तुरंग ।
ताके धरिबे को हियै, सब कै बढ़ी उमंग ॥ ७ ॥

छंद ।

बढ़ि उमंग धरिबे कौ धाये । जब नजीक[1] खेनक पर आये ॥
घाइल तहाँ तक्यौ रस भीनै । कढ़ी कृपान हाथ में लीनै ॥
ताकी छिनक मूरछा जागै । छिनक जोगनिद्रा सो लागै ॥
करै तुरी[2] ताकी रखवारी । ढिग न जान पावै मसहारी ॥
पूछ उठाइ चौर[3] से टारै[4] । जो ढिग आवै ताहि बिडारै ॥
वाहि धरन धाये बहुतेरे । पहुँचे निकट दाहिने डेरे ॥
जब तुरंग वह सनमुख धायौ । भज्यौ बिडर सो जीवन आयौ ॥
यह सुनि सुभट छमा के धाये । बिछुरै मनौ प्रान फिरि आये ॥

दोहा।

तौ लगि उदयाचल चढ़्यो, सूरज सिंदुर अंग ।
त्यौंही दौरी दूर लौं, सब की नजर अभग ॥ ८ ॥

छंद ।

सब की नजर दूर लौं दौरी । चीन्हो तुरी तबै सब औरी ॥
देख्यौ तहाँ तुरी बिरझानौ । स्वामिधर्म कौ बाँधे बानौ ॥
इन तुरंग की करी बड़ाई । नीकी तुमही सौं बनि आई ॥
राति अकेले चौकी दीन्ही । हमतै अधिक भक्ति तुम कीन्ही ॥
जब तुरंग इहि भाँति लड़ायौ[5] । संगी जान रोस बिसरायौ ॥

१—नजीक = नज़दीक, निकट । २—तुरी = घोड़ा । ३—चौर = चँवर ।
४—टारै = हिलावै । ५—लड़ायो = फुसलाया गया ।

निकट जाइ प्रभु कौं उन देख्यौ । जीवन जनम सुफल करि लेख्यौ ॥
मुजरा करि सबही सिर नायौ । चेतन देखि हियै सुख पायौ ॥
जल मँगाइ प्रभु कौ मुख धोयौ । फतै सुनाइ समर श्रम खोयौ ॥

दोहा ।

करी काइजा[1] तुरग की, सीच्यौ बदन बनाइ ।
डेरा ल्याये खेत तै, प्रभु कौ पान खवाइ ॥ ९ ॥

छंद ।

कोतल[2] भयौ तुरी संग आयौ । जगत बिदित जाकौ जस गायौ ॥
बाँधे घाइ कीर्त्ति जग जागी । दल में चाह चलन यह लागी ॥
सुनी नवाब चाह यह तैसी । आदि अंत तें बीती जैसी ॥
करी तुरी की बड़ी बड़ाई । ऐसा करत भले जे भाई ॥
तातै ताकौ नाम नबीनौ । प्रगटि भले भाई कहि दीनौ ॥
जिन छत्रसाल करी घन घाई । तिनकी कछु चरचा न चलाई ॥
रीझन तैसी सब बिसराई । बाँकनि अपनी फतै लिखाई ॥
सुनत फतूह साह सुख पायौ । बढ़ि नवाब कौ मनसिब आयौ ॥

दोहा ।

मनसिब बढ़्यौ नवाब कौ, दियौ साह सुख पाइ ।
छत्रसाल के भुजन की, को न कमाई खाइ ॥ १० ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते देवगढ़जीति वर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

१—काइजा करना = घोड़े को लगाम चढ़ा कर उसका दूसरा छोर खींचकर उसकी पूँछ की जड़ में बाँध देना ।

२—कोतल घोड़ा वह कहाता है जिस पर जीन आदि तो कसी हो परंतु कोई सवार न हो और जो धीरे धीरे चलाया जाता है । इसे कोतल चलना कहते हैं ।

ग्यारहवाँ अध्याय ।

छंद ।

छत्रसाल पंचम रन कीन्हौ । जैतपत्र कौ कहि लै दीन्हौ ॥
आइ मिले सब बिकट मवासी । चुक्यौ[1] अमल ज्यौं रैयत खासी ॥
फिरि नवाब दच्छिन कौं धाये । छत्रसाल तिन संग सिधाये ॥
जद्यपि बिक्रम प्रगट जनायौ । फल नवाब तै कछू न पायौ ॥
तन मन भयौ अनख अधिकारौ । तुरकन तै कब बन्यो हमारौ ॥
पिता हमारे सूबा डाँडे । तुरकन पर अजमाये खाँड़े ॥
करी पातसाहन सौ ऐड़े । परयौ रह्यौ मुगलन के पैंड़े ॥
ऐड़[2] बुंदेलखंड की राषी । चंपति कीर्ति जगत मख भाषी ॥

दोहा ।

तिन चंपति के नंद हम, सीस नवावैं काहि ।
हम भूले सेयौ वृथा, हितू जानिकै वाहि ॥ १ ॥

छंद ।

हितू जानि सेयौ अविवेकी । तातै कहौ होइ क्यौं नेकी ॥
ताकौ हम वैसौ फल पायौ । याके संग कसालौ[3] खायौ ॥
हम तौ छत्रधर्म प्रतिपाल्यौ । रीझ न याकौ माथौ हाल्यौ ॥
मूरख के आगै गुन गायौ । भैसा बीन बजाइ रिझायौ ॥
बृथा कमल थल माह लगायौ । ऊसर में पानी बरसायौ ॥
खर के अंग सुगंध चढ़ायौ । बायस कौ घनसार[4] चुनायौ ॥
बधिर कान में मंत्र सुनायौ । सूरदास कौं चित्र दिखायौ ॥
कुलरा[5] करिवे कौं घन टेयै[6] । जो अविवेकी साहिब[7] सेयै ॥

दोहा ।

अविवेकी कौं सेइ कै, को न हियै पछिताइ ।
बीजा बवै बबूर के, कहा दाख फल खाइ ॥ २ ॥

१—चुक्यौ = पूरा प्राप्त हुआ । २—ऐंड़ = मान । ३—कसालो = कष्ट
४—घनसार = कपूर । ५—कुलरा = कुल्हाड़ी । ६—टेयै = घिसियै ।
७—साहिब = स्वामी ।

छन्द ।

हिंदू तुरक दीन द्वै गाये। तिनसौं वैर सदा चलि आये ॥
लेख्यौ सुर असुरन कौं जैसौ। केहरि करिन बखान्यौ तैसो ॥
जबतै साह तख्त पर बैठे। तबतै हिंदुन सौं उर ऐठे ॥
महँगे कर तीरथनि लगाये। बेद देवाले निदर ढहाये ॥
घर घर बाँधि जंजिया लीनै। अपनै मन भाये सब कीनै ॥
सब रजपूत सील नित नावै। ऐड करै नित पैदल धावै ॥
ऐड़ एक सिवराज[1] निबाही। करै आपनै चित की चाही ॥
आठ पातसाही झुकझोरै। सूबनि बाँधि डाँड़[2] लै छोरै ॥

दोहा।

ऐसै गुन सिवराज के, बसे चित्त में आइ।
मिलिवोई मन में धरयो, मनसिब तज्यौ बनाइ ॥ ३ ॥

छन्द ।

इतहि पातिसाही सब झूमैं। उतहि सिवा के दल में घूमै ॥
इतकौ उतहि जान नहिँ पावै। जो निकसै सो सीस गँवावै ॥
दुहु दिसि होत खरी हुसियारी। चौकिन निस दिन होत तयारी ॥
तहाँ जान छत्रसाल बिचारयो। ध्यान सिकार खेल कौ डारयो ॥
तीछन अस्त्र मृगन पर बाहैं। बन पहार दच्छिन के गाहैं ॥
सुभट संग पटरानी लीन्ही। दुरगम गिरिन बसेरे कीन्हो ॥
भोर चलै सूरज दै बाये। दच्छिन दैहि अस्तगिरि आये ॥
निस में पीठि ओर धुव चाहै। बुधि बल सब कौ जात निबाहै ॥

दोहा।

निसि में नक्षत्रनि चलै, दिन में भानु बिचारि।
लाग[3] दैहि सब साथ कौ, रोज मृगनि कौं मारि ॥ ४ ॥

१—सिवराज = शिवाजी। २—डाँड़ = दंड।

३—लाग = भोजन की सामिग्री।

छन्द ।

घाटी नकी गिरिन की ठाढ़ी। देखी तहाँ भीमरा[1] बाढ़ी ॥
तरे बांधि काठन के भेरा[2]। परे पार के[3] बन में डेरा ॥
बन ही बन घाटी सब हेरी[4]। चौकी रही दाहिनी डेरी ॥
कृष्णा बढी देखकै त्योंही। उतरे पार भीमरा ज्योंही ॥
उतरि पार सिवराज निहारे। सबकै भये अचभे भारे ॥
तंह सिवराज सील अति बाढ़े। देखत भये दूर तै ठाढ़े ॥
कुसल बूझि ढिग ही बैठारे। कैसे पहुँचे बीर छतारे ॥
कही किसा[5] अपनी सब जैसी। चितु दै सुनी सिवा सब तैसी ॥

दोहा ।

सिवा किसा सुनिकै कही, तुम छत्री सिरताज ।
जीत आपनी भूम कौ, करौ देश कौ राज ॥ ५ ॥

छन्द ।

करौ देश कौ राज छतारै। हम तुमतैं कबहूं नहिं न्यारै ॥
दौरि देस मुगलन के मारौ। दबटि दिली के दल संहारौ ॥
तुरकन की परतीत न मानौ। तुम केहरि तुरकन गज जानौ ॥
तुरकन में न विवेक विलोक्यौ। मिलन[6] गये उनकौ उन रोक्यौ ॥
हमकौ भई सहाइ भवानी। भय नहिं मुगलन की मन मानी ॥
छल बल निकसि देश में आये। अब हम पै उमराइ पठाये ॥
हम तुरकनि पर कसी कृपानी। मारि करैंगे कीचक घानी ॥
तुमहू जाइ देस दल जोरौ। तुरक मारि तरवारनि तोरौ ॥

दोहा ।

राखि हिये ब्रजनाथ कौ, हाथ लेउ करवार ।
ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार ॥६॥

१—भीमरा = भीमा नदी । २—भेरा = बेड़ा । ३—के = करके ।
४—हेरी = देखी । ५—किसा = क़िस्सा = कथा, वृत्तान्त ।
६—जान पड़ता है कि जब महाराज छत्रसाल शिवा जी से मिलने गये थे, वह वह समय था जब शिवा जी दिल्ली से औरंगजेब के षड्यंत्र से निकल कर दक्षिण पहुंच चुके थे ।

छत्रनि की यह वृत्त बनाई। सदा तेग की खाइ कमाई॥
गाइ बेद विप्रन प्रतिपाले। घाउ एड़धारिन[1] पै घाले[2]॥
तेगधार में जै तन छूटै। तै रवि भेद मुकत सुख लूटै॥
जैतपत्र जै रन में पावै। तै पुहुमी के नाथ कहावै॥
तुम है महावीर मरदानै। करिहे भूमि भोग हम जाने॥
जै इतही तुमकैं हम राखैं। तै सब सुजस हमारे भाखैं॥
तातै जाइ मुगल दल मारै। सुनिये श्रवननि सुजस तिहारे॥
यह कहि तेग मँगाइ बँधाई। बीर बदन दूनी दुति आई॥

दोहा।

आदर सो कीन्हें बिदा, सिवा भूप सुख पाइ।
मिली मनै उर उमग में, भूमि भावती आइ॥७॥

छन्द।

मानहु भूमि भावती पाई। दृढ़ मसलहत[3] यहै ठहराई॥
साहस सिद्धि धरै मन माँही। फेरि भीमरा कृष्णा गाही[4]॥
दच्छिन में सूबनि कै भेला। तहाँ सुनै सुभकरन बुँदेला॥
जिन लोहे लहरात मझाये[5]। तीन खून तिन माफ कराये॥
तिनसैा इन मिलिवै ठिक ठानै। हितू अनहितू चाहत जानै॥
इन अपनी जब खबर सुनाई। तब सुभसाहम[6] नै निधि पाई॥
मिले दैारि अति आदर कीनै। सबतै सिरै बैठका दीनै॥
दिन दिन दिलजोई[7] करि राखै। हित सैा बचन अमृत से भाखै।

दोहा।

कछुक द्यौस सुभसाह के, पास रहे छत्रसाल।
जब उचाट देखे हियै, तब जान्यौ उन हाल॥८॥

१—ऐड़धारिन = ऐंठवाले विरोधियों पर। २—घाले = चलावे।
३—मसलहत = मनसूबा, विचार। ४—गाही = पार की।
५—मझाये = पार किये। ६—सुभसाहम = शुभकरण।
७—दिलजोई = खातिर, ढाढ़स।

छन्द ।

जानि हाल निज पास बुलाये । दिलजोई के बचन सुनाये ॥
जो कहियै तौ अरज लिखावै । जाके सुनत साह सुख पावै ॥
चतुर उकील अरज लै जैहै । फेरि साह मनसिब लिखि दैहै ॥
अरु जौ हमै इहाँ सगु दीजै । तौ घर ही ठकुराइस[1] कीजै ॥
यह सुनि छत्रसाल जो बोले । साहस सिद्धि खजाना खोले ॥
हम रुचि सौ मनसिब लै देखे । कछु दिन तुरक हितू करि लेखे ॥
सेवा हू अपने पै नाहो । हम न पतैहैं[2] इनकी छाही ॥
जो घर ही ठकुराइस कीजै । तौ कैसे जग में जसु लीजै ॥

दोहा ।

तातें अब दिल्लीस के, दीरघ दलनि बिलोइ[3] ।
अपनौ उद्दिम[4] ठानवी, होनी होइ सु होइ ॥९॥

छन्द ।

यह बिचार अपनी कहि दीन्हौ । सुनि सुभसाह अचंभौ कीन्हौ ॥
कलह पातसाहन सौ काँधै । ऐसौ मौरु और को बाँधै ॥
हिम्मत हिये धरी उन ऐसी । करिहै वहै कहत है जैसी ॥
तातै बिदा इन्हैं सब कीजै । इनको देखि प्रतिज्ञा लीजै ॥
तौ लगि चाह चली ठिकठाई । सो राजन के घर घर आई ॥
ठौर ठौर के गिरे दिवाले । सुनत हिये हिन्दुन के हाले ॥
पातसाह फरमान पठायो । हुकुम फिदाईखाँ कौ आयो ॥

दोहा ।

नगर ओड़छे में सुनै, हिन्दू धरै गुमान ।
ते नित पत्थर पूजि कै, फैलावत कुफरान[5] ॥१०॥

१—ठकुराइस = हुकूमत, प्रभुत्व । २—पतैहैं = विश्वास करेंगे ।
३—बिलोइ = बिचला कर, हिला कर । ४—उद्दिम = पुरुषार्थ ।
५—कुफरान = काफिरपन, अविश्वास ।

छन्द ।

ऊँची धुजा देवालन राजै । घंटा संख झालरै बाजै ॥
छापै देत तिलक दै ठाढ़े । माला धरै रहत मन बाढ़े ॥
ऐसा हुकुम सरे[१] का नाही । क्यों ऐ करत चित्त की चाही ॥
जौ कहुं कान संख धुनि आवै । मुसलमान तौ भिस्त[२] न पावै ॥
सीसौ औटि[३] कान जौ नावै[४] । तौ दोजख तैं खुदा बचावै ॥
तातैं ढाहि[५] देवालै दीजै । तिनके ठौर मसीदैं[६] दीजै ॥
मुलना[७] तहाँ निवाज गुदारैं[८] । बाँग देहि नित सांझ सकारैं[९] ॥
न्याउ चुकावै फाजिल काजी । जाते रहे गुसाईं[१०] राजी ॥

दोहा ।

सुनत कान फरमान यह, कही फिदाई खान ।
हुकुम चलाऊँ साह कौ, मेटि कुल्ल कुफरान ॥११॥

छन्द ।

ढाहि देवालय कुफर मिटाऊँ । पातसाह कौ हुकुम चलाऊँ ॥
जो कहुँ बीच बुँदेला आवै । तौ हमसों वह फतै न पावै ॥
जौ मानी मन सूबनि मौजै । जोरन लगे ग्वालियर फौजै ॥
सहस अठारह तुरी पलानै[११] । धूमघाट पर धुज फहरानै ॥
यह सुनि महाबीर रस छायौ । बान बाँधि धुरमंगद धायौ ॥
परयौ जाई डेरन पर ऐसै । मत्त करिन पर केहरि जैसै ॥
सांगनि मारि फौज बिचलाई । पर फतूह धुरमंगद पाई ॥

१—सरे—शुद्ध रूप अर्बी—शरअ = मुसलमानी धर्म्मशास्त्र ।
२—भिस्त—शुद्ध रूप विहिश्त = स्वर्ग । ३—औटि = पिघला कर ।
४—नावै = डालै । ५—ढाहि = गिरा । ६—मसीदैं = मसजिदें ।
७—मुलना = मौलाना, मुल्ला । ८—गुदारैं = पढ़ैं ।
९—सकारैं = प्रातःकाल । १०—गुसाईं = खुदा ।
११—पलानै = सजे ।

दोहा।

भज्यौ फिदाईखां बली, रही कछु न सम्हार।
दियै पाग के पेच उहि, गोपाचल के पार ॥१२॥

छन्द।

खबर सुजानसिंह पर आई। जीते हू दल दहसत खाई ॥
अब की अनी गई ढरि ऐसै। बैर साह के बचियतु कैसै ॥
अब जौ रोस साह उर आवै। तौ हम पै फौजें फरमावै ॥
यह उतपात उठ्यौ रे भाई। भई जुझार सिंह की हाई ॥
तब तौ चंपति भयौ सहाई। गिली[1] भूमि भुजबल उगिलाई ॥
चंपतिराई कहां अब पैयै। कैसे अपनौ बंस बचैयै ॥
साँस अघाई बुँदेला लीन्ही। फिरि फिरि चंपति की सुधि कीन्ही॥
ज्यौं यह फिकिर भूप उर आई। त्यौं हरकारन खबर सुनाई ॥

दोहा।

पंचम चंपतिराई कौ, छत्रसाल बिरझाइ।
करन दूंद देसहिं चल्यौ, मनसिब तज्यौ बनाइ ॥ १३ ॥

छन्द।

जब यह खबर भूप सुनि पाई। बढ़ी उमगि अरु दहसत खाई ॥
जौ तुरकन पर कसी कृपानी। तौ कीनी मेरी मनमानी ॥
जौ मन में कछु खून बिचारै। तौ कृपान हमही पर झारै ॥
तातैं बनत प्रीति उर आनै। खोदि गाड़ियै बैर पुरानै ॥
यह बिचारि तँह पांच पठाये। जँह छत्रसाल सुनै ठिकठाये[2] ॥
पहुंचै जाई पचौर प्रवीनै। छत्रसाल सौ मुजरा कीनै ॥
जथा उचित हित सौं बैठारै। बूझी कुसल कहां पगु धारै ॥
तब पांचन यह अरज सुनाई। फिकिर सुजानसिंह उर आई ॥

१—गिली = निगली हुई। २—ठिकठाये = ठहरे हुए थे।

दोहा।

पातसाह लागे करन, हिन्दुधर्म कौ नासु।
सुधि करि चंपतिराइ की, लई बुँदेला साँसु ॥ १४ ॥

छन्द।

त्यौंही सुनै अरंभ तिहारे। कह्यौ भूप धन बीर छतारे ॥
ऐसी कछुक उमगि उर आई। निधि-अंजन[1] खोजत निधि पाई ॥
हमहिं तिहारे पास पठायौ। कह्यौ भूप यह बचन सुहायौ ॥
जौ कहुं बीर दृगनि भर देखौं। अपने भये काज सब लेखौं ॥
तातै भूपहिं देउ दिखाई। फेरि करौ अपनी मनभाई ॥
मिटिहै फिकिर तिहारे मेटै। ऐसे सुजस और पर भेटै ॥
यह सुनि छत्रसाल तँह आये। नृपति सुजानसिंह जहँ छाये ॥
सुनत नृपति निज निकट बुलाये। मानौ मनबंछित फल पाये ॥

दोहा।

मनबंछित फल से मिले, जब देखे छत्रसाल ॥
मिले उमगि उठि दुरहिं[2] तै, सिंह सुजान नृपाल ॥ १५ ॥

छन्द।

हित सौं सिंह सुजान निहारे। बूझी कुसल निकट बैठारे ॥
कह्यो बंस के छत्र छतारे। तुम तैं ह्वैहैं काज हमारे ॥
जब तैं चंपति करयौ पयानौ। तब तैं परयौ हीन[3] हिंदवानौ[4] ॥
लग्यौ होन तुरकन कौ जोरा। को राखे हिंदुन को तोरा[5] ॥
तुम चंपति के बंस उज्यारे। छत्र धरमधुर थंभनहारे ॥
तुम लीनी हिम्मत हिय ऐसी। आनि फेरिहौ चंपति कैसी ॥

१—निधि-अंजन-ऐसा विश्वास है कि एक प्रकार का सिद्ध अंजन होता है जिसके लगाने से भूमि में गड़ी हुई संपत्ति प्रत्यक्ष देख पड़ने लगती है।

२—दुरहिं = द्वार पर से। ३—हीन = निर्बल।

४—हिंदवानो = हिन्दू जाति। ५—तुरा—शुद्ध रूप तुर्रा है = कलगी।

अब जौ तुम कटि कसौ कृपानी । तौ फिरि चढ़ै हिन्दु मुख पानी ॥
नृपति बचन चितु दै सुनि लीनै । हँसि बोलै छत्रसाल प्रबीनै ॥

दोहा।

महाराज हम हुकुम तैं, बांधत हैं किरवान ।
तौलौ फिकिर न आइहै, जौंलौ घट में प्रान ॥ १६ ॥

छन्द ।

जौलौ घट में प्रान हमारे । तौलौ कैसी फिकिर तिहारे ॥
पै सब किसा आपु की जानी । कहै कौन वो कथा पुरानी ॥
जौ फिरि साह प्रपंच उठावै । तौ लरने घरही में आवै ॥
तातै सावधान हिय ह्वैकै । धरौ भार सो उठिहै लैकै ॥
यह सुनि नृप नीचे दृग आने । फेर बचन बोले ठहराने ॥
चंपतिराई तेग कर लीनी । ओप[1] बुँदेल बंस कौ दीनी ॥
भुजन पातसाही झकझोरी । गई भूमि जुरि जुद्ध बहोरी ॥
उदयाजीत बंस के जाये । हम पै सदा छांह करि आये ॥

दोहा ।

पंचम उदयाजीत के, कुल कौ यहै सुभाउ ।
दलै दौरि दिल्लीस दल, जिमि दुरदन[2] बनराउ ॥ १७ ॥

छन्द ।

तिहि कुल छत्रसाल तुम आये । दई दिखाई नैन सिराये[3] ॥
यौं दृग प्रेम हिये में लैकै । बैठे बीच बिसुंभर दैकै ॥
राखी तेग बिसुंभर आगे । कीन्हो सौंह सांच उर पागे ॥
तब जिनके दिल में छल आवै । लोक कृतघ्नो के तिन पावै ॥

१—ओप = कान्ति, चमक । २—दुरदन = हाथियों का ।
३—सिराये = शीतल हुए ।

अब जो पाप हिये में लैहै। तिनको दंड बिसुंभर दैहै॥
यह कहि प्रीति हिये उमगाई। दिये पान किरवान बधाई॥
दोऊ हाथ माथ पर राखे। पूरन करी काज अभिलाखे॥
हिन्दुधरम जग जाइ चलावौ। दौरि दिलीदल हलनि हलावौ॥

दोहा।

अभै देहु निज बंस कौ, फते लेहु फरमाह।
छत्रसाल तुम पै सदा, करै बिसुंभर छांह॥ १८॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते नृपसुजानसिंह
मिलापो नामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

बारहवाँ अध्याय।

छन्द।

यौं असीस नरपति जब दीन्ही। माथे मानि छतारे लीन्ही॥
वहांतै चले बिदा ह्वै ज्यौंही। उठ्यो फरक दच्छिन दृग त्यौंही॥
चलि नौरंगबादहि[1] आये। पैठत सहर सगुन सुभ पाये॥
देखे तहां बीर बलदाऊ। नज़र मिलत उठि मिले अगाऊ[2]॥
भेटे प्रीति परस्पर लीन्हो। भोजन थार एकही कीन्हो॥
मिलि बैठे तँह दोऊ भाई। राम कृष्ण कैसी छबि छाई॥
छत्रसाल पंचम त्यौं बोले। मंत्र बिचार हिये के खोले॥
दाऊ सब मनसिब हम छांड्यौ। विग्रह हिये साह सैां मांड्यौ॥

दोहा।

तातै अब तुमह्रू चलो, ह्वैहै भलो इलाज।
एक मंत्र ह्वैकै हितू, साधत हैं सब काज॥ १॥

छन्द।

राम कृष्ण भुवभार उतारे। राम लषन मिलि रावन मारे॥
चंपतिराइ सुजान सयानै। एक मंत्र ह्वै अरि दल भानै॥
त्यौं हम तुम मिलि दोऊ भाई। तुरकन पै कीजै घनघाई[3]॥
जुद्ध जीति बसुधा बस कीजै। दै दै दान जगत जस लीजै॥
यह सुनि बलिदिवान[4] अनुरागे। लच्छन कहन बड़िन के लागे॥
बिपत मांह हिम्मत ठिकठानै। बढ़ती भये छमा उर आनै॥
बचन सुदेस[5] सभनि महि भाषै। सुलस[6] जोरबे मैं रुचि राषै॥
जुद्धन जुरै अकेले सैा से। सहज सुभाइ बड़िन के ऐसे॥

१—नौरंगाबाद = आंतरी के निकट नगर विशेष है। २—अगाऊ = आगे से।

३—घनघाई = प्रहार। घन भारी हथौड़े को कहते हैं। अभिप्राय यह है कि उन पर ऐसे ऐसे कठिन प्रहार करें जो घन की चोट के समान हों।

४—बलिदिवान = बलदाऊ। ५—सुदेस = समुचित।

६—सुलस = एक प्रकार का लोहा। यहां शस्त्र से अभिप्राय है।

दोहा ।

तै सुभाव तुम में सबै , छत्रसाल कुलथंभ ।
करन बिचारै और को , एतै बड़े अरंभ[1] ॥ २ ॥

छन्द ।

एतै बड़े अरंभ तिहारे । तुम तै हम ह्वैहै क्यों न्यारे ॥
पै बिचार मन में यह आनौ । फेर अरंभ करो जे जानौ ॥
मानस आप काज कौ दौरै । करता जो रचि राखी औरै ॥
तौ सब काज बृथा ह्वै जाही । होती काके चित की चाही ॥
जानत कौन देहधर ऐसी । प्रापति हानि कौन कौ कैसी ॥
यह करना अपनै कर राखी । सो जग में सबही कौ साखी ॥
ताकी कछू इसारत पैयै । तौ दृढ़ मंत्र यहै ठहरैयै ॥
बलि की कही छता सुनि लीनी । बोले बुद्धि बढ़ाइ प्रवीनी ॥

दोहा ।

चाहत जौ करतार की , कछू इसारत साखि ।
तौ द्वै चिठी उठाइयै , प्रभु के आगै राखि ॥ ३ ॥

छन्द ।

कै समसेर साह सौं बांधै । कै छाड़ौ मनसिब हम कांधै ॥
जौन उठाइ चिठी प्रभु दैहैं । माथै मानि वहै हम लैहैं ॥
वह बिचार कीनौ अनुरागे । चिठी लिखाई धरि प्रभु आगै ॥
तब अजान[2] सौ एक मँगाई । तैग बांधिबे की उठि आई ॥
तब प्रतीत बलदाऊ कीनी । माथै मानि चिठी वह लीनी ॥
कह्यौ धन्य छितिछत्र छतारे । तुम कुलचंद हिंदुगन तारे ॥
अब हमसौं रन रुपै[3] न कोऊ । चलिये एक चित्त मिलि दोऊ ॥
जो दृढ़ मंत्र हिये ठहराये । उतरि नर्मदा देसहिं आये ॥

१—अरंभ = आरंभ । २—अजान = अबोध बालक । ३—रुपै = ठहरेगा ।

दोहा ।

संवत सत्रह सै लिखे, आठ आगरे बीस ।
लगत बरष बाईसई, उमड़ चल्यौ अवनीस ॥ ४ ॥

छन्द ।

गहनौ[1] कठिन ठौर लै राख्यौ । दिल्लीदल जीतन अभिलाख्यौ ॥
कीने सुभट खरच दै ताजे । पांच तुरंग संग कै साजे ॥
प्रथम भले भाई उर आनै । लच्छो मृगछौना मरदानै ॥
और भभूखा दामिन धोरी । जुरै न जोर पौन गति थोरी ॥
ये सब सुभट संग के जानौ । कुंवर नरायनदास बखानौ ॥
गोविंदराइ पँत पुरवारे । सुंदरमनि पमार अनियारे ॥
दलसिंगार राममनि दौवा । मेघराज परिहार अगौवा ॥
धुरमंगद बगसी[2] मरदानौ । खांगरु[3] खरौ किसोरी जानौ ॥

दोहा ।

प्रबल मिश्रदलसाह ज्यौं, त्यौं हरकृष्ण प्रसंस ।
लच्छे राउत राममनि, मानसाह हरिबंस ॥ ५ ॥

छन्द ।

मेघी अरु परदौन दयाले । फानु भाट बगसीसनि[4] पाले ॥
फोजे मियां समर अति सूरौ । लोहलराक सिरोमनि पूरौ ॥
पंबल ढीमर खरगे बारी । मोदी पतै सबै हितकारी ॥
पांच सवार पचीस पियादे । बिरचै बिकट सहज में सादे ॥
चले बिसहटी तै सजि साऊ । बगुदा गये जहां बलदाऊ ॥
बलदाऊ हम करी तैयारी । तुमहूं चलौ करौ असवारी ॥
त्यौं बल कही बिजौरी जैयै । रतनसाह को संग चलैयै ॥
छत्रसाल त्यौं गये बिजौरी[5] । भेटे रतनसाह भर कौरी[6] ॥

१—गहनौ—माता के आभूषण । २—बगसी = शुद्ध रूप बख़्शी है ।
३—खांगरु = खंजार (जाति विशेष) । ४—बगसीसनि पाले = बख़्शीसों का पला हुआ, दान से पला हुआ । ५—बिजौरी = स्थान विशेष, बिजावर के निकट है ।
६—कौरी = गोद, अंक ।

दोहा ।

छत्रसाल बोले सुनौ , रतनसाह सिरमौर ।
भुमियावट उर में धरौ , करौ देस कौ दौर ॥ ६ ॥

छंद ।

दौर देस दिल्ली के जारौ । तमकि तेग तुरकन पर झारौ ॥
हम सेवा करिहैं अनुरागे । लड़िहैं उमगि तिहारे आगे ॥
जुद्ध वृत्ति छत्रिन की गाई । तातै यह मेरे मन आई ॥
अपनौ बर्नधर्म प्रतिपालौ । साहन के दल दौरि उसालौ[१] ॥
जे भुमिया[२] हम में मिलि रैहैं । तेई संग फौज के ह्वैहैं ॥
जे न लागिहैं संग हमारे । दोष न लागै तिनके मारे ॥
जे उमराव चौथ भरि दैहैं । तेई अमल[३] देस को पैहैं ॥
जिन में पेड़ जुद्ध की पावौ । तिनपै उमगि अस्त्र अजमावौ ॥

दोहा ।

तेग छाइहै देस में , देस आइहै हाथ ।
शत्रु भागिहैं मान भय , लोग लागिहैं साथ ॥ ७ ॥

छन्द ।

रतन कही यह क्यों बनि आवै । बिना भीत[४] को चित्र बनावै ॥
धन बल उदभट जो धन जाकै । बिग्रह बनै भरोसौ काकै ॥
को रच्छक कौनै मत दीनौ । को बलवंत सहायक लीनौ ॥
छता कह्यो रच्छक सो जानौ । सोइ बलवंत सहायक मानौ ॥
जो प्रभु तिहु लोक कौ स्वामी । घट घट व्यापै अंतरजामी ॥
सो मति देत नरनि कौं तैसी । होनहार आगै कछु जैसी ॥
जिनकौ जौन वृत्ति प्रभु दीनी । ताही मांह सिद्धि तिन लीनी ॥
आवन हमैं भरोसौ ताकौ । करुना सिंधु बिरद[५] है जाकौ ॥

१—उसालौ = छिन्न भिन्न कर दो । २—भुमिया = भूम्याधिकारी, जिमीदार ।
३—अमल = कर । ४—भीत = दीवाल, स्थल है ।
५—बिरद = कीर्ति, यहां यथार्थ गुणमय नाम से अभिप्राय है ।

दोहा ।

करुनानिधि प्रभु एक है, जातै यह संसार ।
ताकौ सेवन सार है, जग है और असार ॥ ८ ॥

छन्द ।

सो प्रभु है ऐसौ हितकारी । संगहि रहै करै असवारी ॥
सेवक जहां कहूं को धावै । तहां संग ही लाग्यौ आवै ॥
जहां सेवकहिं निद्रा लागै । साहिब तहां संग ही जागै ॥
ग्राह गह्यो हाथी जब हारयो । कमल चढ़ावत ही निरधारयो ॥
गाढ़ परै प्रहलाद बचाये । खंभ फारि नरहरि कढ़ि आये ॥
द्रुपदसुता की लज्जा राखी । वेद पुरान सिमृति[1] सब साखी ॥
बहै सांकरै[2] होत सहाई । अति अदभुत वाकी गति गाई ॥
रीती भरै भरी ढरकावै । जो मन करै तौ फेर भरावै ॥

दोहा ।

जब जैसो चाहै करयौ, तब तैसी मति देइ ।
जो जैसो उद्यम करै, सो तैसो फल लेइ ॥ ९ ॥

छन्द ।

चारि बरन जे जग में आये । सबको प्रभु उद्यम ठहराये ॥
हाथ पाइ उद्यम कौं दीनौ । तातैं उद्यम करत प्रबीनौ ॥
उद्यम तैं संपति घर आवै । उद्यम करै सपूत कहावै ॥
उद्यम करै संग सब लागै । उद्यम तै जग में जसु जागै ।
समुद्र उतरि उद्यम तै जैयै । उद्यम तै परमेश्वर पैयै ॥
जब यह सृष्टि प्रथम उपजाई । तेग वृत्ति क्षत्रिन तब पाई ॥

१—सिमृति = शुद्ध रूप स्मृति है ।   २—सांकरै = विपत्ति में ।

जितनी जाहि बीरता दीनी। तितनी पुहुमि जीति तिहि लीनी ॥
तातै दौर देस कौ कीजै। पुहुमी जीति तेगबल लीजै ॥

दोहा ।

जदपि मंत्र छत्ता कह्यो, वेद पुरान प्रमान।
तदपि रतन मान्यौ नहीं, होनहार बलवान ॥ १० ॥

इति श्री छत्रकाशे लालकविविरचिते रतनसाह-छत्रसाल
संवादो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

तेरहवाँ अध्याय।

—:-○-:—

छन्द।

प्रथम बीरता उमगि बढ़ाई। बर्नधर्म रुचि चित्त चढाई॥
राजनीति की रीति बताई। ईश्वर की ईश्वरता गाई॥
फिरि उद्यम की करी बड़ाई। रतनसाह मन कछु न आई॥
तब मन माह भये पछिताये। रोज अठारह बृथा गमाये॥
त्यौं सोवत सपनै हरि दीनै। समाधान नीकी विधि कीनै॥
अंतरिच्छ बोले बरबानी। छत्रसाल कटि कसै कृपानी॥
त्यौं बसुधा बनिता ह्वै आई। हाथ जोड़ यह अरज जनाई॥
हौं रहिहौं बस भई तिहारे। मन क्रम बचन कहत निरधारे[1]॥

दोहा।

यह सुनिकै ताकी तहाँ, करी निसा छत्रसाल।
छुवत छौर अनिमिष मनौ, भई पूर्व दिसि लाल[2]॥ १॥

छन्द।

भई पूर्व दिसि बदन ललाई। बिहसत कमलमुकुल छबि छाई॥
तिमिर समूह दिसनि तै भागे। बिछुरे मिले कोक अनुरागे॥
उठे जागि छत्रसाल प्रबीनै। तुरत जीन घोरन पै कीनै॥
मुरली मधुरध्वनि तँह बाजी। चली सिपाह संग उठि ताजी॥
ह्वाँतै चलै कूच करि ज्यौंही। मिले आइ बलदाऊ त्यौंही॥
औ डेरा मैं डेरा पारे। डौर बजाइ दुंद के डारे॥
छत्रसाल की खबर सुहाई। बाकीखान बुँदेले पाई॥
आगे लैन दूर तैं आये। महिमानी करि आनंद छाये॥

१—निरधारै = निश्चय करके। २—भई पूर्व दिसि लाल = प्रभात हो गया।

दोहा ।

बाकीखाँ सैा मिलि छता , दई दुंद[1] की नीउ ।
लंक लैन कैा राम ज्यौं , किये मित्र सुग्रीउ ॥ २ ॥

छन्द ।

तहाँ आइ त्यौं मिल्यैा सबेरैा । कुँवरराज रनधीर धँधेरैा ॥
तब सबहिनि मिलि मंत्र बिचार्‌यौ । सब कैा छत्र छता निरधार्‌यौ ॥
तँह सम अंस हुते द्वै साऊ[2] । छत्रसाल पंचम बलदाऊ ॥
बलि दिवान त्यौं परम प्रबीने । सरस बिचार चित्त में लीने ॥
सैा के अंस बराबर कीने । तिन में पाँच जिठाई दीने ॥
सैा में पैतालीसै आये । छत्रसाल ने पचपन पाये ॥
या बिधि अंस[3] दुहुनि ठहराये । उमगे प्रेम परस्पर छाये ॥
छत्रसाल त्यौं परम प्रबीनै । सील सुभाइ सबै बस कीनै ॥

दोहा ।

एक मंत्र ह्वैकै तहाँ , बढ़े परस्पर प्यार ।
काँधे बर बिक्रम सबनि , बाँधे उमगि हथ्यार ॥ ३ ॥

छन्द ।

त्यौं यह खबर सुनत चितचाही । पहुँचे धाइ कदीम[4] सिपाही ॥
तीस अस्वार सैन तँह साजी । उमड़ी तुपक तीन सै ताजी ॥
प्रथम दैार कै तँह इलाज के । जँह सरीक हे कुँवरराज के ॥
गह्यौ[5] धँधेरन दुरग आसरैा । गाँउ गढ़ी कैा दृढ़ दुगासरैा[6] ॥
इतहि बीर छत्रसाल उमंडे । उतहि धँधेरन रनरस मंडे ॥
दुहुँ दिसि तुपक तराभर[7] माची । उदभट भीर बीररस राची ॥
पसर करी छत्रसाल बुँदेला । टूट्यौ गाँउ प्रथम बगमेला[8] ॥
मारि गाँउ मनभायैा कीनैा । पहिलैा बैर बाप कैा लीनैा ॥

१—दुंद = युद्ध । २—साऊ—शाह = शिरोमणि । ३—अंस = भाग । ४—कदीम = प्राचीन । ५—गह्यो धंधेरन दुरग आसरो = धंधेरों ने कोट का आसरा लिया अर्थात् कोट में जा घुसे । ६—दुगासरो = छिपाव । यह शब्द दुगला से जिसके अर्थ बुंदेलखंडी में छिपना है बना है । ७—तराभर = तड़ातड़ । ८—बगमेला = आक्रमण ।

दोहा ।

खेत छाँडि बैरी भगे, गढी गही सकराइ ।
धरमद्वार[1] माँग्यौ तबै, पाये प्रान बराइ ॥ ४ ॥

छन्द ।

तब हितु आइ धँधेरन कीनौ । तुरत व्याह कौ बीरा दीनौ ॥
बीरा लै रतनागर मार्‍यौ । धाकनि काँपि उठी दिसि चार्‍यौ ॥
दौरि बेढ़[2] सिरौंज कौ कीन्हौ । कुंदा के गिरि डेरा दीन्हौ ॥
तहाँ केसरीसिँह धँधेरौ । मिल्यौ आइ करि नेहु घनेरौ ॥
त्यौंही तेज छता के फैले । परी सिरौंज सहर में ऐलै ॥
तँह उमराउ हते जगजानै । महमद हाशिम नाम बखानै ॥
आनंदराइ चौधरी बंका । दीनौ दुहुन जुद्ध कौ डंका ॥
बिकट पठान जुद्ध कौ साजै । धौंसा निकट जुझाऊ बाजै ॥

दोहा ।

धौंसा धुनि सुनि कै छता, दई फौज फरमाइ[3] ।
पाइ रोपि बाँध्यौ उमडि, घाट[4] तोपचिन धाइ ॥ ५ ॥

छन्द ।

प्रबल पठान जुद्धरस छाये । करै बिचार हला कौं धाये ॥
सनमुख बजी बँदूखें ज्यौंही । ये बिचारि चित आये त्यौंही ॥
जदपि पठान सुद्ध पिल जैहैं । गोलिन बृथा अजाये[5] ह्वैहैं ॥
तातैं रहै फौज मन बाढ़ी । सनमुख लाग लगाये ठाढ़ी ॥
हम औघट ह्वै हल्ला कीजै । तेगनि मार फतै कर लीजै ॥
औघट[6] धसे घाट इन छंड्यौ । छत्रसाल लै तुपक[7] उमंड्यौ ॥
तुपकन मारि करे मनभाये । खेत पठान पचासक आये ॥
त्यौं बैरिन दिल दहसत खाई । बिडरी फौज सिरौंजहि आई ॥

१—धरमद्वार मांगना = धर्म की दुहाई देकर गढ़ को खाली करके जीवित निकल जाने के लिये शत्रु से मार्ग माँगने की प्रार्थना करना ।

२—बेढ़ करना = गाय बैल आदि पशु छीन लेना । ३—फरमाइ दई = आज्ञा दी । ४—घाट रोपना = रास्ता रोकना । ५—अजाये होना = मारा जाना । ६—औघट = कुराह । ७—तुपक = बंदूक ।

दोहा ।

बिडरी फौज सिरौंज कौ, दिल में दहसत खाइ ।
चंड[1] तेज छत्रसाल कौ, रह्यौ दिसनि में छाइ ॥ ६ ॥

छन्द ।

छत्रसाल पंचम रन जीत्यौ । तुरकनि पर परलै[2] सौ बीत्यौ ॥
मारि फौज औड़ेरहि[3] आये । त्यौरी त्यौं रन पै उठि धाये ॥
लूटि गांव कीनै मनभाये । पकर पटैल[4] जैत कौ ल्याये ॥
लई लूट घोरी अति चाँडी । उखरी गड़ी न सामा छाँडी ॥
छत्रसाल करुनारस मडे । जैत पटैल डांड बिन छंडे ॥
ह्वांते फिर औड़ेरहि आये । चंड प्रताप चहूं दिसि छाये ॥
महमद हाशिम संका मानी । चपे[5] चौधरी उतर्‌यौ पानी ॥
रहै ससाइ[6] सांस लै दोऊ । बाहर सहर न आवै कोऊ ॥

दोहा ।

त्यौं धामौनी में सुनै, खालिक जाकौ नाउ ।
बैठ्यौ जोर मवास कै, थानै दै हर गांउ ॥ ७ ॥

छन्द ।

सो जीतन छत्रसाल बिचार्‌यौ । गौनौ गांउ दौर करि मार्‌यौ ॥
घेरि पिपरहट में ते कूटे । भगे थनैत तुरंगम लूटे ॥
धौरासागर डेरा पारे । गंजि गरब खालिक के डारे ॥
तहां गौंड़ जोरे बनवासी । मिल्यौ दामजीराइ मवासी ॥
ह्वांतै हनूटूक कौं आये । हनूमान के दरसन पाये ॥
धामौनी सौं लई लराई । भेड़ा मारि पथरिया लाई ॥
लखरौनी बड़िहारन मारी । रहे रामठां जगथरि जारी ॥
गिरिबर मार खेझरा मार्‌यौ । सोखि सुनौदा पल में गार्‌यौ ॥

१—चंड = प्रचंड । २—परलै = प्रलय । ३—औड़ेरी = गांव, राठ के निकट । ४—पटैल = ज़मींदार । ५—चपे = झेंपे, लजाने । ६—ससाइ रहे = भयभीत हो गये ।

दोहा।

रहे सिदगवा गांउ के, बिकट पहारनि जाइ।
धामौनी तैं जोर दल, खालिक पहुंच्यौ धाइ ॥ ८ ॥

छन्द।

धामौनी तै खालिक धाये। डंका आन नजीक बजाये ॥
उमड़ि चल्यौ छत्रसाल बुँदेला। तुरकन के ओड़े बगमेला ॥
तब दिल में दहसत अति जागी। मुरकि फौज खालिक की भागी ॥
चले फौज चंद्रापुर जारयो। दौर मुलक मैंहर[1] कौ मारयौ ॥
ह्वांते फेरि रानगिरि[2] लाई। खालिक चमू तहां चलि आई ॥
उमडि रानगिर में रन कीन्हौ। खालिक चालि मानि भै दीन्हौ ॥

दोहा।

लये नगारे ऊँट हय, लूट निसान बजार।
खालिक बचे बराइ जब, माने तीस हजार ॥ ९ ॥

छन्द।

तीस सहस खालिक जब डांडे। लूटि पाटि अपनै कर छांडे ॥
छूटे डांड मानकै ज्यौंही। उठ्यौ दस्त[3] खालिक कौ त्यौंही ॥
करै देस में कही न कोई। वासिल[4] डांड कहांतै होई ॥
जब छत्रसाल पीर यह जानी। तब बरात बासा पर मानी ॥
दागी केसैराइ तहांकौ। जाहिर जोर मवासी बांकौ ॥
तहां बरात लिखाइ पठाई। देखत अति वाकै रिस आई ॥
बांचि बरात डारि उहि दीनो। तुरतहिं तमकि तेग कर लीनी ॥
फिरी बरात बुँदेला जानी। तब बासा पर फौज पलानी ॥

दोहा।

ठिल्यौ बुंदेला बंब[5] दै, बासा घेरयौ जाइ।
त्यौंही सनमुख रन पिल्यौ, दागी बडो बलाइ ॥ १० ॥

१—मैहर = नागौद के निकट एक राज्य है। २—रानगिर = सागर के मार्ग में देवहर नदी के तट पर एक स्थान है जहाँ हरसिद्धिदेवीजी का मंदिर है और जो तीर्थ स्थान समझा जाता है। ३—दस्त = अधिकार।
४—वासिल = प्राप्त। ५—बंब देकर = घोर नाद करता हुआ।

छन्द ।

खुरी कराइ तुरी चढ़ि धायौ । फेरत सहिथी बलगत आयौ ॥
छत्रसाल इत कौन कहावै । सो मेरे सनमुख कढ़ि आवै ॥
देखौं समर छत्र पन ताकौ । कढ्यो नाम जुद्धन में जाकौ ॥
उमड़ि बचन ज्यौं बलमि सुनायौ । त्यौं छत्रसाल तुरग झमकायौ[1] ॥
झमकि तुरंग भयौ कढ़ि सोहैं । बोल्यौ बचन बदन बिहसोहैं ॥
पहिल घाउ घालौ तुम आछै । हियै [2]हौस रहि जैहै पाछै ॥
जो रन बहस परस्पर बाढ़ो । देखत फौज दुहू दिस ठाढ़ो ॥
त्यौ उहि बहक[3] सैहथी बाही[4] । बच्छ[5] आड़ि छत्रसाल सराही ॥

दोहा ।

बच्छ आड़ि बरछी रुप्यौ, छत्रसाल रनधीर ।
त्यौंही सांगि उछाल कर, हुमकि[6] हन्यौ वह वीर ॥ ११ ॥

छन्द ।

अरि के साँगि दुहूं दिस साली[7] । तऊ न वाकी हिम्मत हाली ॥
पैरत सांग सामुहौ आवै । पै कृपानु कौ घाउ[8] न पावै ॥
अरि की चोट मान त्यौं कीन्हीं । वेहू तेग मान मुंह लीन्हीं ॥
त्यौं सर दीपसाह को छूट्यौ । तऊ न बीर समर तें छूट्यौ ॥
तब छत्रसाल करी मनभाई । हुमकि सांगि दुहु हस्त हलाई ॥
ठेलाठेल हलाइ गिरायौ । बीर बरयाह खेत वह आयौ ॥
जो रन में कपि रुद्र रिझायौ । दागी कौं सिर काटि चढ़ायौ ॥
लूटि लोट बासा सब लीन्हौ । बड़ी पटारी कौ मन कीन्हौ ॥

१—झमकायो = चमकाया, तीव्र किया । २—हौस = इच्छा, उमंग ।
३—बहक = उछल कर । ४—वाही = साधी । ५—बच्छ = ढाल ।
६—हुमकि = आवेश से । ७—साली = छेद दी ।
८—घाव—दांव ।

दोहा।

बड़ी पटारी मारिकै, फतै लई ततकाल।
बाकीखां के देस कौ, पहुंचे श्री छत्रसाल ॥१२॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते केसौराइ-दागी-बध-वर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

चौदहवां अध्याय ।

छन्द ।

मधु दिन तहाँ मुकाम बजायौ । सुरह्यौ घाउ चाउ चित आयौ ॥
छरी भीर छत्रसाल बुँदेला । सुभट छ सातक आपु अकेला ॥
सहज सिकार खेल रस पागे । बनबराह मृग मारन लागें ॥
सैद बहादुर हिम्मत कीनी । खबर जसूसनि सौं सब लीनी ॥
दल सजि उचकि आनि हंकारयौ । खलभल सहज खेल में डारयौ ॥
ज्यौं हरिनन की होत हँकाई । उचका उठै बाघ बिरझाई ॥
त्यौंहि सैदबहादुर धायँ । डंका निकट नगीच बजायौ ॥
सुनि डंका छत्रसाल रिसानै । छत्रधरम कौ बांधे बानै ॥

दोहा ।

फौज बहादुर सैद की, परी फंद में आइ ।
वाके थल बीरन दई, गोलनि गोल गिराइ ॥१॥

छन्द ।

गिरी गरज गाजै सो गोली । डगडग चमू अरिन की डोली ॥
मुगल पठान खेत में जूझे । बैरिन ब्यौंत चाल के सूझे ॥
चमकि चाल तुरकन त्यौं दीनौ । जीतपत्र छत्ता तंह लीनौ ॥
ह्वांतें उमड़ि बरावा मारयौ । धूमघाट पर डेरा पारयौ ॥
गोपाचल में खलभल माच्यौ । सैदमनौवर त्यौं रिस राच्यौ ॥
जोरी फौज निसान बजाये । धूमघाट पर उमड़त आये ॥
त्यौं छत्रसाल बीररस बाढ़े । सनमुख गये जूझ कौ ठाढ़े ॥
माचो मार रुद्र अनुराग्यौ । बाजन सार सार सौ लाग्यौ ॥

दोहा।

सेल्ह डकेलनि ठेल दल, पिले बुँदेला बीर।
महा भयानक भाँति लख, पगनि डगमगे मीर॥२॥

छन्द।

डगे मीर तजि खेत पराने। पिले बुँदेला रन सरसाने॥
मुगल पठान हने जे जूटे। सैद सहर भीतर लै लूटे॥
सहर लूट कीनी मन भाई। गढ़ के गेरत रहटो लाई॥
लूटि ग्वालियर मुलक उजारयो। ह्वाँते दौरि कंजियौ मारयौ॥
गिरिबर मारि करे अरि हीनै। कटिया केनव डेरा कीनै॥
त्यौं महमद हाशिम चलि आये। संग अनंद चौधरी धाये॥
पिले उमंडि तीन सजि गोलै। तीन्यौ ओर खग्ग भक झोलै॥
ते आवत छत्रसाल निहारे। अस्त्रनि उमडि तिहूं दिस मारे॥

दोहा।

तीन्यौ गोल बिदार कैं, फतै लई छत्रसाल।
सुधि करि त्रिपुर सँहार की, नाचे भूत बिताल॥३॥

छन्द।

ह्वांते हनूटूक कौ आये। भयौ ब्याह त्यौं बजे बधाये॥
अति आतंक चहूं दिसि फैले। भये बदन बैरिन के मैले॥
हौन फतूह लगी मनमानी। चली चौथ चुकि जग में जानी॥
सुनत चाह कुंवरन मन कीनौ। सबन संग छत्रसालहि दीनौ॥
रतनसाह त्यौंही चलि आये। अमर दिवान खबर सुनि धाये॥
सबलसाह हितु आये कीनै। केसौराइ मिले मनु लीनै॥
धारू अरु कीरति मन भाये। दीप दीवान दीप छबि छाये॥
मिले रामजू संगर सूरे। पृथीराज बल बिक्रम पूरे॥

दोहा ।

माधोराइ बसंत अरु, उदैभान त्यौं बर्न ।
अमरसिंह परताप तँह, मिले चंद अरु कर्न ॥४॥

छन्द ।

अब सब सुनौ साहिगढ़[१] वारे । जिन रन मध्य अस्त्र झुक झारे ॥
आइ इन्द्रमनि मिले अगाऊ । उग्रसैन सम काहि गनाऊ ॥
जगत सिंह बानैत बुँदेला । रन में करत प्रथम बगमेला ॥
सकतसिंह त्यौं गुननि गरूरे । दान कृपान बुद्धि बल पूरे ॥
जामसाह अंगद मरदानै । मनसिब छांडि मिले जग जानै ॥
आये परबतसिंह प्रबीनै । रूपसाह त्यौं रन रस भीनै ॥
देव दिवान प्रेम उर बाढ़े । भारत साह समर अति गाढ़े ॥
चंद्रहंस अरिकुल कौ घाती । मिल्यौ सुजानराइ कौ नाती ॥

दोहा ।

दूजे भारतसाह त्यौं, राइ अजीत बसंत ।
बलि दिवान के नंद द्वै, चित्रांगद जसवंत ॥५॥

छन्द ।

रामसिंह जैसिंह बखानै । जादौराइ करनजू जानै ॥
गाजीसिंह कटेरा[२] वारे । दै करनाल दुवन जिन मारे ॥
जगतसिंह मुनि कबिन प्रमानै । त्यौं गुपालमनि परम सयानै ॥
और अनेक कहां लगि गाऊँ । गनती सत्तर कुंवर गनाऊँ ॥
केतै सगे सोदरे सारे । और पमार अँधेरे भारे ॥

१—साहिगढ़ = महाराज हृदयशाह के राज्याधिकारी पन्ना नरेशों की एक शाखा का राज्य साहिगढ़ में था परन्तु अब वह राज नहीं रहा ।

२—कटेरा = यह एक राज्य झांसी प्रान्त में है । यहां का राज ओड़छाधीशों के वंश की एक शाखा है । यहां के अधीश्वर बड़े वीर थे।

नाते ममा फुफू के जेते। मिले आइ छत्रसालहिं तेते॥
उच्च निसान दलनि फहराने। धौंसा धुनि घन से घहरानै॥
उमड़ि चली गोलन पर गोलै। दल के भार फनी[1] फन डोलै।

दोहा।

लगन लगे कुल कटक में, तंबू तुंग कनात।
झंडा गड़े बजार में, अति ऊँचे फहरात॥६॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सैदबहादुर जुद्ध वा कुंवरन कौ आगमन वर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

१—फनी = शेषनाग।

पन्द्रहवां अध्याय।

लागी चमू चढ़न चतुरंगै। ज्यों जलनिधि की तरल तरंगै॥
ऐड़दार[1] जितही सुनि पावैं। फौजैं उमड़ि तहां को धावैं॥
बासा अरु वृंदाबन बारचो। प्रलै पथरिया ऊपर पारचो॥
दीनी लाइ निदर निदराई। फौज बहुत राई पर आई॥
पहिली पसर रनेही टूट्यौ। कोटा कूट दमोयौ लूट्यौ॥
धामौनी मैं धूम मचाई। जब न और की बचै बचाई॥
तब खालिक ऐसी मति कीनी। वाकन खबर साह कौ दीनी॥
लिखी बहादुरखां कौ ऐसै। बादर फट्यौ ढाकिये कैसै॥

दोहा।

चहुं चक्क गमड़े फिरत, बड़े बुँदेला बीर।
अमल गये उठि साह के, थके जूझ करि मीर॥१॥

छन्द।

कोका खबर हजूर जनाई। वहै लिखी वाकन में आई॥
सुनत साह मन में अनखानै। भेजे रनदूलह मरदानै॥
सँग बाइस उमराइ पठाये। आठक लिखे मद्दती ठाये॥
बिदा भये मुजरा करि ज्यौंही। बजे निसान कूच करि त्यौंही॥
दतिया अरु ओंडछौ बगौनी। सजी सिरौंज कौंच धामौनी॥
उमड़ि इंदुरखी चढ़ी चँदेरी। पिलि पाडौर जुद्ध की टेरी॥
ये मुद्दती उमड़ि चढ़ि आये। मनसिबदार तीस ठिक ठाये॥
करचौ गढ़ा[2] कोटा पर पेला[3]। जहां सुनै छत्रसाल बुँदेला॥

१—ऐंड़दार = विरोधी, विमुख २—गढ़ा = यह दुर्गम दुर्गसागर के निकट है। ३—पेला = आक्रमण।

दोहा ।

उमड़्यो रनदूलह सजे, तीस हजार तुरंग ।
बजे नगारे जूझ के, गाजे मत्त मत्तंग ॥२॥

छन्द ।

दिन के पहर तीन तब बाजे । लागी लाग मीर गल गाजे ॥
त्यों छत्रसाल चढ़ाई भौहैं । अड़े बंब दै भये भिरौहैं ॥
उमड़ि रारि तुरकन त्यों माँडी । छूटे तीर उड़ति ज्यों टाँडी[1] ॥
त्यौं रन उमड़ि बुँदेला हाँके । रंजक[2] धुँवन घामनिधि[3] ढाँके ॥
बाजन लगी बंदूखें सोई । गिरे तुरक जे लगे[4] अगोई ॥
गिरत हरौल गोल के साऊ । कढ़ि कतार तैं ठिले अगाऊ ॥
लगे खान गोलिन की चोटै । नट ज्यौं उछल लाग लै लोटै ॥
समर बिलोकि सुरन भय कीनो । सूरज सरक अस्तगिरि लीनो ॥

दोहा ।

जोन जामगिन[5] में जगी, लागे नखत दिखान ।
रन असमान समान भो, रन समान असमान ॥ ३ ॥

छन्द ।

पहर रात भर भई लराई । गोलिन सर सैथिन झर लाई ॥
खाइ घाइ सब स्वान अघानै । लोह मानि तजि कोह परानै ॥

१—टाँडी = टिड्डी, टीड़ी ।   २—रंजक—वह बारूद जो तोप या बंदूक के भीतर भरी हुई बारूद में आग पहुँचाने को बाहरी छिद्र पर रक्खी जाती है रंजक कहाती है ।   ३—घामनिधि = सूर्य ।   ४—लगे अगोई = आगे थे । ५—जामगी = ढाँक की जड़ को कूट कर उसकी डोर बट लेते हैं और उसे आग में छुला कर जला लेते हैं । यह आग उस डोरी मे बराबर सुलगती रहती है और बिना बुझाये नहीं बुझती । इसी को रंजक में छुला देने से वह जल उठती है । इस डोर को जामगी कहते हैं । यह शब्द फार्सी "जामगीर" से बना है ।

डेरा कोस ढ्वैक पर पारे। हिम्मत रही हियै सब हारे॥
अड़े बुँदेला टरै न टारे। जीते जूझ बजाइ नगारे॥
रनदूलह रन तै बिचलाये। ह्वाँते हनूटूक कौ आये॥
मारि गुनाह मरोरी टोरी। खग्ग झार झागर झकझोरी॥
फिरि मवास रतनागर मार्‍यौ। औड़ेरा में डेरा पार्‍यौ॥
दल दौरन हरथैान उजारी। धामौनी में खलभल पारी॥

दोहा।

चौंकि चौंकि चहुँ दिस उठै, सूबाखान खुमान।
अबधौ धावै कौन पर, छत्रसाल बलवान॥ ४॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे रनदूलहपराजयो नाम
पंचदशोऽध्यायः॥ १५॥

सोलहवाँ अध्याय ।

छन्द ।

त्यौंही दौर करकरा कूट्यौ । आसपास नरवर कौ लूट्यौ ॥
सौ गाड़ी सकलात[1] सलैानी । पातसाह कौ जात पठौनी ॥
सो ताकी छत्रसाल बुँदेला । लई लुटाइ फौज सौ पेला ॥
सबही लूट छूटकर पाई । लुँगी[2] मोल मौधुबन लाई ॥
लूटी रसद साह की ज्यौंही । वाकन लिखी हकीकत त्यौंही ॥
सुनी दिलीस खबर ठिकठाई । सूबा दल कौं नालस आई ॥
रनदूलह डांडे रणऊमी । पठये साह रोस करि रूमी ॥
लै मुहीम रूमी रिस कीनी । मोट[3] उठाइ अरे[4] की लीनी ॥

दोहा ।

फौज जोरि रूमी बढ्यौ, बाजे तबल निसान ।
छत्रसाल तासैां करचौ, बसिया में घमसान ॥ १ ॥

छन्द ।

बसिया में माच्यौ रनखेला । उत रूमी इत बीर बुँदेला ॥
तुपक तीर सैथी तरवारे । खात खवावत बीर हँकारे ॥
उमगे भिरत जुद्धरस पागे । कटि कटि गिरन परस्पर लागे ॥
कढ्यौ कल्यानसाह मन आछे । पग परिहार न दीने पाछे ॥
मीर बहबहे उमड़त आये । सनमुख कुटै हटै न हटाये ॥
गना रूम के तके बुँदेला । कियौ तुपकदारनि कौ पेला[5] ॥

१—सकलात = (सौगात) भेंट । २—लुँगी = फौज की भीड़ ।
३—मोट = गठरी । ४—अरा = झगड़ा । ५—पेला = धावा ।

तिन चोटैं कीन्हीं चितचीती[1]। साखै भई सबनि की रीती ॥
गनी रूम कौ समर पहारू। बाटन लग्यो सबनि कौ दारू ॥

दोहा।

भई भीर गलबल मच्यौ, दारू बाटत लेत।
लग्यो पलीता सीढरन[2], उद्यो धूम उहि खेत ॥ २ ॥

छन्द।

त्यौंही हला बुँदेलनि बोले। समर खेत खग्गनि के खोले ॥
लागे मुँह तें मारि गिराये। पिलिवन बीर धुँवा पर धाये ॥
दारू उड़ै उड़ै अरि ज्यौंही। मारे बीर बुँदेलनि त्योंही ॥
रूमी बिडरि खेत तैं भाग्यो। छत्रसाल जस जग में जाग्यो ॥
ज्यौं रँग मच्यौ दिली में ओरै। दुदिलो[3] भये साह कित दौरै ॥
नृप जसवन्तसिँह के बेटा। कढ़े दिली कौं मारिव बेटा ॥
फिरि जोधापुर धनी अन्यारे। अंतिसाह अजमेर पधारे ॥
त्यौं अकबर सहिजादौ साऊ। राठौरन पर पिल्यौ अगाऊ ॥

दोहा।

त्यौं प्रपंच रचि बुद्धि बल, दुरगदास राठौर।
सहिजादे सौं मिलि किये, तखत लैन के डोर ॥ ३ ॥

छन्द।

तखत लैन के लोभ बढ़ाये। पुत्रहिँ पितहिँ बैर उपजाये ॥
सहिजादौ संगी कर पायौ। तब दच्छिन कौ वाहि चलायौ ॥
ताकी पीठ साह उठ लागे। दच्छिन कौं उमगे रिस पागे ॥
रूमी भगे साह त्यौं जानै। कारी परी कुल्ल तुरकानै ॥
बल व्यवसाइ सबनि कै थाके। तब दिलीस तहवर मन ताके ॥

१—चितचीती = मनचाही।

२—सीढ़रा = सिँगड़ा, बारूद भरने की कुप्पी, जो बहुधा काठ, पीतल अथवा चमड़े की बनती है।

३—दुदिलौ = दुचित्ता, चिंतित।

जानि जुद्ध अमनैक अठायौ। तहवरखाँ इहि देस पठायौ॥
चढ़ी चमू तहवर की बाँकी। दिसा धूरि धँधरि सौ ढाँकी॥
ज्यौं तहवर की सुनी अवाई। त्यौंही लगन ब्याह की आई॥

दोहा।

साबर तै आई लगन, मिले बोल बंधान।
दवादवे[1] बीरा[2] दियो, अब हितु भयौ निदान॥ ४॥

छन्द।

जब दिन निकट ब्याह के आये। मंगलगीत दुहूँ दिस गाये॥
तब दल बलदाऊ सँग राखे। लागै करन काज अभिलाषे॥
छरी बरात ब्याह कौ साजी। तीस सवार बंब अरु बाजी॥
दूलह छत्रसाल छबि छाये। करन ब्याह साबरहि सिधाये॥
तँह बिधि सौ आगौनी कीनी। बाँध्यो मौर इंद्रछबि लीनी॥
लागी परन भाँउरैं ज्यौंही। परी फौज तहवर की त्यौंही॥
अनी बनी दोई बनि आई। दोऊ बरी करी मनभाई॥
इतहि भाँउरैं सजी सुहाई। उत तुरकनि सौ मची लराई॥

दोहा।

रन रुपि तहवर खान कौ, मुह मुरकायौ मारि।
पूरन वेद बिधान सौ, लई भाँउरैं पारि॥ ५॥

छन्द।

मारी फौज तुरक मुरकाये[3]। तँह सब धाये बजे बधाये॥
ब्याही बरी जीति अरि लीनौ। कंकन छोड़ि तुरंगम दीनौ॥
धामौनी दौरन झकझोरी। फिरि पिछौरि सब खरी पिछौरी[4]॥
बारी बार मवासी कूटें। गाँउ कलींजर के सब लूटें॥

१—दवादवे = चुपके से। २—बीरा = पान। ३—मुरकाये = लौटा दिये, भगा दिये। ४—पिछौरी = झकझोर डाली। बुँदेलखंड में पिछौरी दोहर को भी कहते हैं।

रामनगर मारचौ करि डेरा। कालिंजर कौं पारचौ घेरा॥
रोज अठारह गढ़ सौं लागे। चौकिन तहाँ धौस निसि जागे॥
बाहिर कढ़न न पावै कोई। रहे संक सकराइ गढ़ोई[१]॥
लई रोकि चारिउ दिस गैलै। गढ़ पर परै रैन दिन पेलै॥

दोहा।

चिंतामनि सुर की तहाँ, कीनौ आइ सुदेस।
अति आदर सौं लै चले, न्योतौ करि निज देस॥ ६॥

छन्द।

न्योतौ करि कीनी महिमानी। धन्य घरी सबही वह मानी॥
तातैं तुरी तिलक मैं दीनौ। उर आनंद परस्पर लीनौ॥
ह्वांतै कूच बिदा ह्वै कीनौ। कालिंजरहिं दाहिनौ दीनौ॥
लरे उमडि तहँ सुभट अन्यारे। घाटी रोकि बीर गढ़वारे॥
छत्रसाल त्यौं हल्ला बोल्यौ। खग्गन खेल बुँदेलन खोल्यौ॥
समर भूमि अरिलोथिन पाटी। रोकी रुकै कौन की घाटी॥
बारि बनहरी लूट मचाई। धामौनी सौं लई लराई॥
पटना अरु पारौलि उजारै। तहवरखां पै परी पकारै॥

दोहा।

फौज जोर तहवर तहां, ठनै जूझ के ठान।
गौनै मैं छत्रसाल के, दल कौ परचौ मिलान॥ ७॥

छन्द।

परचौ मिलान जाइ जब गौनै। करकै तंबू तनै सलौनै॥
दहिनी दिस उतरे बलदाऊ। जहँ गोली पहुँचै पहुँचाऊ॥
थम्है अपनी अपनी पाली[२]। परचौ पहार पीठ तन[३] खाली॥
ऊपर सिखर चौपरा[४] जान्यौ। सो देखन छत्ता उर आन्यौ॥

१—गढ़ोई = गढ़वाले। २—पली = दल। ३—तन = ओर।
४—चौपरा = छोटा बर्गाकार तालाब जो सब ओर से पक्का बँधा हुआ हो।

छरी भीर कौतुक मन बाढ़ै। चढ़ि करि भये शिखर पर ठाढ़ै ॥
ज्यौं यह खबर जसूसन दीनी। त्यौं तहवरखां बागै लीनी[1] ॥
बखतरपोस सहस दस धाये। प्रलै मेघ से उमडत आये ॥
निकट आइ धौंसा घहरानै। हयखुरधार छटा छहरानै ॥

दोहा।

बड़ी फौज उमड़ी निरखि, रच्यौ छता घमसान।
चढ़ि सनमुख रनमुख तहाँ, बरषन लाग्यौ बान ॥ ८ ॥

छन्द।

बरषन लाग्यौ बान बुंदेला। कियौ तुरक दै ढ़ाल ढ़केला ॥
बखतरपोस बान सों फूटै। नल से क्षतज छांछ के छूटै ॥
कौतुक देखि जोगिनी गाई। खप्पर जटनि माजती धाई ॥
बिसुनदास तहँ मार मचाई। ओप कटेरहि[2] भली चढ़ाई ॥
गह्यो पहार बुंदेला गाढ़े। त्यौं पठान पैठे मन बाढ़े ॥
चंड लेहु दुहुँ दिस ठहरानै। सूरज गगन मध्य ठहिरानै ॥
सोर सिंहनादन के माचे। भूत बिताल ताल दै नाचे ॥
डेरन खबर जूझ की पाई। सुभट भीर त्यौं उमड़त आई ॥

दोहा।

चढ़े रंग सफजंग के, हिन्दू तुरक अमान।
उमढ़ि उमड़ि दुहुँ दिस लगे, कौरन लोहा खान ॥ ९ ॥

छन्द।

कौरन लोह खान भट लागे। दुहूँ ओर रन में रस पागे ॥
सुतरनाल[3] हथनाले[4] छूटी। गरजि गरजि गाजै सी टूटी ॥

१—बागैं लीन्ही = अश्वारूढ़ होकर आक्रमण किया। २—कटेरहि = कटेरावाले को। ३—कौरनलोह खान लगे = विकट युद्ध होने लगा और शस्त्र चलने लगे। ४—सुतुरनाल = तोपें ५—हथनाल = वे तोपें जिनके चरख हाथी खींचैं।

गोलिन तीरन की झर लाई। माची सेल्ह[1] समसेरन धाई॥
त्यों लच्छे रावत प्रभु आगै। सेल्हन मार करी रिस पागै॥
प्रबल पठान मारि कै साऊ। कढ़्यो मिश्र हरिकृष्ण अगाऊ॥
उमड़ि लोह लपटन मन दीनौ। तन कै होम स्वामि हितु कीनौ॥
बावराज परिहार पचारयौ। सार पैर रवि मंडल फारयौ॥
जूझयौ नन्दन छिपी[2] सभागौ। ब्यौतन लग्यौ इन्द्र कौ बागौ॥

दोहा।

कृपाराम सिरदार त्यौं, कढ्यो धँधेरौ धीर।
बैठ्यौ जाई बिमान चढ़ि, भानु भेदि वह बीर॥ १०॥

छन्द।

उतहि पठान चढ़त गिरि आवैं। इत छत्रसाल बान बरसावैं॥
इक इक बान दुद्वै भट फूटै। झुक झुक तऊ झपट रन जूटै॥
बान बेग जगतेस हँकार्यो। त्यौं करवान झरप झुकझारयौ॥
घाउ ओड़ि भुज ऊपर लीनै। उमड़ि पांउ रन सनमुख दीनै॥
गिरे पठान डील त्यौं भारे। गोलनि सेल्ह सरनि के मारे॥
जंघा घाउ छतारे ओढ्यो। भुजडंडन रनसिंधु बिलोड्यौ॥
पिले तुरक जे बखतरवारे। ते रन गिरे छता के मारे॥
बढ़े गिरिन स्रोनित के नाले। धर धमकन धरनीतल हाले॥

दोहा।

कहर[3] जूझ द्वै पहर भौ, झरयौ[4] सार सौ सारु।
तेज अरिन कौ त्यौं घट्यौ, लोथन पट्यो पहारु॥ ११॥

छन्द।

बारह बीर खेत इत आये। सत्ताइस घाइल छबि छाये॥
तुरक तीन सै खेत खपाये। घाइल द्वै सै बीस गनाये॥

१—सेल्ह = भारी सांग। २—छिपी = छीपा जाति विशेष जो कपड़े पर बेल बूटे रंग से छापते हैं। ३—कहर = कठिन। ४—झरयो सार सौ सारू = लोहा बजा, अस्त्र चले।

मारि तुरक कौ मुँह मुरकायौ। रन में बिजै बुँदेला पायौ ॥
मुरके तुरक खग्ग फिर खोल्यौ। बल दिवान पर हल्ला बोल्यौ ॥
बजे नगारे फेर जुझाऊ। रन में रुप्यौ उमड़ि बलदाऊ ॥
पहर राति भर मार मचाई। मुरक्यौ तुरक उहां खम खाई[1] ॥
ओड़ि अरिन के ढाल ढकेला। भलौ लर्‌यौ बलकरन बुँदेला ॥
खभरि खेत तहवर बिचलायौ। सूबन के उर साल सलायौ ॥

दोहा ।

सले साल सूबानि कै, धकनि हलै पठान ।
दियौ भाल छत्रसाल कै, राजतिलक भगवान ॥ १२ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते तहवर युद्ध वर्णनं
नाम षोड़शोऽध्यायः ॥ १६ ॥

१—खम खाई = हार गए ।

सत्रहवां अध्याय।

छन्द।

जूझ जीति नौसान बजाये। ह्वांते धौरीसागर आये॥
करी दौर डुलचीदल मारयो। दल मलि ढुवन बरहटा बारयो॥
उमड़ि दलनि ऐरछ झुकझोरी। निपट बिकट मगरौट मरोरी॥
बन होली में आग लगाई। फिरि जलालपुर लूट मचाई॥
उतरत नदी पठानन रोके। ते भुज ठीक समर में ठोके॥
खरका के ढिग डेरा पारे। त्यौंही सैदलतीफ हँकारे॥
सैदल टकरी डेरा कीनै। इनि चढ़ि रात दरेरौ दीनै॥
लूटत कटक बुँदेला लागे। सैदलतीफ प्रान लै भागे॥

दोहा।

भाग्यौ सैदल प्रान लै, मिपटै कटक कुटाइ।
देस लूट दच्छिन चले, हय गय गये लुटाइ॥१॥

छन्द।

हय गय लूटि वंडपहि आये। जुरि भुमिया गांवन तै धाये॥
जुरयौ मुसकरा औार बिहौनी। रोकी उमड़ि सबनि रन औानी॥
नौरंगा के निकट अगाऊ। मड़े[1] मड़र दै[2] ढोल जुझाऊ॥
त्यौं रन ठाठ बुंदेलनि ठाटे। खेत गमार चार सै काटे॥
उमड़ि धौंधरी सुलई मारयौ। लूट महेबा डेरा पारयौ॥
करी दौर पनवरी घधौरा। लयौ लूट तँह पकरि करौरा॥

१—मड़े = उमड़े। २—मडर दै = पीट कर।

सहर लूटि थानौ फिर मांड्यौ। डांड चुकाइ करोरी[1] छांड्यौ ॥
डामौनी को मुलक उजारयौ। दल दौरन गड़रौला मारयौ ॥

दोहा ।

लूटपाट सुरकी लई, दई करहिया लाइ[2] ।
मदर भदापुर जारि कै, रहे राजगिर जाइ ॥२॥

छन्द ।

तहवरखां हेरत हिय हारयौ। वाहि दबाइ दमोयौ बारयौ ॥
सुनी पुकारन तहवर टेरै। तब डेरा कीन्हौ पट हेरै ॥
दौर अर्जुनहर पर पुनि कीनी। भुमियन तमकि तेग कर लीनी ॥
सत्ताइस गांवन के ठाये। ढोल बजाइ ढोठ जुर धाये ॥
मची मारु त्यों ठिले बुँदेला। खिभिर किये खग्गन खिज्ज खेला ॥
किरपाराम चौधरी मारयौ। घाउ भान बगसी तन धारयौ ॥
ज लगि न सूबा सनमुख आवै। त लगि मवासिन खेत खपावै ॥
जब लगि द्रगनि न दुरद निहारै। तब लगि केहरि हरिन सँहारै ॥

दोहा ।

मियां दुरद भुमिया हरिन, कानन मुलक बिसाल ।
काढ़ि सिकार खेलन लग्यौ, समरसिंह छत्रसाल ॥३॥

छन्द ।

छत्रसाल रनरंग प्रवीनै। दौरन दबटि देस बस कीनै ॥
भेड़ा मारि बिनैका बारयौ। दौरि दलीपुर दलमल गारयौ ॥
बारी बदिहा रंग भैलौनी। मिठुली मारि लई ढाकौनी।
मलि मुगावली अरु महरौनी। दलि मुराछ छौनी मगरौनी ॥
पटहैरै पंचहार गँवाये। घर की रही न ईंट इटाये ॥

१—करोरी = बादशाही मे एक राज्य कर्मचारी के पद का नाम था जो वर्त्तमान काल के तहसीलदार के समान होता था ।

२—लाइ = आग लगा दी ।

लुट्यो अमौदा ईसुर बागो । दल्यौ दौर करि दांगी वारौ ॥
दई पजारि पछौर पठारी । सिरसा भीत भीत सौं मारी ॥
सिलवानी बिलवानो लाई । बासौधे में लूट मचाई ॥

दोहा ।

बारि बिलखुरा रमपुरा, रइसैदी परजार ।
चेइढ़ डौगरु ग्यासपुर, ज्ञानाबाद उजार ॥४॥

छन्द

दौरि बिलैरा बरहौ बारयौ । बजि बबूरिया डेरा पारयौ ॥
बड़खेरा बलहरा बलेहौ । दौरि दलनि दल मलयौ रनेहौ ॥
बड़ी बचैया आग लगाई । धूम धुंधु धुव धामनि लाई ॥
घोसी एक राममनि धावै । चालिस कोस दौरि करि आवै ॥
नृप छत्रसाल ताहि इत राख्यौ । और देस जीतनि अभिलाख्यो ॥
उतरे नदी पार दल ज्यौंही । मिले आइ सब सेंगर त्यौंही ॥
झमकि झार सागर पै झारयौ । धौसनि धमकि धमहरा मारयो ॥
टोरी टोर पलक में लीनी । लपक लाल लहटूटी दीनी ॥

दोहा ।

बीची बारौ कोपरा, कारौ बाग झपेट ।
लगत बडोए में बड़ी, लूटी हाट लपेट ॥५॥

छन्द ।

हटरी मार करयौ मन भायौ । हटि हिंडोरिया हलन हलायौ ॥
खभरी खोद खूंद छिमला सौ । रौंद राखि भंज्यो भौंरा सौ ॥
अधसेरी उमराव न मान्यौ । मारयौ देस उतारयो पान्यौ ॥
हाड़ा दुरजनसाल प्रबीनौ । तिन हित छत्रसाल सों कीनौ ॥
दियौ देस तिनको तब डेरौ । धूपसि मार खदोयौ खेरौ ॥
मारि मयापुर घारी घेरी । घुरहट मारि पिपरहट पेरी ॥

लै रमगढ़ा सुवागढ़ लीनो। मारि गढ़ा कोटा बस कीनौ ॥
दई पजारि पैठि पुरवाई। लीनी लूटि कठिन कुरवाई ॥

दोहा।

एतै दसौंधी कर कढ़े, पीछे हटे न पाउ।
वैस बसंत उमंड में, ओड़्यो सनमुख घाउ ॥६॥

छन्द।

कुम्भराज कंजियो उजार्‌यो। कटकन कचरि कुंवरपुर डार्‌यो।
लै कबीरपुर लयौ घटौवा। कन्हरापुर में रह्यौ न कौवा ॥
रौंदि रौनदू रनगिरि लाई। हड़ति जमहटा लूट मचाई ॥
फनेपुरा चन्द्रापुर लीनौ। चापि बाढ़िपुर चपटौ कीनौ ॥
लयौ लाउरौ लोधी वारौ। अधरोटा मार्‌यौ भय भारौ ॥
दोरनि उमड़ि अभानौ लीनौ। मारि उदैपुर कौतुक कीनौ ॥
सय्यद लरे रातगढ़ टूट्यौ। गढ़धारनि कौ धीरज छूट्यौ ॥
लई सौरई अरु साडौरो। लूटे गांउ गिरद के औरो ॥

दोहा।

टोरी जोर तिलात लै, लई तौर तूमान।
लयौ गौरझामर झिल्यौ, झुकझोरी झरखान ॥७॥

छन्द।

एसै समै और बिधि कीनी। सिंह सुजान स्वर्ग गति लीनी ॥
त्योंही राज इन्द्रमनि पायौ। छत्रसाल सों हित बिसरायौ ॥
मांग मुहीम छता पर ठानी। तौ छत्रसाल हिये रिस मानी ॥
मारि मुलक में लूक लगायौ। सतधारै हय पानी प्यायौ ॥
चढ़ि गुहनार गरौठा मार्‌यौ। त्यौंही कगर कचनयौ बार्‌यौ ॥
बांधि घेरि जैरौन उजारी। धार जतहरा ऊपर पारी ॥
सुनत इन्द्रमनि कौ मन थाक्यौ। सरन सुजानराइ कौ ताक्यौ ॥
तब दल धामौनी पर धायौ। तहवरखां कौ अमल उठायौ ॥

दोहा ।

दौरि दमौयौ दलमल्यौ, लखरौनी परजार ।
गौनौ हीरापुर लयौ, दई बार मिलवार ॥८॥

छन्द ।

कर हरथौन हनौता हैला । डहुली पै पारयो बगमेला ॥
झपटत झार झोल करि डारी । रहिली पहिली दौर उजारी ॥
बारि मुलक होरी से दीने । सबै भये भूपाल अधीने ॥
साठ कोस की दौरन दौरे । रन के ब्योंत न वैरिन औरे ॥
चौथ भेलसा लौ की आनी । अकबकाइ[1] उज्जैन परानी[2] ॥
चौकी गढ़चाँदा चकचौके । दहसत मान देवगढ दौकें ॥
धाकनि आनि गढ़ापति मानै । सूबा उर में संक समानै ॥
रन सनमुख उमराउ न आवै । चौथ देइ नव देस बचावै ॥

दोहा ।

अमल उठाये साह के, देस दिली के बार ।
आड़े आवै और को, सूबन मानी हार ॥९॥

छन्द ।

सूबन सबन हार हिय मानी । छत्रसाल की बजी कृपानी ॥
दौरन देस दिली के बारे[3] । भये व्योम में अनल उज्यारे[4] ॥
उमड़ि धूम रविमण्डल पूरे । ठौर ठौर जनु उठे बघूरे ॥
त्योंही पातसाह फरमायौ । सेख अनौर साजि दल धायौ ॥
बख्तरिया पखरैत हथ्यारी । चढ़े सहस दस होत तयारी ॥
आगे सौक झुमत गज माते । गजन अरावे होत न हाते ॥

१—अकबकाइ = घबरा कर, बिलबिला कर । २ — परानी = भागी ।
३—बारे = जलाये । ४—अनल उज्यारे = अग्नि का प्रकाश हुआ ।

सैय्यद सेख पठान अन्यारे। मारु बजत ते होत निन्यारे॥
बान रहकला[1] तोप जँजाले[2]। सहसनि सुतरनाल हथनालै॥

दोहा।

लोहदात दल साजि ज्यौं, उमड़्यो सेख अनैार।
उठत धूम चहुँ दिसि तकै, करै कहां कौ दौर॥१०॥

छन्द।

दौर अनैार कोस दस आवै। धुआँ कोस चलिस लौं आवै॥
दौरन देस बुँदेला आवै। छोर अनैार न छीवन पावै॥
धावै तुरक जुद्धरस भीनै। पीठ लगाई बहबहै कीनै॥
जानी फौज फंद में आई। तब त्यौघे में मार मचाई॥
मीर बहबहे उमड़न आये। डंका निकट नजीक बजाये॥
तब छत्रसाल चढ़ाई भोहैं। पैठ्यौ उमड़ि फौज कं सोहैं॥
ओढि अस्त्र छत्रिन के बाँके। बखतरपोस हला करि हांके
छमकि तुरी बरछा उलछारै। बच्छ ताकि प्रतिबच्छ हिंघारै॥

दोहा।

गाइन के घमके उठै, दियै डमरु हर डार।
नचे जटा फटकारिकै, भुज पसारि तनकार॥११॥

छन्द।

घाइन घमके मचे घनेरे। बखतरपोस गिरे बहुतेरे॥
फरफरात फर में धर लागे। सेख अनैार मानि भय भागे।
गिरे खेत अनवर के साथी। लुटे भँडार ऊँट हय हाथी॥
घेरे अनवर जान न पाये। डांड मान तब प्रान बचाये॥
मारि लूट अनवरखां डांड़े। चैाथ सिवा दुलाख लै छांड़े॥

१—रहकला = तोप की गाड़ी।

२—जंजाल = वह तोप जिसमें जंजीरदार गोले भरते है।

आलमगीर खबर यह पाई। अनवर कौं तागीरी[1] आई॥
बोले साह कोप करि ऐसे। फैलै हुकुम हमारौ कैसे॥
मनसिबदारन हिंमत खोई। देखौ निमकहलाल न कोई॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते अनवरपराजयो
नाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

१—तागीरी = बदली।

अठारहवां अध्याय ।

दोहा ।

यौं कहि ताके तुरतही, सुतरदीन की ओर ।
जे ईरानी निसबती, काबिल कोम अमोर ॥१॥

छन्द ।

सुतरदीन त्यों कोरनिस[1] कीनो । तिन्है साह धामौनी दीनो ॥
देसनि देसनि लिखे पठाये । क्यौं फिसाद ऐसै फैलाये ॥
सरे मुहीम साह रिस छाका । क्यौं वे लिखत दुंद के बाका ॥
जो सिख दई सुनी सब औनी । भेजे सुतरदीन धामौनी ॥
त्यों मिरजा धामौनी आये । बँदोबस्त कीनै मनभाये ॥
सजी हजार तीस असवारी । दल में निसु दिन रहै तयारी ॥
छत्रसाल पै पांच पठाये । बचन जौम के आनि सुनाये ॥
ऐ मिरजा उद्दित ईरानी । रन में जिनकी बजी कृपानी ॥

दोहा ।

इन्है मुकाबिल और को, दिल्ली में उमराउ ।
चाहत है इनसौ सबै, सूबादार सहाउ ॥२॥

छन्द ।

इन समान उमराइ न कोई । को रन इन्हैं मुकाबिल होई ॥
बड़े भाग छत्रसाल तिहारे । मिरजा आप सुडील निहारे ॥
मिहरबान ह्वै लिखे पठाये । तब हम पास राउरै आये ॥
तै अब लिखे खोलकै बांचौ । इनकी दबट[2] दौर तै बांचौ ॥
इनकी रिस खोटी हम जानै । को इनसौ सनमुख रन ठानै ॥
इनसौ बचे जूझ जबही लौ । कुसल मानि लीजै तबही लौ ॥

१—कोरनिस = अभिवादन । २—दबट = झपट ।

तातैं इनकौ भलो मनावो । इन देसनि मत दुंद मचावो ॥
रजाबंद तुमसो जो ह्वैहै । तो मँगाइ मनसिब पुनि दैहै ॥

दोहा ।

ताते इनके देस कौ, छोर छाँड़ अब जाउ ।
जैा मिरजा कहुँ कोपिहै, तो फिर कहां निबाहु ॥ ३ ॥

छन्द ।

ज्यों छत्रसाल बचन सुनि लीने । त्यौं बोले बर बुद्धि प्रबीने ॥
मिरजा बड़े सबनि तै गाये । याकी चैाथ पाइ हम आये ॥
सो हमेस हमकौं भरि दैहै । तो हम इनको छोर न छैहैं ॥
चैाथ न दैहै जैा मनमानी । तो मुलकन को परै न छानी[1] ॥
बिग्रह उठै देस लुटि जैहै । मिरजा अमल कहाँ तै लैहै ॥
जिन प्रभु हमकैा तेग बँधाई । ते सब ठैारन सदा सहाई ॥
गरबीलिन के गरबनि ढाहै । गरबप्रहारी बिरद[2] निबाहै ॥
केतिक मिरजा की रिस खोटी । प्रभु के हाथ सबन की चोटी ॥

दोहा ।

जे जग में दुसमन बड़े, काम क्रोध अरु लोभ ।
ते मिरजा हितुवा करै, कहै मानिहै छोभ ॥ ४ ॥

छन्द ।

बिनही जुद्ध जीति अभिलाषै । त्यौंही बचन क्रोध के भाषै ॥
चैाथ लोभ के दैन न मानै । तीनैा सत्रु मित्रु करि जानै ॥
मिरजा के बिग्रह मन भायो । तो हमहू यातै सुख पायो ॥
प्रथम सृष्टि करता जब कीनी । तब रनवृत्ति छत्रियनि दीनी ॥

१—छानी = छत्त, छप्पर, खपरैल "मुलकन को परै न छानी" से अभिप्राय है कि देश भर में घरों पर छाया न रहने दी जायगी अर्थात् देश उजाड़ दिया जायगा । २—बिरद = बान, टेक, यश ।

पग पग अश्वमेध फल चाहै । तै कृपान रन सनमुख बाहै ॥
भेदत भानु सुभट रन माचै । रन में रुद्र ताल दै नाचै ॥
रन अवलोकि अमर सुख पावै । रन में उमड़ि अपछरा गावै ॥
रन में रुपे सुजस जग छावै । तातै रन छत्रिन कैां भावै ॥

दोहा ।

जैा रन कैा सनमुख पिलै, मिरजा बड़े जुझार ।
तैा सेल्हन घमके मचै, समसेरन झनकार ॥ ५ ॥

छन्द ।

जो उछाह रन के बढ़ि आये । है बर दये पांच पहिराये ॥
दीनें पान सँदेस सुनाये । रन बनवोरन के मन भाये ॥
पै हम इन्है रोकिहैं तैालैां । फिर न आइहै उत्तर जैालैां ॥
जैा मिरजा दै चैाथ पठाई । तैा सलाह निबही ठिकठाई ॥
दिन दस बाट हेरिहैं आछै । मनभाई करिहैं ता पाछै ॥
चले पचैार बिदा ह्वै ज्यैांही । बजे निसान कूच के त्यैांही ॥
चहूँ चक्र माचै भय भारे । तिन समाल पर डेरा पारे ॥
दल की दैार जैान दिसि जानी । तहां समाधानी ठिक ठानी ॥

दोहा ।

फिरि पचैार ह्वांतै गये, सुतरदीन के तीर ।
गोसे ह्वै बातैं कही, टारि सभा की भीर ॥ ६ ॥

छन्द ।

देखे बली बुँदेला गाड़े । जोति जोति फैाजै मन बाढ़े ॥
विग्रह करै वे न बस ह्वैहै । हितु कीनै फिरि छोर न छैहै ॥
जाकी धर्मरीति जग गावै । जो प्रसिद्ध बलवंत कहावै ॥
लै अवतार बड़े कुल आवै । जुद्धन जुरै जगत जसु छावै ॥
जाहि जोट भैयनि कैा भावै । करत अनारबी[1] न बन आवै ॥
सत्य बचन जाके ठिक ठाये । प्रीति जोग ये सात गनाये ॥

१—अनारबी = अनार्यपन ।

इनसैां भूलि विरोध न कीजै । साम दाम सों बस करि लीजै ॥
जो वे चैाथ देस की पावैं । तैा काहे को द्वंद[1] उठावैं ॥

दोहा ।

ऐसै मंत्र सुनाइ कै, रहे पांच गहि मैान ।
त्याैं मिरजा बोले तमक, कही बात यह कैान ॥ ७ ॥

छन्द ।

जैा हम सत्रु चैाथ दै साधैं । तैा हथ्यार काहे को बांधैं ॥
वाकन लिखि खबर जैा धावै । तैा हमकैां बदनामी आवै ॥
जान प्रबीन तुम्है हम भेजा । तुम तैा दिया जलाइ करेजा ॥
यों कहि ह्वां तैं पांच उठाये । सैयद सेख पठान बुलाये ॥
सब सों कही सजैा असवारी । करो जूझ की सबै तयारी ॥
सब सों जीति जीति मन बाढ़े । रन मैं रुपन बुँदेला गाढ़े ॥
उचकै फैाज इहांतैं धावै । लैन हथ्यार न कोऊ पावै ॥
जिहि दिसि होत खरी हुसियारी । पैठो ताकी ताक पछारी ॥

दोहा ।

काटि कटक किरवान बल, बाँटि जंबुकनि देहु ।
ठाठ जुद्ध इहि रीत सों, बाट धरन धरि लेहु ॥ ८ ॥

छन्द ।

लगा लगाइ उमड़ि दल धाये । घाट छोड़ि ग्रैाघट ह्वै आये ॥
ठैार ठैार इत चढ़ी रसोई । भोजन कहो कैान बिधि होई ॥
धूरि धुंध नभमंडल देखी । आँधी उठी सबनि उर लेखी ॥
छत्रसाल के तुरग नवीनै । चैाकिन खरे काइजा कीनै ॥
त्याैं छत्रसाल बुद्धि उर आनी । चढ़ी चमू तुरकन की जानी ॥
ह्वै असवार तुरी झमकाये । दल मैं सबनि हथ्यार बँधाये ॥

---

[1]—द्वंद = द्वंद ।

सुभट छ सातक आपु अकेला। दल सनमुख कीनौ बगमेला॥
कही पुकार चलत हम आगे। पहुँचौ सबै लाग[1] के लागै॥

दोहा।

ज्यौं अरिदल सनमुख पिल्यौ, छत्रसाल रनधीर।
कुंभ सूनु सनमुख चल्यो, सोखन समुद गँभीर॥ ९॥

छन्द।

सुभट घटा कवचनिजुत कारी। उमडत आवत निकट निहारी॥
त्यौं छत्रसाल जुद्धरस छाये। तानि कमान बान बरषाये॥
कवच समेत कवचधर फूटै। सँग के सुभट बाघ से छूटै॥
करी उमड़ि सेल्हन घन धाई। हठि हरौल की गोल हलाई॥
ठेल हरौल गोल जब हंकी। जूझ्यौ परसराम सोलंकी॥
उदभट ग्रौर उकिल सब आये। दुहूँ तिन असवार गिराये॥
झलकी बदन सबनि कै लाली। हांकी[2] हरषि आपनी पाली[3]॥
उठी हूल अरिबल अधिकारी। कोसक लौं भगि गई पछारी॥

दोहा।

त्यौं मिरजा अपनी अनी, थाँभी तबल बजाइ।
कही सबनि सौ बलगनै, लेहु गनीम न जाय॥ १०॥

छन्द।

जौलगि तुरकन कटक सम्हारे। तौलगि कढ़ि बनबीर हँकारे॥
सनमुख घाट तोपचिन बाँधे। कलह कराल क्रुद्ध ह्वै काँधे॥
उमड़ि चमू तुरकन की धाई। बनबीरन गोलिन झर लाई॥
सैयद सेख पठान अन्यारे। गिरे खेत गोलिन के मारे॥
हटे न मीर जुद्धरस भीनै। धरि धरि लोथ मोरचा कीनै॥
घनै मीर बनबीर उछीनै। पेलि मतंग घाट उन लीनै॥

१—लाग के लागे = सहायता के लिये। २—हांकी = आगे बढ़ाई।
३—पाली = दल।

छुटत घाट करकै पग रोपे। त्यौ पठान पैठे उत कोपे॥
तहँ मिरजा रन के रस भीने। बाँधि कतार गोल द्वै कीने॥

दोहा।

दुहूँ ओर द्वै गोल करि, बाँधी बार कतार।
जनु रन कौ द्वै सिखिर कौ, जंगम भयो पहार॥ ११॥

छन्द।

पिले पठान जुद्धरस बाढ़े। रन में रुपे बुँदेला गाढ़े॥
माची मार दुहूँ दिस भारी। जनि जम दई तमकि करतारी॥
उमड़ि नरायनदास हँकारयो। सोक सँहार घाट तन धारयो॥
बिरचि अजीतराइ रन कीनौ। मीरनि मार घाट तब लीनौ॥
बालकृष्ण बिरच्यौ मन आछै। घाउ छोड़ि पग धरयौ न पाछै॥
गंगाराम चौदहा चाँडो। लरयौ बजाइ खेत में खाँडो॥
मेघराज परिहार अगाऊ। रन में रुप्यो[1] हनन अरिसाऊ॥
सनमुख पिल्यो राममनि दौवा। अरु हरौल के हने अगौवा[2]॥

दोहा।

लरे हाँक हिंदू तुरक, झरयौ सार सौ सार।
भये भानु रथ रोक कै, कौतुक देखनहार॥ १२॥

छन्द।

ठिले मीर सनमुख त्यौं बाँके। त्यौं रन उमड़ि बुँदेला हाँके॥
भारी भीर परी जब जानी। छत्रसाल कर कढ़ी कृपानी॥
बखतरपोस हला करि काटे। रुंड मुंड रनमंडल पाटे॥
फौजदार मिरजा कौ प्यारौ। जूझौ बरगीदास अन्यारौ॥
बरगीदास कस्यो रन ज्यौंही। परयौ चाल मिरजा कौ त्यौंही॥
गिरे तुरक छत्ता के मारे। जोजन लौं धर[3] पै धर डारे॥

१—पाठान्तर—रुप्यो। २—अगौवा = अग्र भाग, आगेवाले लोग।
३—धर = धड़, शरीर।

खायौ चाल सुतरदी हारे। गरबप्रहारी गरब उतारे॥
दल बिडारि डेरन पर आये। पाई फतै निसान बजाये॥

दोहा।

सुरतद्दीन कौ कूटि दल, लीनी चौथ चुकाइ।
पहुँचे दल दरकूच ही, चित्रकूट कौं जाइ॥ १३॥

इति छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते सुतरदीनपराजयो-
नामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

—:-◯-:—
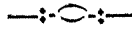
उन्नीसवाँ अध्याय।

—○—

छन्द।

तहाँ हमीदखान चढ़ि आयौ। तासौ जुद्ध जीति जस पायौ ॥
ह्वांते फिरत बीरगढ़वारे। तीन बेर रन में रुपि मारे ॥
ह्वांते दौरि गड़ौला तौरयौ। गज धक्कनि नरसिँहगढ़ मोरयौ ॥
रैंड मारि पैरछ परजारी। कचर कनार कालपी डारी ॥
उरई अरु खगसीस उज्यारी। दौरि दलनि बरहट त्यों बारी ॥
लै अस्तापुर सौह सँहारी। धारि उमंडि सलापुर पारी ॥
चहुँ दिसि घेरि कोटरा लीनौ। जूझ लतीफ मास द्वै कीनौ ॥
उपराला करि सक्यौ न कोई। संकित भयौ लतीफ गढ़ोई ॥

दोहा।

त्यों हमीर आयौ तहाँ, तुरत घँघेरो धीर।
डाँड चुकायौ लाख भर, मरत बचाये मीर ॥ १ ॥

छन्द।

दासी धरैं चमू उचकाई। बचे मीर घर बजी बधाई ॥
घेरि डाँड चंडौत चुकायौ। फिर खंडौत मुकाम बजायौ ॥
चौकी पठै कालपी दीनो। चौथ मौदहा लै की लीनी ॥
खेर महेरा की सब मारी। दल की दौर बिहौनी बारी ॥
वारपार के जुरे मवासी। नदी बेतवै तट के बासी ॥
सब गाँउ बीसक के धाये। समर ठानि उपहर[1] कौ आये ॥

1—उपहर = नदी के ऊपरी भाग पर की भूमि।

अपनी भीर जान अधिकारी[1]। दल पै दियौ दरेरो[2] भारी ॥
सब निसि छोड़ दरेरो दीनौ। भोरहि उठत जुद्ध जुरि कीनौ ॥

दोहा।

जुरे जुद्ध कर तेग लै, पंचम के असवार।
गंजि गोल गरबीन के, करै अरिन पर वार ॥ २ ॥

छन्द।

तेगनि वार करन भट लागे। छाँड़ि समाधि त्रिलोचन भागे ॥
बही तेग पंचम की ऐसै। बाढ़ै[3] लपट खात खर जैसे ॥
ऐसे कछू ठाट बिधि ठाटे। चारि हजार खेत अरि काटे ॥
खाइ मास मसहार अघाने। जोजन दसक गीध मँडराने[4] ॥
पाई फतै मुस्करा लूट्यौ। कुलि मवास कौ फाटिक टूट्यौ ॥
भये मवासी सबै अधीनै। तब जलालपुर डेरा कीनै ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते हमीदखान सेद लतीफ बसि मवासी पराजयो नाम ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

—:०:—

१—अधिकारी = बलवती, अधिक।

२—दरेरो = अचानक धावा बंदूकें चलाते हुए।

३—जैसे लपट चलने पर गदहा एक एक तृण बीन कर खा जाता है और कुछ नहीं छोड़ता वैसे बुँदेल वीरों की कृपाण ने रण में कोई शत्रु न बचने दिया सब को मार गिराया।

४—मँड़राने = उमड़े।

बीसवाँ अध्याय ।

—:०:—

छन्द ।

त्यौंही पातसाह फरमायौ । अबदुलसमद साजि दल धायौ ॥
सजे समद के संग सिपाही । साहिन जिनकी तेग सराही ॥

दोहा ।

सैयद सेख पठान सब, सजे समद के संग ।
सार बजत ते समर में, बढ़ि बढ़ि चढत उमंग ॥ १ ॥

छन्द ।

सजि दल अबदुलसमद उमंड्यौ । धूरधार नभमंडल मंड्यो ॥
बजे गाजधुनि निडर नगारे । गजे मेघ ज्यौं गज मतवारे ॥
पखरै तुरी तरल तन ताजे । बखतरपोस सुभट छबि छाजे ॥
बान जजाल रहकला तोपै । सुतरनाल हथनालनि ओपै ॥
उमड़त फौज सहस दस आई । भई छतारे की मनभाई ॥
बखतर बांटि सिपाही साजे । निकट समद के दुंदुभि बाजे ॥
त्यौं छत्रसाल समद के सोहै । भयो खेत चढि भाइ भिरोहै ॥
दहिनी दिसि बलदाऊ ठाढ़े । जिहि थल भरक भिराऊ गाढ़े ॥

दोहा ।

राजत दैावा राइमनि, बांई तरफ अडोल ।
उमगत अगहर जूझ कौं, ताकन प्रतिभट गोल ॥ २ ॥

छन्द ।

आवत कटक समद कौ देख्यौ । सूरन जनम सुफल कर लेख्यौ ॥
दुहुँ दल बंदिन बिरद सुनाये । दुहुँ दल कलह कंधि भट आये ॥

दुहूँ दलनि धौंसा घहराने। दुहूँ दलनि बानै फहराने॥
दुहुँ दल छार छटा छहराने। दुहुँ दल चंड लोह लहराने॥
दुहुँ दल बीर झुंड झहराने। दुहुँ दल सिंहनाद कतराने[1]॥
दुहुँ दल ठीह तुरंगनि दीनो। दुहुँ दल बुद्धि जुद्धरस भीनो॥
दुहूँ दलनि दोऊ दल ताके। दुहूँ दलनि मानै रन साके॥
दुहुँ दल पिले हरौल अगाऊ। दुहुँ दल बाजे तबल जुझाऊ॥

दोहा।

उठे ढीठ ढाढीन के, दुहुँ दिस झनक रबाब[2]।
झलझलाइ बुंदा उठे, सूबनि के मुख आब॥ ३॥

छन्द।

छूटे बान[3] कुहु कुहु कुहु बोला। नभ गननाइ उठे[4] गुरु गोला॥

१—करराने = तीव्र हुए। २—रबाब = शुद्ध शब्द रुआब है, आतंक।

३—छुटे बान कुहु कुहु कुहु बोला = बान से यहाँ अभिप्राय शर से नहीं है। बान एक प्रकार का मिट्टी का नल २० इंच के लगभग लंबा होता था और इसका व्यास ३ इंच के लगभग होता था और इसका दल मोटा होता था, इसमें बारूद भर कर मिट्टी की डाट लगाते थे और बारूद से पलीता लगा रहता था। इसके साथ एक ठोंस बांस की सात, आठ सात फुट लंबी छड़ लगी रहती थी और बान चलाते समय यह छड़ फाड़ दी जाती थी। फलीते के द्वारा आग पहुँचते ही यह बान शत्रु दल पर जिस ओर छोड़ा जाता था उस ओर उड़ कर जाता था और शत्रु-सेना मे गिर कर चक्कर काटने लगता था। बाँस की फटी हुई छड़ उसी के वेग से घूमती थी और जिस पर पड़ जाती थी उसे आहत कर यमराज को सौंप देती थी। इन बानों के उड़ते समय उनसे कुहु कुहु शब्द निकलता था। ऐसे बानों का प्रचार सन् १८५७ के गदर के समय तक रहा है। सुना जाता है महारानी लक्ष्मीबाई की सेना के गुसाइयों ने झाँसी के दुर्ग पर से ये बान अंगरेजी सेना पर चलाए थे।

४—गननाइ उठे = सनसना उठे।

तरभर निबिड़ बदूखनि माची। धूम धुंधु नभमंडल नाची॥
दसहूँ दिसनि गई परकारी। देख्यौ समै भयानक भारी॥
गोला गिरन गाज से लागे। बिडर काल के किंकर भागे॥
त्यौं छत्रसाल बीररस छाक्यौ। सनमुख सैन समद कौ ताक्यौ॥
लई राइमनि दौवा बागै। पैठ्यो उमड़ि सबनि तै आगै॥
कौतुक लखत अमर अनुरागे। जूझन सुभट परस्पर लागे॥
बिरच्यौ बिकट राइमनि दौवा। घाइ खाइ अरि हनै अगौवा॥

दोहा।

दौवा की चौकी लरी[1], करी पसर बिरझाइ।
कौन गनै बैरी घनै, दीनै खेत खपाइ॥ ४॥

छन्द।

तुरकन तमकि पसर त्यौं कीनी। इतहि बुँदेलनि बागैं लीनी॥
हिंमत कौं जसवंत कहावै। जूझत खग्ग बहबहे[2] पावै॥
भावतराइ पमारु रिसानौ। भाइ मरद जूझौ मरदानौ॥
पाइक सबदलराइ हँकारयौ। सारु पैरि रविमंडल फारयौ॥
लागर भोज पसर करि धायौ। स्वामि हेत तन खेत खपायौ॥
त्यौं दलसाह मिश्र पन पाल्यौ। रन सनमुख तन तजत न हाल्यौ॥
किसुनदास जूझौ मन आछे। उदैकरन पग धरयौ न पाछे॥
काम भले भाई तहँ आये। सूरजरथ के तुरी कहाये॥

दोहा।

लरे सुभट भट उमड़ि कै, अरे[3] बुँदेला बीर॥
परे परस्पर खेत कटि, टरे न टारे धीर॥ ५॥

छन्द।

त्यौंही समद हला उठि बोल्यौ। कवच धरन खग्गन खिझ खोल्यौ॥
लरयौ अजीतराइ असि धाई। मुँह मुँह दै मुँहई मुँह खाई॥
मेघराज हरजू गलगाजे। घाइ ओड मारे अरि ताजे॥

१—पाठांतर = परी। २—बहबहे = साधुवाद, वाहवाही, शाबासी।
३—अरे = अड़े रहे।

घाइ दयाल गौतमहि आये । बले बैसु घाइल ठिकठाये ॥
भूपतिराय बैस थल गाढ़े । घाइ खाइ बिरच्यौ बल बाढ़े ॥
रननायक घनश्याम लछेड़ौ । सनमुख घाउ बच्छ पर ओड़ौ ॥
त्यौंहि दौरि रावत रिस कीनो । घाइल ह्वै घाइक सिर दीनो ॥
ईसफखान भिरयौ रिस भीनौ । रीझि तुरंग घाउ तन लीनौ ॥

दोहा ।

परत भार घाइल लरत, कर सै सुभट समाज ।
ओड़ि अस्त्र सनमुख पिले, राखि हिये रनलाज ॥ ६ ॥

छन्द ।

त्यौं पंचम के भाट अन्यारे । जगतराइ अरु नवल हँकारे ॥
प्रेमसाह बृत्तीसुर चाँडौ । सनमुख पैठि खेत जिन माँडै ॥
राना रामदास धसि धायै । बलगि उछाल सेल्ह अजमायै ॥
त्यौं पवार सुन्दरमनि हाँके । मल्ल सुजान पिले रनबाँके ॥
सभासिंह त्यौं तुरग झमंक्यौ । बली अलीखां उमड़त मंक्यौ ॥
हंक्यौ हरजूमल्ल गहोई । उदैकरन रन भयै अगोई ॥
धुरमंगद बगसी बिरझानौ । नाहरखां नाहर झहरानै ॥
फतेखान त्यौं रनरस छाक्यौ । सो मारयौ जो सनमुख ताक्यौ ॥
ये सब सुभट बाघ से छूटे । उत तै तमकि तुरक रन जूटे ॥

दोहा ।

लरे उमड़ि दुहुं ओर भट, झरे सार सौ सार ।
बजे उमड़ि हरगन नचे, गजे गोल सिरदार ॥ ७ ॥

छन्द ।

कढ़ि सिरदार गोल तै गाजे । आनन मनौ मजीटन माजे[1] ॥
अंगदराइ रतन बल बाढ़े । सनमुख पिले धोप कर काढ़े ॥

१—आनन मनौ मजीटन माजे = मुख लाल हो गये । मजीठ आल को कहते हैं जिसका रंग बड़ा पक्का होता है और लाल होता है । बुंदेलखंड में खारुवा इसी से रँगा जाता है ।

उमड़ि नरायनदास हँकारयौ । देवकरन करवर झुक झारयौ ॥
अमरसाह कर कढ़ो कृपानी । पृथीराज बलग्यो वर बानी ॥
राइ अमान तेग कर लीनी । उमड़त ओप कटेरहि दीनी ॥
भारतसाह हाक दै धायौ । त्योंही आसकरन छबि छायौ ॥
रूपसाह रनरंग रिसानौ । परबतसाह पिल्यौ मरदानौ ॥
सबलसाह बरछौ फिर फेरयौ । केसौराइ रोस करि हेरयौ ॥

दोहा ।

और बहुत उमड़े सुभट, कहौं कहां लगि नांउ ।
उतै समद के सूरमा, भिरे रोष रन पांउ ॥ ८ ॥

छन्द ।

उठिली भीर समद की भारी । कवचनि झटनि भीर भयकारी ॥
लखि छत्रसाल उमगि मन बाढ़े । बीरन ओप दई रन गाढ़े ॥
रनरस फूल भीम छबि लूटी । करकर[1] करी[2] कवच्च की टूटी ॥
उठे फरक भुजमूल ठिकाने । मूछन सहित पखा[3] तरराने ॥
उठ्यौ करखि हिय हरषि बुँदेला । बाढ़े रन बहसनि बगमेला ॥
दुहुं दल बिरचे बीर उमाहे । समर हरोल भयौ सब चाहे ॥
दैदै हांक परस्पर जूटे । मानहु सिंह सिंहन पै छूटे ॥
मार मार दुहुं दिस दल माही । दूजौ और सबद कोउ नाही ॥

दोहा ।

इतहि बुँदेला बीर उत, सैयद सेख पठान ।
दुहुं दल बिरचे परसपर, रचे घोर घमसान ॥ ९ ॥

छन्द ।

तुपक तीर की मिटी लराई । मची सेल्ह समसेरन घाई ॥
बीर बहबहे अस्त्र निबाहै । कौतुक देखत देव सराहै ॥
जो खग्गन खेलत उत काढ़ी । बेलैं जनु बिजुरन की बाढ़ी ॥

१—करकर = तड़ातड़ । २—करी = कड़ियाँ, छल्ले । ३—पखा = गलमुच्छे ।

टोपन टूटि उटै असि सच्छी। दह में मनौ उछलै मच्छी[1] ॥
दुहुं दिस बीर जुद्धरस माते। कटत परस्पर होत न हाते ॥
असवारहिं असवार अरूझै। पैदर झुकु पैदर सन जूझै ॥
पखरैतन पखरैत हँकारे। कवचधरनन कवचधर मारे ॥
यौं घमसान परस्पर माच्यौ। डमरु बजाइ रीझि हर नाच्यौ ॥

दोहा।

नाच्यौ समर बजाइ हर, मच्यौ घोर घमसान।
छके बीर रनरंग में, थके रोपि रथ भान ॥ १० ॥

छन्द।

भानु लखत कौतुक रथ रोपै। लरत बीर आनन दुति ओपै ॥
देवकरन केसरिया बागे। उमग्यौ भिरत जुद्धरस पागे ॥
सो सिरदार पठान न जान्यौ। सबनि उमड़ि जीतन उर आन्यौ ॥
यह छत्रसाल आइ रे भाई। यौं कह घालि उठे घन घाई ॥
अंगद कौ अंगद के पाइन। भिरयौ ओडि अरि के घन घाइन ॥
जौ लगि एकहि हनै अगाऊ। तौ लगि चारिक भिरै भिराऊ ॥
चारिक मारि खेत पर डारै। तौ लगि दस के झुंड हँकारे ॥
खाइ घाइ दस दसक गिरावै। तौ लगि वृंद बीस कौ धावै ॥

दोहा।

देव करन पर यौं परयो, असि मंडल घन घेर।
बिजुली वृंद सुमेर के, मनौ लरयो चहुँ फेर ॥ ११ ॥

छन्द।

घनै घाइ सिरही सिर लागे। तीनक घाइ तुरग तन जागे ॥
पाइन अचल हाथ चल कीनै। हाँकतु भिरत जुद्धरस भीनै ॥
सुभट भतीजे ऊपर भारी। परी भीर छत्रसाल निहारी ॥
अरुन रंग आनन छबि छाई। अरि सिर घालि उठ्यौ घन घाई ॥

१—मच्छी = मछली।

काटि कवचधर पुंज उठाये। मीचु बदन तें देव बचाये॥
अरिन अजीतराइ त्यौं घेरे। तिहिं थल छत्रसाल तब हेरे॥
ते दरबर ही दौर उबारे। जम से जमन जौम जुत मारे॥
परी भीर जिहिं ओर निहारे। तिहिं दिस तुरकन के दल फारे॥

दोहा।

या बिधि श्री छत्रसाल के, पौरुष कौं पहिचानि।
परे उमड़ रन हांक दै, तुरक तौम[1] त्यौं आनि॥ १२॥

छन्द।

बखतर पोस तीन बल बाढ़े। तिहू ओर तरवारें काढ़े॥
दहिनी दिस पीछै अरु आगे। उठे घाल घाई रीस पागे॥
उठ्यो हंकि हय झमकि छतारौ। कीनो तहां अचंभौ भारौ॥
चोट चुकाइ तिहुन की दीनो। आपु उमड़ि मनभाई कीनो॥
पछिलै हांकि हूल सौं मारयो। काटि दाहिनै कौं कर डारयौ॥
सोंहै सौं सोंही[2] असि झारी। तीन सुभट रन दई हँकारी॥
बिरच्यौ रन छत्रसाल बुँदेला। कियौ खभरि खग्गनि खिझ खेला॥
एक ऊमक अरु दमक सँहारै। लेहि सांस जब बीसक मारे॥

दोहा।

छत्रसाल जिंहि दिस पिलै, काढ़ि धोप[3] कर मांहि।
तिंहि दिस सीस गिरीस पै, बनत बटोरत नांहि॥ १६॥

छन्द।

छत्रसाल जिंहि दिस धसि[4] धावै। तिंहि दिस बखतरपोस ढहावै॥
कटि अरिमुंड उछालत कैसे। बटनि[5] खेल खेलतु नट जैसे॥
रुधिर भभकि रुंडन ज्यौं मंडी। मानहु जरत टुंड[6] बनखंडी[7]॥
घूमन लगे समर में घैहा। मनहु उभान भाउ भर मैहा॥

१—तौम = दल, झुण्ड। २—सोंही = सीधी। ३—धोपे = चौड़ी तलवार। ४—धसि = घुसकर। ५—बटनि = बट्टो का, गोलियों का। ६—टुंड = ठूँठ। ७—बनखंडी = जंगल में।

कौन कौन की मार गनाऊँ। असी सवार संग तिंहि ठाऊँ ॥
दलमल फौज समद की डारी। रचनहार कौ मुसकिल पारी ॥
बल दिवान त्यों हल्ला बोले। बिरचि खेल खग्गन के खोले ॥
सनमुख सुभट समद के कूटे। तौपै और रहकला लूटे ॥

दोहा।

लुट्टत रहकला ऊँट हय, रखत कनातनि खोट ॥
रवि अपनो रथ लै दुरयो, अस्ताचल की ओट ॥ १४ ॥

छन्द ॥

रवि अस्ताचल ओट सिधाये। कछुक तिमिर अंकुर छिति छाये ॥
डेरन कौ करनातै दीनी। लोथै[1] मांगि समद सब लीनी ॥
दियौ दाग इन उन खनि[2] गाड़ी। रन भारत फिर रार न माड़ी[3] ॥
दाग देत घटिका इक बीती। गोरैं[4] खनत राति सब रीती ॥
चौथ चुकाइ कूच निरधारे। समद कलिंदी पास सिधारे ॥
छत्रसाल परना[5] कौ आये। जग में जीत निसान बजाये ॥
रहे आपु परना में तौलैं। सुरहे[6] घाइ सबनि के जौलैं ॥
सुनी समद की सबनि लराई। सूबनि दिल में दहसत खाई ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते अबदुलसमद पराजयो नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

१—लोथ = शव। २—खनि = खोदकर। ३—माड़ी = की।
४—गोरैं = कबरै। ५—परना—पन्ना, यह बुंदेलखंड की छत्रशाली गद्दी का एक बड़ा प्रतिष्ठित राज्य है। पन्ना नगर का प्राचीन नाम परना था।
६—सुरहे = पूरे हुए, भर आये, अच्छे हो गये।

इक्कीसवाँ अध्याय ।

—:०:—

दोहा ।

टीला लरि गजसिंह धरि· छांड़ो डांड चुकाइ ।
लूटि भैलसा की मुलक, दीनी आग लगाइ ॥ १ ॥

छन्द ।

आग लगाइ देस में दीनी । सुनि बहलोलखान रिस कीनी ॥
त्यौं दल सजि इलगारन धायौ । मरद मयानौ जौ जग आयौ ॥
नौ हजार बखतरिया ताजे । देत पाइरै पाइग[1] राजे ॥
धामौनी तै चढ्यो मयानै । बाँधे सीस जूझ को बानौ ॥
जगतसिंह बानैत बुँदेला । आड़े भयौ मोड़ि बगमेला ॥
संग तीन सै तुपक सकेले[2] । नौ हजार सौ लर्‌यो अकेलै ॥
अर्‌यो उमड़ि मड़ियादुहु मैड़ै । तुरक दरेरि चल्यौ तिहि पैड़ै ॥
फौज कोस चारक पर आई । बन बाघन तंह मार मचाई ॥

दोहा ।

मड़ियादुहु तै उमड़िकै, कोस चार पै धाइ ।
डेरा परत दमानिकिन, मारे तुरक बजाइ ॥ २ ॥

छन्द ।

गिरे तुरक चालिस बल बाढ़े । नौक नौक लसगर तैं काढ़े ॥
त्यौं बहलोलखान रिस कीनी । तुरतहिं बंब कूच की दीनी ॥
ठिल्यो उमड़ि मड़ियादुह सोहै । जगतसिंह तंह अर्‌यो भिरोहै ॥
चढ़ि मड़ियादुह सौं दल लागै । उमड़ि पठान भिरे रिस पागै ॥
बान बाँधि उलस्यौ गलदारै । नौकि नौकि लसगर तै मारै ॥
ज्यौं ज्यौं तमकि तुरक रन जूटे । त्यौ त्यौं गोलिन सौ रन फूटे ॥

1—पाइग = घुड़सवारों की सेना, रिसाला । २—सकेलै = इकट्ठा किये हुए ।

खाइ खाइ गोलिन की चोटैं। रनमंडल लोटन[1] से लोट ॥
जो दिन में हनि डुवन करेरे[2]। रात कटक पर दिये दरेरे ॥

दोहा।

सात द्यौस इहि बिधि लरे, बान बांध बलवंत।
रातिहु दिनहु ठठाइ कै, करै ठोंठरे दंत ॥ ३ ॥

छन्द।

दंत ठठाइ ठोंठरे कीनै। रहे पठान सकल भै भीनै ॥
जगतसिंह के बजे नगारे। कढ़े दरेर बैरि मद गारे ॥
पंचम जगतसिंह कौ मारयौ। सूबा संक हहर हिय हारयौ ॥
छत्रसाल कौ सुभट भतीजौ। मानहु नैन रुद्र कौ तीजौ ॥
जहां हरौल हनू ह्वै ऐसै। तहां रामदल ह्वैहै कैसे ॥
कियौ मुकाम सोच उर बाढ़े। रन में बिकट बुँदेला गाढ़े ॥
करत बिचार कछु न बनि आवै। पातसाह कैसे सुख पावै ॥
तब उर में साहस धरि धायौ। सूबा उमड़ि राजगढ़ आयौ ॥

दोहा।

छत्रसाल बैठ्यौ जहां, उमगतु अरिदल हेरि।
उमड़ दलन सूबा तहां, लयौ राजगढ़ घेरि ॥ ४ ॥

छन्द।

सूबा उमड़ि राज गढ लाग्यो। छत्रसाल जंह रनरस जाग्यो ॥
पिले तुरकदल उमड़त आवै। गढ़ की सीवन दाब न पावै ॥
ओड़ि ओड़ि अरि के बगमेला। गढ़तै कढ़ि कढ़ि लरै बुँदेला ॥
खान खपाइ खेत में डारे। मास खाइ मसहार डकारे ॥
हाथी चढ़्यौ हरौल बिदारयौ। ताहि ताकि बनवीरन मारयौ ॥
गिरयौ हरौल हिंदुगन गाज्यौ। हाथी फेरि महावत भाज्यौ ॥

१—लोटन = कबूतर की एक जाति होती है जो गर्दन पर ऊँगली रखने से लोट लगाने लगता है। २—करेरे = कठिन।

सूबा लखी अमारी सूनो। त्यौं बाढ़ी दिल दहसत दूनो॥
तीन द्यौस लौं लरयो मयानौ। चौथे दिन उठि कियौ पयानौ॥

दोहा।

खेत छांड़ि सूबा चल्यौ, दिल मे दहसत खाइ।
छत्रसाल के धाक[1] तै, मच्यौ धमौनी जाइ॥ ५॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते बहलोलखान मयानौ मरणं नामैकविंशोऽध्यायः॥ २१॥

१—धाक = आतंक।

बाईसवाँ अध्याय ।

—:०:—

छन्द ।

छत्रसाल त्यौं करी तयारी । कुटरै मारि जसोपुर जारी ॥
सील सुहावल कौं तंह कीनौ । सासन मानि सीस पर लीनौ ॥
घटरा घेरि बनाफर मारे । मरद महोबै डेरा पारे ॥
मौधा लूट महा मन भाये । उमड़ि कटक सिँहुड़ा पर धाये ॥
तहां मुराद खान मरदानो । उतै दलेलखान को थानौ ॥
बैठ्यो पैँठ चौथ बिन दीनै । जौम[1] दलेलखान की लीनै ॥
तहां दल छत्रसाल के लागे । लरे पठान जुद्धरस पागे ॥
कढ़े कोट तैं करि खरु हेला । ओड़ि बुँदेलन के बगमेला ॥

दोहा ।

समसेरन सेल्हन तहां, मच्यो घोर घमसान ।
घटे न मन जिनके लरत, कटे हजार पठान ॥ १ ॥

छन्द ।

खेत मुरादखान तंह आयौ । लूट्यौ कटक जहां भर पायौ ॥
छूट्यौ बैरीसाल[2] दतारौ[3] । झूकत झुमत सदा मतवारौ ॥
लूटे अतुल निसान नगारे । तंबू लुटे कनातनि बारे ॥
लये लूट चौदह सै घोरे । फिरत कटक में डोरे डोरे ॥
लुटे खजाने तोसहखाने[4] । लुट्यो सहर केतिक को जानै ॥
जौ दलेल सूबा गजजायौ । अति बलवंत साह मन भायौ ॥
खाइ सेर बीसक की रानै[5] । धकाधकी हाथिन सौ ठानै ॥
जाके धाक चहूं दिस धावै । रन में ताहि कौन विरमावै[6] ॥

१—जौम = अभिमान । २—बैरीसाल = हाथी का नाम था । ३—दतारौ = भीषण दांत वाला । ४—तोसहखाने = शुद्ध तोशाखाना । ५—रानै = पशुओं की जांघे । ६—विरमावै = रोकै ।

दोहा ।

छत्रसाल ताकौ सहर, लसगर[1] लीनौ लूट ।
कुल दिल्ली दल बहल कौं, गयौ धुरा सौ लूट ॥ २ ॥

छन्द ।

वाकनि खबर लिखी ठिकठाई । सो हजूर हजरत के आई ॥
चंपति के छत्रसाल बुँदेला । लियौ लूटि सिहुड़ा बगमेला ॥
मरद मुरादखान रस मारयौ । गरब दलेलखान कौ गारयौ ॥
यह सुनि साह कछु न रिस आनी । छत्रसाल की जीत सुहानी ॥
कबहु दलेल जौम जिय जागै । बोले हुतै साह के आगै ॥
ताकौ अनखु उतै उर छायौ । सो कहिवे कौ ऊतर पायौ ॥
त्यौं दलेल मुजरा कौं आयौ । पातसाह यह किसा सुनायौ ॥
भुजा भतीजे की बल बाढ़ी । खेल्यो खेल चचा की डाढ़ी ॥

दोहा ।

यह सुन स्रवन दलेलखां, रह्यौ अचंभौ भोइ ।
यह धौं साह कह्यौ कहा, अर्थ अनूपम गोइ ॥

छन्द ।

मुजरा करि डेरन कौं आये । पहुँचे लिखे देस तैं पाये ॥
लिखी खबर जैसी इत बीती । परी मुलक पर धार अचीती ॥
मांग चौथ छत्रसाल पठाई । सो बिन दिये फौज चढ़ि धाई ॥
लरे पठान उमड़ि रिस बाढ़े । दंतनि चाबि लोह कौं काढ़े ॥
त्यौं पिलि सेल्ह बुँदेलनि बाहे । सहस पठान खेत में ढाहे ॥
कट्यौ मुरादखान मन आछै । रन सनमुख पग धरे न पाछै ॥
फर[2] में फतै बुँदेलनि पाई । लूट मताह[3] करी मन भाई ॥
खबर दलेलखान यह बाची । रिस बढ़ि कुटिल भृकुटि चढ़ि नाची ॥

१—लसगर = शुद्ध-लश्कर, सेना की छावनी, या सेना का बाज़ार ।
२—फर = रणभूमि । ३—मताह = माल ।

दोहा ।

नाची रिस भृकुटीन चढ़ि, जान्यौ जीवन बाद[1] ।
बिदा चाहि चित साह सो, तुरतहि करी फिराद ॥ ४ ॥

छन्द ।

तहां साह यह ऊतर दीनो । पावै क्यों न आपनो कीनो ॥
लोन खाइ जो जैाम[2] जनावै । क्यों न सजाइ हालही पावै ॥
खिसी दलेलखान उर छाई । याद अनूप अरथ की आई ॥
डेरा दिये बार अनखानै । हाथ मीड मन मन पछितानै ॥
कछु दिन गये सुमति उर आई । होनहार सों कहा बसाई ॥
तब दच्छिन तै लिखे लिखाये । छत्रसाल के पास पठाये ॥
यह कछु लिखी लिखन मैं आई । चंपति हुते हमारे भाई ॥
तुम उत करी कथा यह जैसी । तुमै बूझियत[3] हुई न ऐसी ॥

दोहा ।

लिखे बांचि छत्रसाल तब, कियो सलूक बिचारि ।
ढरे सांच सों सांच ह्वै, बिग्रह दियो बिसारि ॥ ५ ॥

छन्द ।

चैाथ बँधाइ देस में लीनी । सामा[4] सबै फेरि तब दीनी ॥
दियो फेरि नीसान नगारो । दियो फेरि हाथी मतवारो ॥
तोपैं दई फेरि मन भाई । जग में जाहिर करी बड़ाई ॥
धनि छत्रसाल सुजस जग गावै । ऐसी बिधि कासों बनि आवै ॥
काटत पहिल काटई डारी । फेरि पटोरै पोंछि सुधारी ॥
सिहुड़ा चुकी चैाथ मन मानी । त्यौं मटैांध पर फैाज पलानी ॥
भुनिया जुरे तहां ठिकठाये । अरु पठान मैांधा के आये ॥
हिंदू तुरक जुरे तंह ऐसे । भरत तीर तरकस में जैसे ॥

१—बाद = व्यर्थ । २—जौम = अहंकार । ३—बूझियत = उचित ।
सामा = सामान ।

दोहा ।

उदभट भीर मटौंध मे , जुरी ठान रनठान ।
उमड़ि दलनि तासौं लग्यौ , छत्रसाल बलवान ॥ ६ ॥

छन्द ।

तीन तरफ ह्वै मटवध[१] घेरयौ । कठिन कोट जंह चहुं दिस फेरयौ ॥
मेघ राज बाईं दिस लागे । लीनै संग सुभट अनुरागे ॥
दहिनी दिस उमड़े बलदाऊ । सनमुख छत्रसाल नृप साऊ ॥
धरयौ कोट गढ़धारिन गाढ़ै । दुहुं दिस जुरे सुभट बल बाढ़ै ॥
छत्रसाल के सुभट अगौवा । बागैं लई राइमन दौवा ॥
तब उन एक पलीती[२] दीनी । जगन निरास बिधाता कीनी ॥
बजी बंदूखैं तरभर[३] माची । समर उमंगि कालिका नाची ॥
दौवा तमकि तेग कर लोली[४] । त्यौंही लगी अचानक गोली ॥

दोहा ।

गोली ज्यौं उत ह्वै कढ़ी , बाढ़ तुरीतन फोरि ।
घोरौ लै फर में गिरयौ , भूमि रुधिर में बोरि ॥ ७ ॥

छन्द ।

घाइल ह्वै हरि बंस तहांही । गिरयौ उमँडि रन मंडल मांही ॥
ज्यौं अरि हरषि हूह करि धाये । सिर काटन कौं बलगत आये ॥
त्यौं अनखाइ हियै रिस कीनी । काढ़ि कृपान पानि में लीनी ॥
काटि दुवन सिर संभु नचाये । घाइल दुवौ सुमार बचाये ॥
त्यौं उत ढोल जुझाऊ बाजे । कठिन कोट धरि गढ़धर गाजे ॥
छत्रसाल त्यौं भाइ भिरैाहै । झमकि नैन सोभा भयो सोहै ॥
अरुन रंग आनन छबि लीनै । माथै घूघ[५] लोह की दीनै ॥
घूघहि नाक लोह की लागी । छाती छटा छूट छबि जागी ॥

१—मटवध = मटौंध स्थान विशेष जिला बांदा में है । २—पलीती दीनी = बत्ती लगा दी, आग छुला दी । ३—तरभर = खलबली । ४—लोली = हिलाई । ५—घूघ = शिरत्राण ।

दोहा।

तरल तुरंगम की तनक, तुरत झग्ग झमकाइ।
परदल में हांक्यो छता, खाई कोट नकाइ[1] ॥ ८ ॥

छन्द।

खाई कोट अचानक नाक्यौ। परदल पैठि जतारौ हाक्यौ ॥
काढ़ि कृपान म्यान तैं लीनी। जुरे जुद्ध तिनके सिर दीनी ॥
काटन लग्यौ दुवनदल ऐसे। भिरयौ भीम परदल में जैसै ॥
परवतसिंह संग तंह दीनै। घन घमसान कृपानन कीनै ॥
उत कमनैत[2] अचूक[3] सिपाही। झलक घूघ की चित दै चाही ॥
तिहि सर लोह नाक तकि मारयौ। गाड़्यौ गड़्यौ टरयौ नहि टारयौ॥
सो छवि देख सभु सुख मान्यौ। दूजौ[4] एकदंत करि जान्यौ ॥
यौं छत्रसाल लरे असिघाई। लोथैं गनै सात सै आई ॥

दोहा।

त्यौं अरिदल दहसत बढी, मिले मवासी आइ।
डांड लियौ तंह तुरत ही, सोरह सहस भराइ ॥ ९ ॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते मौधामटौंध-
विजयो नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

१—नकाइ = लंघा कर। २—कमनैत = धनुर्धर योद्धा।
३—अचूक = वह योद्धा जिनका ताका हुआ लक्ष्य कभी खाली नहीं जाता है।
४—दूजो एकदंत करि जान्यो = अर्थात् शिवजी ने उसे बाण से विधा हुआ देख कर दूसरा गणेश समझा।

तेइसवां अध्याय ।

—:०:—

छन्द ।

मारि मटौंध डांड़ लै छाँड़्यौ । फेरि धमौनी बिग्रह माँड्यौ ॥
मारि घुरौरा थुरहट घेरी । चहु दिस आन आपनी फेरी ॥
कोटा मारि कचीरहि[1] आये । खंडि खडैातु करे मन भाये ॥
फिरि जलालपुर दलमल मार्‌यौ । दौरि दलनि बिलगावो वार्‌यौ ॥
उमड़ि बन्होली डेरा पारे । साहकुली त्यौं निकट हँकारे ॥
साहकुली की सुनी अवाई । त्यौं अफगन पड़वारी पाई ।
संग अस्वार चार सै लीनै । पडवारी आये भय भीनै ॥
ढुंढ़ु बुँदेलनि कौ अति भारी । चिंता मनें बड़ी अख्त्यारी ॥

दोहा ।

मीचु अगल सु भीर लै, आये अफगनखान ।
सुनि रनबीरन के हियै, बाढ़्यौ अधिक गुमान ॥ १ ॥

छन्द ।

बढ़े गरब लघु फौज निहारी । होनहार गत टरै न टारी ॥
लूट लूट सूबा बल बाढ़े । भये गरब गज पै चढ़ि ठाढ़े ॥
सबनि परस्पर यौं बल बांधे । बिक्रम ब्यौंत न काहू कांधे ॥
अब यह फौज लूटही लीजै । घेरिन घाउ न कोऊ कीजै ॥
अफगन हियै दीनता धारी । जो दीनता दयालहि प्यारी ॥
मन क्रम बचन यहै चित चाहै । अबकै प्रभु तू सरम निबाहै ॥
मरवैा आगै जुद्ध कौ आयौं । मनो कबध सीस बिन थायैा ॥
हुती न मीच मरै वह कैसे । इनके चले अचानक जैसे ॥

१—कचीर = यह स्थान झाँसी के निकट है और कचीर ककरवई नाम से प्रसिद्ध है ।

दोहा ।

करयौ दवारयौ अरिदलन, परयौ अचानक चाल ।
मुरकि मरकि फिर फिर लरयौ, लै कमान छत्रसाल ॥ २ ॥

छन्द ।

चालु परै जे लरै अकेले । भुजदंडन बल अरिदल पेले ॥
गाढ़ परे हिय हिम्मत आने । तेई सूर प्रसिद्ध बखाने ॥
मुरक लरयौ छत्रसाल बुँदेला । तुरकन के ओड़े बगमेला ॥
बखतर पोस उमंडत आये । तिन पर नमकि बान बरसाये ॥
बखतरपोस पांच तकि मारे । धर पर धर फरके फर डारे ॥
तंह सरदार सेरखां जूझौ । बैरिन ब्यौंत चाल कौ सूझौ ॥
छत्रसाल सौ सुभट न होतौ । तौ दल चलत बजावन को तौ ॥
सबै गरबगिरि दबत उबारे । डेरा आइ मऊ में पारे ॥

दोहा ।

कह्यौ सबनि समुझाइयौ, जिन भजिवे पछिताउ ।
भजे कृष्ण अवतार जे, पूरन प्रगट प्रभाउ ॥ ३ ॥

छन्द ।

कालजमन जब निकट हँकारयौ । सो मुचुकुंद डीठ सौ जारयौ ॥
द्रोनहि पीठ पंडवनि दीनी । कौरव मारि जीत सब लीनी ॥
दई पीठ बलि बावन काजै । ते बस करि राखे दरवाजै ॥
तातैं मन मानौ मत ऊनौ[1] । भीमहि भूमि छुवत बल दूनौ ॥
या बिधि सबै सुभट समुझाये । त्यौंही प्राननाथ[2] प्रभु आये ॥
तिन के मतै फतै फरमाई । सेना सावधान ह्वै आई ॥
दुड़हर जाइ दौर दल मेल्यौ । त्यौं अफगन उमग्यौ दल पेल्यौ ॥

१—ऊनै = खेद ।   २—प्राननाथ = पृष्ठ १२० देखो ।

दोहा ।

भयौ जूझ मुरक्यौ तुरक, घट्यौ ना वाकौ जोर ।
फेरि पुरा के घाट पर, आयौ उमड़ि अमोर ॥४॥

छन्द ।

अफगन अधिक गरब उर आन्यौ । सब तैं बली अपनपौ मान्यौ ॥
जोरि फौज नीसान बजाये । उमहि पुरा के घाटहि आये ॥
छत्रसाल जँह अरे भिरोहै । तहां तुरक पेल्यौ दल सोहै ॥
गोलिन मची मार तंह भारी । परी दिसान धूम अँधियारी ॥
त्यौं तुरकन बोले रन हल्ला । जम के भये कटीले कल्ला ॥
लर्यौ नरायनदास अगौवा । रन में रुप्यौ राइमनि दौवा ॥
खांडेराइ घाट तंह पायौ । तुरकन कटक उमंड दबायौ ॥
जम से जमन जौमजुत जूटे । सुभटन बिकट मोरचा छूटे ॥

दोहा ।

छुटे मोरचा तोपची, आइ रुपे तिहिं ठौर ।
छत्रसाल जिहिं थल अड़े, छत्रिन के सिरमौर ॥५॥

छन्द ।

छत्रसाल छत्री छबि छायौ । हांक्यौ उमडि सबनि बल पायौ ॥
पेले पार घाट कौं बांधे । मेघराज बिक्रम ह्वै कांधे ॥
गलबल सुनत डरत उठि धायौ । गोलिन घन घमसान मचायौ ॥
माधौसिंह कटेरा वारौ । सनमुख तुरक दरेरि हँकारौ ॥
पिले तुरक त्यौं रनरस भीने । तन कौं लोभ न तनिकौ कीने ॥
त्यौं छत्रसाल तान निज भौहैं । लै बंदूख पठ्यौ दल सौंहैं ॥
गोलिन तीन मीर तकि मारे । गिरे डील पर डील डरारे ॥
चले पाइ तुरकन के त्यौंही । छत्रसाल रन गाजौ ज्यौंही ॥

दोहा ।

मथ्यौ मध्य रन पैठि कै, मच्यौ चहूं दिस चाल ।
अफगन सैन समुद्र भौ, मंदर भौ छत्रसाल ॥६॥

छन्द ।

सैदलतीफ तहां चलि आयौ । मरन सैद अफगनहि बचायौ ॥
दई चौथ अरु डांड चुकायौ । जीवदान अफगन तब पायौ ॥
वाकनि लिखी खबर तब ऐसी । सुनी साह बीती इन जैसी ॥
अफगन की तागीरी आई । साहकुली कौ पाग बँधाई ॥
आठ हजार सुभट सँग लीनै । साहकुली उमड़्यौ रिस कीनै ॥
साहकुली के धौंसा बाजे । मिले नंदमहराजा ताजे ॥
भये हरौला फौज बल पायौ । डंका देत मऊ पर आयौ ॥
दौरि गुरैया गिरि सौं लागै । छत्रसाल जंह रनरस जागै ॥

दोहा ।

ओड़ि अस्त्र घाइन तहां, पिले नंदमहराज ।
लै निसान परबत चढ़े, साहकुली के काज ॥ ७ ॥

छन्द ।

इत इन दीनी एक पलीती । अरि पर प्रलै राति सौं बीती ॥
गिरी गरजि गाजै सी गोली । डगडग चमू अरिन की डोली ॥
घाउ नंदमहराजहि जाग्यौ । दहसत मानि तुरकदल भाग्यौ ॥
तजे नंदमहराज तहांही । घाइल ह्वै करि गिरे जहांही ॥
त्यौं छत्रसाल दया दिल धाये । धरमद्वार दै प्रान बचाये ॥
साहकुली दहसत तहं मानी । तब अपनै उर में यह आनी ॥
भजौ भजौ जैवौ सब मारे । तिहि डर डेरन डेरा पारे ॥
डेरा परत झुली पर आई[1] । त्यों छत्रसाल करी मनभाई ॥

१—झुली पर आई = अंधेरा हो चला ।

दोहा ।

साहकुली के कटक पर, दियौ दरेरौ[1] राति ।
अकबकाइ उर ऐंड़ तजि, मानौ डांड़ अराति ॥ ८ ॥

छन्द ।

आठ हजार डांड़ जब मान्यौ । उतरयौ साहकुले मुख पान्यौ ॥
चौथ सिवाइ दई मुहमांगी । सूबन के उर दहसत जागी ॥
कौंच लौचि कीनै मन भाये । मऊ आइ निसान बजाये ॥
त्यौंही प्राननाथ[2] प्रभु आये । दिल के कुल संदेह मिटाये ॥

---

१ —दरेरो दियो = छापा मारा ।

२—प्राननाथजी = यह एक महात्मा थे जो काठियावाड प्रदेश के जामनगर नामक स्थान के रहने हारे थे । इनके उपदेश श्रीमान गुरु नानकजी के उपदेशों से बहुत कुछ मिलते हुए है । जिस प्रकार श्रीगुरु नानकदेवजी के अनुयायियों में श्रीगुरु-ग्रंथ साहब का आदर है वैसे ही श्रीप्राणनाथ जी के अनुयायियो में श्रीप्राणनाथ जी के उपदेशसंग्रह का जो "कुलज़म" नाम से प्रसिद्ध है आदर है । इन महाप्रभु के संप्रदाय के लोग "धामी" कहलाते है । प्राणनाथ जी का उपनाम "जी साहब" भी है । "कुलज़म" शब्द अर्बी भाषा का है जिसका अर्थ अगाध नद के है । "कुलज़म" ग्रंथ की भाषा मे अर्बी, सिंधी, काठियावाडी तथा अपभ्रष्टरूप में संस्कृत के शब्द पाये जाते हैं परंतु विशेष कर ग्रंथ की भाषा अर्बी और सिंधी शब्दों से भरी है और प्राणनाथ जी के उद्देश्य श्रीगुरु नानकदेवजी के उद्देश्यो से बहुत कुछ मिलते हुए हैं । ऐसा जान पड़ता है कि जब दुराचारी मुग़ल सम्राटों और विशेष कर क्रूर औरंगज़ेब के भीषण अत्याचारों से हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म पर घोर आघात हो रहे थे उस समय महानुभाव भगवान श्रीकृष्णचंद्रजी के पावन सिद्धान्त "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं-सृजाम्यहं । रक्षणाय च साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे" के अनुसार हिन्दू जाति तथा धर्म की रक्षार्थ भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों में महान आत्मायें अवतरित हो रही थीं । उत्तरीय भारत-भाग मे धर्मकेशरी महा-

उन ऐसौ कछु ज्ञान बखान्यौ। अपनौ करि जातै जग जान्यौ॥
परम धाम की लीला गाई। प्रेम लच्छना भक्ति दृढ़ाई॥

वीर गुरु गोविंद जी महाराज अवतार ले धर्म तथा जाति की रक्षा के लिये उद्यत थे। दक्षिण मे वीरकेशरी छत्रपति महाराज शिवाजी प्रगट हुए थे। इसी तरह भारत के पश्चमीय भाग मे परम नीतिज्ञ धर्मधुरंधर महाराज प्राणनाथ जी ने जन्म लिया था। ये महाराज अपने पावन उपदेश देते हुए महेवा मे पहुँचे और महाराज छत्रशाल से मिले। इन्होने अपने उत्तेजित उपदेशों से छत्रशाल जी को औरंज़ेव के अत्याचारो से हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये उत्तेजित किया। जनश्रुति है कि छत्रशाल जी ने महात्मा से निवेदन किया कि मेरे पास इतना कोष नहीं है कि मै दिल्लीश्वर की सेना के विरुद्ध रण रोपने को सेना एकत्रित करूं। उस समय महात्मा ने छत्रशाल जी को आशीर्वाद दिया और वे उन्हे अपने साथ पन्ने की ओर लिवा ले गये और कहा कि तुम अपने घोड़े पर चढ़ कर आज दिन भर घूम आओ, जितनी दूर तुम घूम आओगे उतनी दूर मे "हीरा" पैदा हो जायगा। महाराज ने ऐसा ही किया, और कहा जाता है कि उसी समय से महात्मा के आशीर्वाद से वहाँ हीरा पैदा हो गया। वास्तव मे ऐसा जान पड़ता है कि विज्ञ महात्मा ने उस भूमि को देख कर अनुमान कर लिया था कि यह भूमि हीरे की खानों से भरी है और यह बात महाराज छत्रशाल को बता दी। उसी समय से वहाँ से हीरा निकाला जाने लगा और उसी हीरे की पुष्कल आय से महाराज छत्रशाल ने एक बृहत् कोष एकत्रित किया और उसी कोष के बल एक बड़ी सेना औरंगज़ेब के विरुद्ध प्रस्तुत की। जिस स्थान पर महात्मा प्राणनाथ जी और महाराज चत्रशालजी वर्तमान पन्ना के निकट पहले पहल जाकर ठहरे थे वह "पुराना पर्ना" के नाम से प्रसिद्ध है और वहाँ एक दालान उस घटना के समय की अब तक बनी है। महात्मा प्राणनाथ के विषय में इसी स्थल के संबंध में एक और चमत्कृत वार्ता प्रसिद्ध है। वह यह है कि इसी स्थान के निकट एक स्रोत था। उसका जल विषमय था। जो जीव जन्तु उस जल को पी लेते थे अथवा छू लेते थे वे तुरंत मर जाते थे। महात्मा प्राणनाथजो ने अपना दाहना पाँव उस जल-स्रोत में डुबो दिया और कहा कि यह विष की नदी अब अमृत की नदी हो गई।

सब सौं कह्यौ जगौ रे भाई। प्रगटि जागिनी लीला आई॥
तुम हौ परमधाम के बासी। नित्य अखंड अनंद बिलासी॥

सब लोग इसे मंझा कर पार उतर जाओ। सबने महात्मा के वचन पर विश्वास करके वैसा ही किया। यह घटना-स्थल अब तक प्रसिद्ध है। नदी पार जाकर पन्ना में धर्मसागर नामक तड़ाग के तट पर "मंदारतुंग" नामक पर्वत की तलहटी के अंचल में एक पत्थरशिला पर महाराज छत्रशाल के मस्तक पर महात्मा प्राणनाथ जी ने तिलक किया और अपना खड्ग निकाल कर उनको बँधाया। इस स्थान पर एक छोटी सी मठी बनी है जो खजरामठ के नाम से प्रसिद्ध है। पन्ना नरेश दशहरे के दिन आकर यहीं खड्गपूजन करते हैं और सब से पहले यहीं पान का बीड़ा दशहरे के दिन महात्मा प्राणनाथ जी के नाम का रक्खा जाता है और यहीं से दशहरे के दिन की सिंधुरयात्रा प्रारम्भ होती है। यही प्राणनाथ जो महाराज छत्रशालजी के धर्म गुरु थ और जिस प्रकार प्रातस्मरणीय "समर्थ रामदासजी", छत्रपति शिवाजी के धर्मोपदेशक और उत्तेजक थे उसी प्रकार श्रीमहात्मा प्राणनाथ जी बुंदेल कुल-तिलक महाराज छत्रशाल जी के लिये थे। इन महात्मा की समाधि एक बडे दिव्य और भव्य मंदिर मे पन्ने में है। वहीं इनकी टोपी, पंजा, और ग्रंथ अद्यापि रक्षित है। यह मंदिर धाम के नाम से प्रसिद्ध है और इसी धाम के संबंध से महात्माजी के अनुयायी धामी नाम से प्रसिद्ध हैं। ये लोग हीरे का व्यापार करते है और हीरे को सान पर चढ़ाते तथा उसके कमल आदि बनाते है। हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि हमने ऐसा दिव्य भव्य और स्वच्छ मंदिर अद्यापि और कही नहीं देखा है। इस मंदिर में धर्मशाला, उपदेशमंडप, महात्मा की सेज आदि नाना स्थान बड़े विस्तार मे बने हैं और यहाँ महात्माजी तथा महाराज छत्रशाल के चित्र लगे हैं। यहां प्रति दिन धर्म उपदेश, तथा कुलज़म का पाठ होता है। इन महात्मा के अनुयायी बुदेलखंड, काठिवाड़, नैपाल आदि स्थानों मे बहुतायत से है और शरद पूर्णिमा के अवसर पर पन्ना मे धाम के दर्शनार्थ आते है और बड़ा उत्सव मनाते हैं। सुना जाता है कि इस मंदिर मे एक बहुत बड़ा कोष हीरो का है। समृद्धिशील भक्त जन आ कर इस मंदिर में उत्सव के समय हीरे भेट करते हैं।

दोहा ।

देखन कों मांग्यौ हुतौ, तुम अच्छर कौ खेल ।
सो देखत ही जुग गये, उहां न पल कौ झेल[1] ॥ ९ ॥

छन्द ।

अच्छर ब्रह्म अनादि बखान्यौ । बाल खेल खेलन मन मान्यौ ॥
नैनकोर जिहि ओर निहारै । तंह ब्रह्मांड रचै संहारै ॥
पूरनब्रह्म किसोर किसोरी । सखिन सहित बिलसै वह जोरी ।
पूरन प्रेम सबै सुख साजै । आनँद मगन एक रस राजै ॥
तंह मनिमय महलनि छबि छाई । हीरमई सोहत अँगनाई ॥
प्रफुलित फलित बेलि द्रुम कुंजै । मधू मनोहर मधुकर गुंजै ॥
जल थल द्रुम पंछी अबिनासी । स्वयं सिद्ध सब स्वयं प्रकासी ॥
जाही समै जौन रिपु चाहै । तबही ताके गुन अवगाहै ॥

दोहा ।

सदा फरे फूले तहां, तरु बंछिन फल देत ।
जुगल किसोर सखीन सँग, बिहरत कुंज निकेत ॥ १० ॥

छन्द ।

बिहरत तहां किसोर किसोरी । तहां होन चित ही की चोरी ॥
कुटिल चलत तंह दोइ निहारै । भ्रू बिलास कै दृग अनियारै ॥
तहं कठोर उन्नत कुच होई । और कठोर न उन्नत कोई ॥
नैनन मह कज्जल मलिनाई । नूपुर मुखिन मुखरता पाई ॥
सकल कलनि धुनि कोकिल खोलै । रतिरस तरुनि अनखि जहं बोलै ॥
चंचलता चलदल ही में है । लहर संचलन जल ही में है ॥
द्रोह बिछोह दुखन की नाही । कंठग्रहन केलि ही माही ॥
आनँद मगन परस्पर खेलैं । बिलसत लसन ग्रीव भुज मेलैं ॥

१—पल कौ झेल = बिलम्ब ।

दोहा ।

भूषन अंगन देत छबि, अंगन भूषन देन ।
बसन सुगंध समानता, तन सुगंध को लेत ॥ ११ ॥

छन्द ।

तिहिं थल बिहरत जुगल बिहारी । सखिन समेत सदा सुखकारी ॥
सरस बिलास करै मन मानै । पलकौ बिरह न कोऊ जानै ॥
तहां राज मन में यह आनी । ऐसे जोगहि के रस सानी ॥
ए बियोग रस जानत नाहीं । त्यों होती सब के चितचाही ॥
इनकौ सब बिलास हम दीनै । बिछुर मिलन के सुखहि न चीनै ॥
बिछुरे मिले प्रेमरस सानै । तिनकौ आनंद कौन बखानै ॥
इच्छा यहै राज उर लीनी । त्यों इच्छा अच्छर कौ दीनी ॥
जो किसोर लीला रस सानी । सो अच्छर देखन मन आनी ॥

दोहा ।

चाह बढ़ी सब के हिये, लागै सखिन उमाह ।
अच्छर कौ अदभुत हमैं, लेख दिखावो नाह ॥ १२ ॥

छन्द ।

खेल देखबे की रुचि जानी । तब सखीन सों बोले बानी ॥
देखत खेल मगन अति ह्वै हो । हमकौ बिसरि सबै तुम जैहो ॥
दुख अरु बिरह खेल में आही । तंह देखत ह्यां की सुधि नाही ॥
तब सखियन पर बचन उचारे । दुख बिछोह कैसे है प्यारे ॥
हमहि छपाइ आजु लौ राखे । ते हम देखन कौ अभिलाषे ॥
भूलि होंहि तुमतै जो न्यारी । तो सुधि लीजो नाथ हमारी ॥
ज्यौंही सखिन चाह यह कीनी । निमिष नींद अच्छर त्यौं लीनी ॥
तातै सुपन सिष्टि उपजाई । तामें सुरति सखिन की आई ॥

दोहा ।

इहां और लीला भई, सुपन सिष्टि कौं पाइ ।
रचना रचिबे कौं चल्यौ, अच्छर कौ मन भाइ ॥ १३ ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथशिक्षा नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

चौबीसवाँ अध्याय ।

—:०:—

छन्द ।

रचना रचिवे कौं मनु धायौ । महत्तत्व सो इहां कहायौ ॥
काल शक्ति के छोभित कीनै । अहंकार उपज्यौ गुन लीनै ॥
अहंकार तहं त्रिबिध जनायौ । सात्विक राजस तामस गायौ ॥
तामस अहंकार उपजाये । पांचौ भूत पांच गुन ल्याये ॥
शब्द स्पर्श रस रूप बनाये । गंध सहित गुन पांच गनाये ॥
कान सब्द सुनिवे कौ पाये । त्वचा परस के भेद बताये ॥
रसना स्वाद रसन के लीनै । रूप देखिवे कौं दृग दीनै ॥
गंध ग्रहन नासिका लीनै । पांच पांच के भये अधीनै ॥

दोहा ।

पांच ज्ञानइन्द्रिय भये, पांच स्वाद के हेत ।
पांच भूत कौ जगत रचि, चेतन कियौ निकेत ॥ १ ॥

छन्द ।

चेतन तहां आपुही आये । सोरह कला रूप छबि छाये ॥
जल अगाध चारिहु दिस जोयौ । सेज बिछाइ शेष की सोयौ ॥
यह नारायन रूप कहायौ । ताकी नाभि कमल उपजायौ ॥
उपजे तहां चार मुखवारे । ब्रह्मा सृष्टि बनावनहारे ॥
ब्रह्मा अपनै मन तै कीनै । छहौ पुत्र तप के रस भीनै ॥
प्रथम मरीचि अत्रि पुनि जानौ । और अंगिरा उर में आनौ ॥
फिरि पुलस्त्य अरु पुलह बखानै । जे छटए ते क्रतु पहिचानै ॥
इनतें उपजी सृष्टि तहां लौं । थावर[1] जंगम जीव जहां लौं ॥

१—थावर = स्थावर

दोहा ।

लोक देस रचना रची, कही कौन सौ जाइ ।
तिन मैंब्रजमंडलरच्यौ, रुचि सौं अति सुख पाइ ॥ २ ॥

छन्द ।

तहं बसुदेव नंद तपु कीनौ । तिन्है आइ दरसन प्रभु दीनौ ॥
मांग्यो बर यह दुहुन अकेलौ । सुत ह्वै नाथ हमारे खेलो ॥
दयौ दुहुन कौ बर मन भायौ । लै अवतार आप इन आयौ ॥
तौ लगि आठ बीस जुग बीते । ह्वां पल के सह सांस न रीते ॥
बढ़े कालजमनादिक भारे । जरासंध से भूप अन्यारे ॥
तिनके दलनि भूमि भय भारी । पीड़ित ह्वै बिधि पास पुकारी ॥
धेनु रूप धरि रोवत आई । ब्रह्मा पीर भूमि की पाई ॥
महादेव अरु देवनि लैकै । छीरसमुद पर बोले जैकै ॥

दोहा ।

तहँ अकासबानी सुनी, लख्यौ न कछु आकार ।
हौं आवत ब्रज नंद के, हरन भूमि कौ भार ॥ ३ ॥

छन्द ।

अपने अंस देव लै जाहीं । बिलसै गोप जादवनि माहीं ॥
अरु अपने अंसन सुरनारी । हौंहि जादवन की अति प्यारी ॥
यह सुनि ब्रह्मादिक सुख छाये । अपनै अपनै लोकनि आये ॥
इत अवतार देवकी लीनौ । भोजबंस कौं भूषित कीनौ ॥
तिन्है ब्याहवे कौं मन भाये । सजि बरात बसुदेव सिधाये ॥
भयौ ब्याह दुहुं दिसि रस लीनै । गज रथ तुरग दाइजै दीनै ॥
बिदा भये बसुदेव प्रवीनै । पठवन चले कंस रस भीनै ॥
त्यौंहीं उठी गगन मैं बानी । सुनि रे मूढ़ महा अज्ञानी ॥

दोहा ।

जाहि पठावन जात तू, कीनौ हियै हुलास ।
ताकौ सुत जो आठयौ, तातैं तेरो नास ॥ ४ ॥

छन्द ।

यह सुनि कंस मलिन मन कीनो । रस तै बिरस भयौ मन भीनौ ॥
रिस तैं भई अरुन दृग कोरै । विष जनु पियौ अमृत के भोरै ॥
कढ़ी कृपान रोसरस छायौ । भगिनी के मारन कों धायौ ॥
ताकौ देखि अनी सब छोभी । गनत न दोष राज रस लोभी ॥
तहं बसुदेव बिनय रस खोले । महामधुर मृदु बानी बोले ॥
भोजबंस भूषन तुम ऐसे । तुम लाइक नहि कर्म्म अनैसे ॥
जौ याके सुत तै भय जानहु । तौ यह बात हमारी मानहु ॥
अब याके जितने सुत ह्वैहैं । ते सिगरे तुम ही कौ दैहैं ॥

दोहा ।

फिरी कूरमत कंस की, अचिरज करौ न कोइ ।
कहा देहधारी करै, करता करै सो होई ॥ ५ ॥

छन्द ।

होत सबै करता की कीनो । नृप की बिषम बुद्धि हर लीनी ॥
तबहि कंस यह बुद्धि बिचारी । ए बसुदेव भये हितकारी ॥
थापे पुत्र मीच ढिग ल्यावै । पै प्रतीत यह कैसै आवै ॥
तातैं इनै बंदि में दीजै । अपनै राजकाज सब कीजै ॥
तब बसुदेव बोलि ढिग लीनै । जकरि जंजीरन मे धरि दीनै ॥
त्योंही तहां देवकी राखी । गन्यौ न दोष राज अभिलाषी ॥
बालक छहक देवकी जाये । खग्ग खोलि ते सबै खपाये ॥
त्योंही गर्भ सातये आये । शेष अंस बलभद्र कहाये ॥

दोहा ।

गिरयौ गर्भ वह सुनत ही, फिरयौ चकित ह्वै कंस ।
धरयौ रोहिनी के उदर, जोग[1] नींद सौ अंस ॥ ६ ॥

छन्द ।

उदर रोहिनी के जो राख्यौ । संकर्षन बल होतहि भाष्यौ ॥
गरभ आठयें आयौ नामी । सो बैकुंठ धाम को स्वामी ॥

१—जोग नींद = योगनिद्रा, योगमाया ।

सोभा धरी देवकी श्रोरै । कछु न उपाइ कंस कै दैारै ॥
मेरै। प्रान लैन यह श्रायो । जो श्रकासबानी मुख गायो ॥
त्यौं श्रपनै भट निकट बुलाये । तिन्हैं कंस ए बचन सुनाये ॥
द्वारनि देहु किवारनि तारे । जे गजहू सैां टरै न टारे ॥
खबर देवकी की सब लीजै । बालक होइ हमें सो दीजै ॥
चैाकिन सावधान ह्वै जागैा । लोभ मोह के रस मति पागैा ॥

दोहा ।

यैां कहि कै श्रपनै महल, कंस गयो सुख पाइ ।
सावधान ह्वै कै सुभट, चैाकिन बैठे जाइ ॥ ७ ॥

छन्द ।

चैाकिन बैठे सुभट घनेरे । लै बसुदेव कोठरिन घेरे ॥
श्राये विष्णु गर्भ में जानै । ब्रह्मादिक सब गाइ सिहानै ॥
भादैां बदि श्राठैं जब श्राई । बुध रोहिनी श्रधरात सुहाई ॥
वाही समै जनम हरि लीनैा । मात पिता कैा दरसन दीनैा ॥
संख चक्र गद पदम बिराजै । भुजनि चार श्रायुध छबि छाजै ॥
मनिमय मुकुट सीस पर सोहै । भकुटी बंक चित्त कैां मोहै ॥
जग तैं उदित श्रंग भुज राजै । ललित पीटपट जुगल बिराजै ॥
दीरघ हग झलमलत श्रन्यारे । मुकतासुत सोहत श्रति भारे ॥

दोहा ।

सुभग स्याम तन मुकुट श्रति, पीतबसन छबि देत ।
जनु घन उमयैा है मनैा, उड़गन तड़ित समेत ॥ ८ ॥

छन्द ।

बहसि रूप बसुदेव निहारै । कोटि जामिनी तिमिर उसारै ॥
खुलै किवार दैार दिन दीनैा । द्वार पाल निद्रा बस कीनैा ॥
तब बसुदेव कह्यौ प्रभु प्यारे । खुले भाग श्रति श्राजु हमारे ॥
श्रदभुत रूप हगनि हम देख्यो । जीवन जनम सुफल करि लेख्यो ॥

ये भय हमै कंस के भारे। उहि मेरे छह बालक मारे॥
जो वह खबर तुम्हारी पैहै। तो निरदई पापमति लैहै॥
अब तुमको केहि भाँति बचाऊँ। कौन ठौर यह रूप छिपाऊँ॥
बालरूप तुमकैां करि पाऊँ। तो दुराइ गोकुल धरि आऊँ॥

दोहा।

सुनत बोल बसुदेव के, बोले बिहँसि कृपाल।
पूरब तप तै हम तुम्हैं, रूप दिखायो हाल॥ ९॥

छन्द।

यों कहि बालिक रूप दिखायो। बहसि रूप बैकुंठ पठायो॥
बाल रूप अच्छुर जब कीनो। तब बसुदेव गोद धरि लीनो॥
सोवत चैाकीदार निहारे। गोकुल कैां बसुदेव पधारे॥
जमुना बढ़ी पार नहिं सूझै। मग बसुदेव कौन कैां बूझै॥
सुत की प्रीति कंस भय भारी। जल में धस्यै मीच्र अखत्यारी॥
करि करुना जमुना मग दीनो। पाइन उतरि पार वह लीनो॥
ताही समै रैन रस भीनी। जोग नीद जसुदा उर लीनी॥
चलि बसुदेव नंद घर आयो। ठौर ठौर सैां उत्सव पायो॥

दोहा।

पुत्र धरच्यो जसुदा निकट, कन्या लई उठाइ।
फिर त्यौंही जमुना उतरि, मथुरा पहुंचे जाइ॥ १०॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते श्रीकृष्णजन्मवर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

——:०:——

पचीसवाँ अध्याय

दोहा।

सकल पुरान कुरान के, मन सौ ज्ञान डिढाइ[1]।
जातै जग छत्रसाल कौ, लग्यौ स्वप्न सम भाइ ॥ १ ॥

छन्द।

छत्रसाल कौं ज्ञान सुनायौ। परमतत्व परगट दरसायौ ॥
त्यौं प्रभु प्राननाथ फरमायौ। हुकुम धनी[2] कौ आगम गायौ ॥
करौ राज छत्रसाल मही कौ। रन में होइ सदा जयटीकौ ॥
तुव कुल नृपति होहि अनियारे। लैहैं समर अरिन सौं भारे ॥
बंस अखंड चलै छिति माहीं। जाकौ मेटि सकै अरि नाहीं
जो तुव बंसहि मेटन चाहै। ताकौ धनी अनीजुत ढाहै ॥
यह महि तुम्हैं दई तूरानी। जहाँ प्रगटि हीरन की खानी ॥
तुम दरपुस्त लहौ सिरमौरे। तुव कुल बिना फलै नहि औरे ॥

दोहा।

इहि विधि वह बरदान दै, कुल अखंड बल राखि।
राजतिलक छत्रसाल सिर, दयौ साखि दरसाखि ॥ २ ॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते प्राननाथबरदानो नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

१—डिढ़ाइ=दृढ़ होता है।

२—धनी=स्वामी, ईश्वर।

छब्बीसवां अध्याय ।

दोहा।

बैठे कंचन तखत पै, बली बहादुरसाह ।
पीछे औरंगसाह कै, कीन्हौ हुकुम उछाह ॥ १ ॥

छन्द ।

तहां खानखाना अधिकारी । राजकाज की करै सम्हारी ॥
पातसाह ढिग तिन हित पाई । चंपतिरा की करी बड़ाई ॥
चंपतिराइ बड़े अनियारे । हजरत के बहु काम सम्हारे ॥
दारासाह दुंद जब कीन्हौ । चपति बीर समर जस लीन्हौ ॥
रन हरौल ह्वै फतै लिवाई । औरंगजेब दिली तब पाई ॥
तिनके तनय छत्रपनधारी । छत्रसाल सोहत भट भारी ॥
खुली कृपान अरिन मुख ताकी । जगी जीत जुद्धन में जाकी ॥
सुभट सिरोमनि समुझि अगौवा । करियै उनकौ बेग बुलौवा ॥

दोहा ।

छता बीर बुलवाइये, करिहै काम अनेक ।
हाल लोहगढ की बिजै, लै दैहै करि टेक ॥ २ ॥

छन्द ।

फतै लोहगढ की लै दैहै । औरहु काम अनेक बजैहै ॥
सुनी खानखाना की बानी । साह हियै अति सुखद सुहानी ॥
बिहँस बहादुरसाह बुलायौ । छत्रसाल कौं लिखा पठायौ ॥
लिखो खानखाना त्यौं पाती । जामें सब बिधि खबर सुहाती ॥

हजरत याद आप की कीन्हो। तिन की मति साखिन नें चीन्हो ॥
चहत लोहगढ़ किये महूमै[1]। तातैं चित्त आप में झूमैं ॥
या हित साह आपु बुलवाये। बड़े प्रीत सों लिखे पठाये ॥
तातैं आप आइबी आछै। सकल सिद्धि ह्वैहै तिंह पाछै ॥

दोहा।

बांच लिखे छत्रसाल नृप, लिखी साह कौ ज्वाब।
फतै लोहगढ़ की करैं, हाजिर होन सिताब ॥ ३ ॥

छन्द।

पाती साह छता की बांची। हिये मान लीनी सब सांची ॥
फेर गये खत अब इत पेंखी। करिकै भेंट लोहगढ़ जैबी ॥
छत्रसाल सुन मन सुख पाये। पातसाह के पास सिधाये ॥
सादर साह मिले हरषाई। भई प्रीतिजुत भेंट भलाई ॥
चले बेग ह्वै बिदा उहातैं। करी महूम लोहगढ़ जातैं ॥
छेंकौ[2] किलौ लोहगढ़ बांकौ। भयौ समर नृप लरयौ तहांकौ ॥
गोली गोला छुटत अराबे। दबकत कहूं सुभट रन दाबे ॥
हल्ला पसर करी अस रारी। माची मार परस्पर भारी ॥
दरवाजिन के फार किवारे। भीतर पैठ गये अनियारे ॥
तीन हजार तहां लर सूझे। सुभट किले के घाइल जूझे ॥

दोहा।

पंदरह सै बुंदेल कुल, घाइल जूझे बीर।
मार लोहगढ़ की फतै, लई छता रनधीर ॥ ४ ॥

छन्द।

फतै बजाइ दिल्ली नृप आये। पातसाह नैं अति सुख पाये ॥
कही लेव मनसब मनभाये। छत्रसाल तब बचन सुनाये ॥

१—महूमै = मुहिम्म, लड़ाई, युद्ध। २—छेंकौ = घेर लिया।

हम बगसीस यही करि पावैं। काम लगै जब आप बुलावैं॥
हुकुम सुनत नम हाजिर होवै। हजरत के रन काम सजोवै[1]॥
ओ हमकौं बगसी दरपेसह। तामें कौन होइ बिय पेसह॥
दो करोर की जिमी ठिकानै। पुनि दीन्ही हीरन की खानै॥
सो प्रभु की बगसीस बनीऊ। कर्म निमित्त निज देत धनीऊ॥
मनसबदार होइ को काकौ। नाम बिसुंभर सुन जग बांकौ॥

दोहा।

इम प्रभु के विश्वासमय, बचन भाषि छत्रसाल।
बिदा भये उर साह कौं, मुदित राखि महिपाल॥ ५॥

छन्द।

साह बिदा कीनौ सुख पायौ। एक कुवँर रहिबौ ठहरायौ॥
छत्रसाल गृह आइ सिधाये। मऊ[2] पहुंच नौसान बजाये॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते दिल्ली तै मऊ
आगमनो नाम षड्विंशोऽध्यायः॥ २६॥

१- सजोवै = पूर्ण करेंगे। २—मऊ = यह स्थान छत्रपुर राज्यान्तर्गत महेवा के निकट है और मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है। यही पुण्यश्लोक ग्राम प्रातःस्मरणीय बुंदेलकुल-केशरी, महाराज छत्रशाल का क्रीड़ास्थल रहा है।